SHARE YOUR HUMANITY
GLOBAL PLATFORM

भोर

Rising of Humanity Worldwide

त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका

द्वितीय अंक

जून माह २०२४

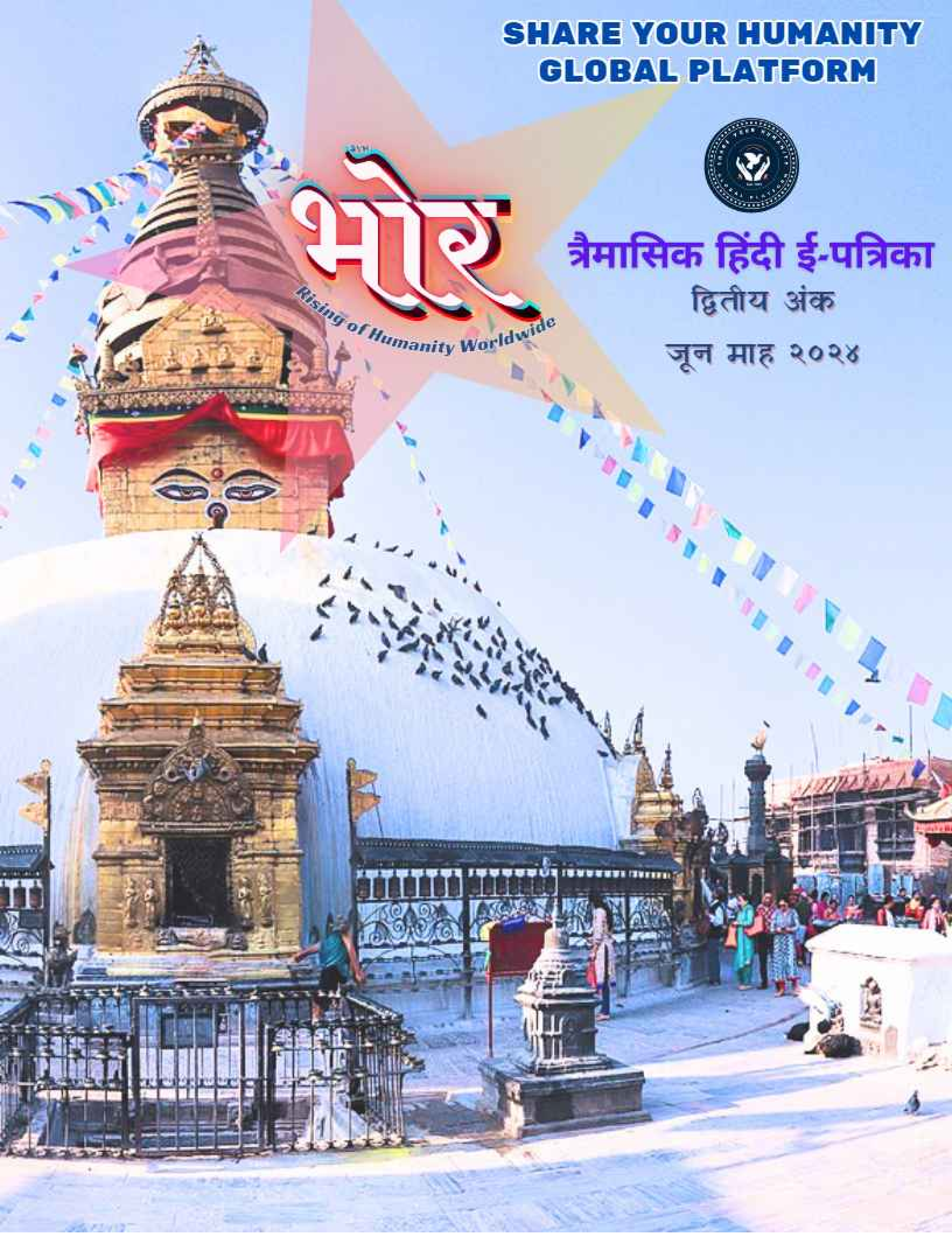

भोर कार्यकारिणी समूह

Rising of Humanity Worldwide

संस्थापक एवम मुख्य संरक्षक

मोनी बिजय (मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
बिजय कोइराला

संरक्षक - मंडल

श्री लक्ष्मी शंकर बाजपेयी
डॉ. किशोर सिन्हा
डॉ. रमा शर्मा

संपादक - मंडल

मोनी बिजय (मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
डॉ. किशोर सिन्हा
श्री विश्वास दुबे
नमिता पाठक

वरिष्ठ परामर्शदाता

विनोद दुबे
रामा तक्षक
डॉ. आरती लोकेश गोयल

संस्था कार्यकारिणी मंडल

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना
सुश्री संगीता गुहा ठाकुरता
सुश्री सुप्रिया श्रीवास्तव
श्री शिरिष तारे
सुश्री नीता संदीप

समन्वयक

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना

पत्रिका डिजाइन एवं तकनीकी विशेषज्ञ

मोनी बिजय

मुख्य कार्यालय
49 B, कंफर्ट हाउसिंग सोसाइटी
ठैब, ललितपुर, काठमांडू-नेपाल
फोन नंबर - 00977-9801794046

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) :-

- यह पत्रिका मानवता, सकारात्मकता और रचनात्मकता को बढ़ावा देती है तथा इसके संपादक, संचालक एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक और अव्यवसायिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं । संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तरदायित्व लेखक का होगा। आलेख भेजते समय वे इस आशय का एक पुष्टि -पत्र भी संलग्न करेंगे। किसी भी प्रकार के क़ानूनी विवाद के लिए यह मंच और पत्रिका ज़िम्मेदार नहीं होगा
- पत्रिका के लिये आलेख यूनिफ़ोंट में टाइप कर ई-मेल "bhorsyh@gmail.com" द्वारा ही भेजे जायें।
- आलेख प्रेषित करने से पूर्व भलीभांति जांच लें कि उसमें भाषा या वर्तनी की अशुद्धियां न रह गई हों।
- चयनित आलेखों को प्रकाशन-पूर्व संबंधित लेखकों के पास प्रूफ़ देखने के लिये भेजा जायेगा, ताकि वे सुनिश्चित कर सकें कि उनके आलेख में कोई अशुद्धि नहीं है।
- प्रूफ़-रीडिंग पश्चात् प्राप्त आलेखों को सुधारने और लेखक/लेखकों की अंतिम स्वीकृति मिल जाने के बाद उसे उसी रूप में प्रकाशित कर दिया जायेगा।

अनुक्रमांक

- शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच परिचय ०१
- परिचय भोर कार्यकारिणी मंडल ०२-०३
- संपादकीय - मोनी विजय, नेपाल ०४
- पत्रिका समीक्षा -पाठको की नज़र ०५ - ०७
- पर्यटन विशेषांक - "जापान की सैर" ०८-०९
  - डॉ. रमा शर्मा , जापान
- पर्यावरण_संरक्षण "हमारी प्रकृति -हमारा पर्यावरण" १५
  - नमिता पाठक , सिडनी ऑस्ट्रेलिया
- ऋतु विशेष 'वैशाख की महिमा' १४
  - ममता मृदुल , काठमांडू नेपाल
- हमारी संस्कृति - हमारी धरोहर
  - लुबोर म्यूज़ियम -आबुधाबी में भारतीय संस्कृति :-डॉ. आरती लोकेश दुबई , यू. ए. ई. १०-११
  - हिंदु धर्म दर्शन और योग :- डॉ. श्वेता दीप्ति, काठमांडू नेपाल ११-१२
  - गंगा दशहरा :- संजय वर्मा 'दृष्टि', भारत १३
  - अरब अमीरात में ईद -उल - फितर :-मीरा ठाकुर आबुधाबी यू. ए. ई. १३
- साहित्यिक विधाएं (पद्ध खंड) १५-२१
  - भजन _गीत
    - गणपति वंदना - डॉ. श्वेता सिन्हा, आयोवा -अमेरिका
    - श्रीराम भजन - कादंमबरी आदेश, अमेरिका
  - ग़ज़लें
    - ममता किरण-भारत
    - लक्ष्मी शंकर वाजपेयी-भारत
    - मधु मधुमन- पटियाला पंजाब, भारत
    - ओमप्रकाश यति,-सिडनी ऑस्ट्रेलिया
    - डॉ. कपिल कुमार -बेल्जियम
    - अंकिता सोनी -भारत
    - आर. पी . घायल -पटना बिहार, भारत
  - कविताएं
    - हमको बड़ा यकीं है -नरेश नाज़, पटियाला-पंजाब ,भारत
    - वत्स, खंडहर नही हूं मैं - डॉ. प्रतिभा जैन , मध्य प्रदेश-भारत
    - मंत्री जी आने वाले हैं - विनोद पांडेय, गाजियाबाद -उत्तर प्रदेश, भारत
    - प्रवासी मज़दूर - उर्मिल आज़ाद, नॉर्विच, यू. के.
    - माँ अब कम बोलती है - डॉ. सुनीता शरण, मध्य प्रदेश भारत
    - ग़रीबी का बचपन - मीनू लोढ़ा, शिकागो -अमेरिका
    - मुझे अच्छा लगता है-रविंद्र कुमार शर्मा 'घुमारवीं ', हिमाचल प्रदेश भारत
    - छोटी गट्टर - डॉ. अशोक शर्मा, पटना-बिहार,भारत
    - क्या हुआ जानें - प्रतिभा मिश्रा, वाराणसी -भारत
    - सेहत का खज़ाना योग -सोनल मंजू श्री ओमर, भारत
    - गौरैया से लड़ाई - रत्न चंद रत्नेश,भारत
    - कलम नहीं जयगान करेगी -राजेश पाठक, झारखंड भारत
    - पेड़ - मोनिका प्रसाद, राँची-झारखंड, भारत २०-२१
    - मृत्यु चिंतन -सतीश बब्बा, चित्रकूट- यूपी, भारत
    - मैं किन्नर हूं -चित्रा गुप्ता, सिंगापुर
    - उनको प्रणाम-अरविंद पथिक, गाजियाबाद -भारत
    - हां,मैं डरता हूं- डॉ. जय महलवाल, हिमाचल प्रदेश -भारत
- साहित्यिक विधाएं (गद्ध-खंड)
  - ज्ञान _विज्ञान : जैविक पेस मेकर (विज्ञान कथा) — डॉ. रमेश पाठक, पटना भारत २२-२३
  - हरित भविष्य की यात्रा (विज्ञान नाटिका): — आदराम नायक, बीकानेर राजस्थान भारत २४-२५
- साहित्य व्यक्तित्व नमन
  - माधव राव सप्रे - एक टोकरी भर मिट्टी २६
- कथा _कहानी (लघु-कथा) २५-३३
  - वृक्षमित्र -चंद्रकला जैन, चंडीगढ़ हरियाणा भारत
  - श्रम संगीत -कमलेश भारतीय, हिसार हरियाणा भारत
  - दाना दुनका -डॉ. नितिन उपाध्याय, दुबई, यू. ए. ई.
  - अंतिम सांस - प्रभुनाथ शुक्ल, भदोही उ. प्र. भारत
  - कोरा पन्ना - प्रतिभा जोशी , अज़मेर भारत
  - वो दिन - सीमा सिन्हा मैत्री, राँची झारखंड भारत
  - रंगीन झालर- कविता रानी सिंह,राँची झारखंड भारत
  - नदिया के किनारे - अरुण अन गुप्ता 'हीर', लंदन यू. के.
  - बाबूजी -डॉ. इंदु उपाध्याय, पटना बिहार, भारत
  - दहेज रहित विवाह - श्वेता सिन्हा, बैंगलोर भारत
  - चिरनिद्रा - प्रमिला शरद व्यास, राजस्थान भारत
  - फादर्स डे -रश्मि सिंह ,राँची झारखंड भारत
  - गंवार - डॉ. उर्मिला सिन्हा,राँची झारखंड भारत
  - मदर्स डे - ऐश्वर्या संपन्ना, मुंबई भारत
  - आत्मग्लानि - शिखा पोरवाल 'मनस्विनी', कनाडा
  - भगवान मेरे साथ (संस्मरण) -अनु निधि, स्टॉकहोम स्वीडन
  - अपनत्व - डोली शाह, हैलाकंदी-असम, भारत

अनुक्रमांक

- बच्चों की दुनियाँ (टैलेंट एंड क्रिएटिविटी SYTC) ३७
  शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी किड्स वर्ल्ड परिचय
- बूझो तो जानें ३८
- आई हँसी आई

- साक्षात्कार:- संवाद एक शख़्सियत के साथ ३४-३६
  - मेहमान अतिथि : श्वेता सिंह उमा, मॉस्को रूस

- धारावाहिक उपन्यास 'ताली (खंड -2)', गतांक से आगे_ ३९-४४
  डॉ. किशोर सिन्हा, पटना-भारत

- मंतव्य :-एक चादर ४५
  समीर मूसा, क़तर

- असाधारण व्यक्तित्व:- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ४६
  डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव, प्रतापगढ़ -उ. प्र.,भारत

- अपनी रसोई -अपना व्यंजन ४७
  - सूजी का ढोकला - डॉ. किशोर सिन्हा
  - गट्टे की सब्जी - डॉ. नितिन उपाध्याय

- SYH मंचीय कार्यक्रम तस्वीरें ४८

- SYH काठमांडू कार्यक्रम तस्वीरें ४९-६०

- अध्यात्म खंड - अंतर्मन स्पर्श ६१

- चलते - चलते ६२
  मोनीकहतीहै..

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच का संक्षिप्त परिचय

'शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच' नकारात्मक अंधेरे के बीच सकारात्मक प्रवाह का भोर है, जहाँ मानवता को सर्वोपरि मानते हुए ऐसे सच्चे कार्यो को साहित्य, सेवा, संगीत, रचनात्मक कार्य एवं मंचीय कार्यक्रम गतिविधियों द्वारा पूरे विश्व में गुंजायमान होता है । इस पटल की शुरूआत १८ नवम्बर २०१९ को मोनी श्रीवास्तव कोइराला (मोनी बिजय) द्वारा एक सात्विक बीज फेसबुक समूह (SYH) द्वारा रखी गई, जो अब पूरे विश्व में पौधा बनकर लहरा रही हैं । इस मंच की जननी का मानना है कि "स्वस्थ-समाज की आस दूसरे से न करें, बल्कि स्वयं आगे बढ़कर उसका निर्माण करें, और ऐसा समाज (विश्व) बनाएं जहाँ हर किसी का आदर हो । यहाँ से एक छोटा विचार भी निकले, तो वह समाज में एक सकारात्मक संदेश बन प्रसारित हो । अहं, ऊपर- नीचे, बड़ा-छोटा का भाव न हो, बस हर किसी के मुख पर एक मुस्कान दे सकें ऐसे कार्य मंच द्वारा यथासंभव हो । समय का सही सदुपयोग हो सकें यही धारणा मन में प्रबल रहे।"

अपने इन्हीं कुछ नियम-कानून को अपनाते हुए इस मंच ने निर्बाध रूप से हरसंभव मानवता-सेवा प्रदान की जिसके द्वारा पेड़ - पौधे रोपण, वृद्ध एवं असहाय बच्चो की मदद, नेत्र-चिकित्सा, कैंसर-चिकित्सा, रक्तदान-शिविर, असहाय पशुओं की मदद, हर धर्म के उत्सव में यथासंभव सहयोग, मुस्कान बाँटने की कोशिश, बच्चें एवं हर उम्र के सदस्यों के हुनर को प्रोत्साहित कर उन्हें पुरस्कार तथा सर्टिफिकेट वितरण करना , महिलाओं के भीतर आत्मविश्वास पैदा कर पुन: आत्मनिर्भर होने में सहयोग देना , समाज को जागरूक करनेवाले अनगिनत मंचीय कार्य करना, साहित्य, संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा लोगो के बीच रचनात्मकता, जागरूकता एवम सकारात्मक संदेश पहुंचाना । मानवता सेवा कार्यों को बढ़ावा देना, भावना और नैतिकता के रूप को विस्तृत रूप देना । पूरे विश्व के लोगो को एक मंच पर आमंत्रित कर एक मानवता प्रेम-सूत्र में बाँधने का कार्य इस मंच ने जारी रखा है। अब तक इस मंच द्वारा १९९ ऑनलाईन मंचीय कार्यक्रम हो चुके हैं और अनगिनत सेवा कार्य विभिन्न देशों एवं राज्यों में - हरदोई-उत्तर प्रदेश, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, काठमांडू-नेपाल, पटना -बिहार, दोहा -कतर में किया जा चुका है। कई एनजीओ संस्थाओं को यथासंभव सहयोग राशि भी वितरित की गई है।

इस मंच ने नर-नारी, किन्नर समाज, वृद्ध-बच्चें, यूवा, हर उम्र, जाति -धर्म-भाषा, देश-विदेश, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सबका एक समान आदर करते हुए सबके ऊपर अनन्य कार्य किया है । पांचवें वर्ष में आज यह मंच विश्व में शांति, सद्भाव, एकता, सांस्कृतिक विरासत और समाज को एक सकारत्मक संदेश देने का यथासंभव प्रयास किया है। अभी इस मंच के पेज, यूटयूब चैनल, फेसबुक समूह, व्हाट्सएप समूह द्वारा विश्व भर के लोगो का जुड़ाव हुआ है । यह मंच कार्य गिनने में नहीं करते जाने में ज्यादा विश्वास रखता है। मानव अपने मानवीय संवेदना को सुंदर साकार दें, यही उद्देश्य परिपूर्ण करने के लिए अपने दोनो मंच 'शेयर योर ह्यूमैनिटी' तथा 'शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी किड्स वर्ल्ड' द्वारा भरपूर कोशिश की जा रही है। आइए, आप और हम मिलकर इस सुंदर समाज को एक विराट स्वरुप दें जहाँ से सिर्फ़ मानवता के सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो।

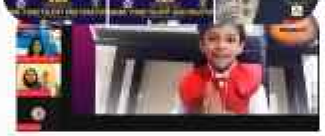

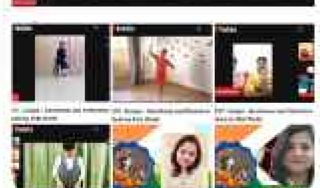

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच तथा भोर कार्यकारिणी समिति

मोनीबिजय

(मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
SYH-जननी (संस्थापक,संरक्षक),
प्रधान संपादक (भोर ई पत्रिका)

बिजय कोइराला

शेयर योर ह्यूमैनिटी
वैश्विक मंच
(मुख्य संरक्षक)

'भोर' संरक्षक - मंडल

लक्ष्मी शंकर बाजपेयी
भारत

डॉ. रमा शर्मा
जापान

डॉ. किशोर सिन्हा
भारत

'भोर' वरिष्ठ परामर्शदाता मंडल

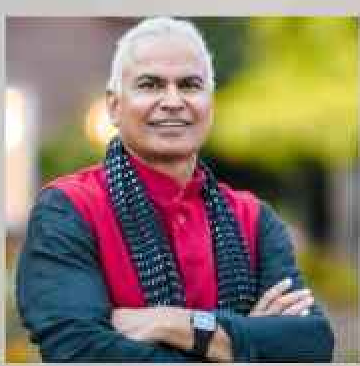

रामा तक्षक
नीदरलैंड

डॉ. आरती गोयल 'लोकेश'
दुबई - यू.ए.ई.

श्री विनोद दुबे
मुंबई - भारत

'भोर' संपादक - मंडल

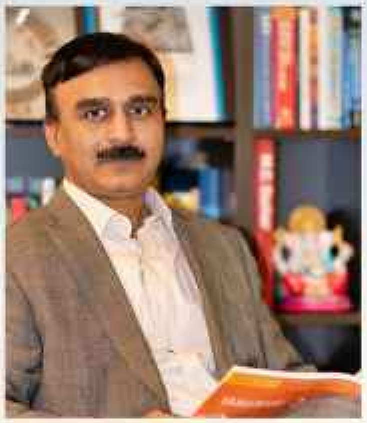

श्री विश्वास दुबे
नीदरलैंड

नमिता पाठक
ऑस्ट्रेलिया

डॉ. किशोर सिन्हा
भारत

संस्थान कार्यकारिणी मंडल

सुश्री ऐश्वर्या संपन्ना
मुँबई - भारत
'भोर'
सामग्री समन्वयक, 'SYH' एडमिन

सुश्री सुप्रिया श्रीवास्तव
दिल्ली - भारत
'SYH & SYTC' एडमिन

सुश्री संगीता गुहा ठाकुरता
कोलकाता - भारत
'SYH & SYTC' एडमिन

श्री शिरीष तारे
पुणे - भारत
'SYH' एडमिन

सुश्री नीता सन्दीप
बिहार – भारत
'SYH' एडमिन

संपादकीय कलम से....

मोनी विजय
(मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
ललितपुर,काठमांडू-नेपाल

लेखिका, संस्थापक, संरक्षक ,प्रधान संपादक एवं पत्रिका डिजाइनर

मोनी कहती है..

भोर का उदय प्रकृति के रथ के साथ बंधा है । इसका आना सृष्टि के चलायमान होने का संकेत है । भले ही कभी बादलों से लड़ना पड़े, अंधकार को चीरकर सामने आना पड़े । यह न तो थकता है और न ही इसे मानव की तरह आलस, लालच या मद है। यह तो अडिग कर्तव्यनिष्ठ सूर्य की पहली किरण बनकर जहाँ को रौशन करने सदैव आएगा ही । मानव मन 'जब जागो तभी सवेरा' सोचकर अपना मन बहला लेते है परंतु शाश्वत सत्य तो यह है की 'भोर' अपने निश्चित समय पर ही उदित होती है, चाहें समय अनुकूल हो या प्रतिकूल।

प्रकृति ने हमें भर-भर कर शिक्षात्मक जीवन दिया है। उदाहरणतया प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समय का बहाव बचपन, युवा, प्रौढ़ और वृद्ध अवस्था द्वारा गुजरना तय है। फिर भी जब यह अवस्था आती है तब उसके लिए वह पहला अनुभव ही होता है। कभी कभार नवेली मां को परिवारजन या बाहरी बुजुर्गों द्वारा यह उलाहना मिलती है की "तुम पहली औरत नही हो जो मां बन रही हो" या युवाओं का कोई कदम उठाना हो अथवा किसी भी चीज़ को सीखने की पहली कोशिश हो तो इस तरह के ताने, उलाहने या प्यार की थपकियां तो मिल ही जाती है कि सुनो, तुम वह पहला आदमी नही हो..जो यह काम कर रहे हो। बिलकुल यह तो शाश्वत सत्य है की वह पहला आदमी नही होगा जिसे यह अनुभूति हो रही है। पर हां, उस व्यक्ति के लिए वह अनुभव बिल्कुल नया नवेला और पहला ही होता है ।और उसके लिए दर्द, खुशी, प्यार की अनुभूति पहली बार ही महसूस हो रही होगी । यूं तो मनुष्य ने कई जन्म लिए होंगे पर पूर्वजन्म के कर्मभाव याद नहीं रहता कि पिछले जन्म हमने क्या किया था और किस पड़ाव तक जीवन को पार लगाए थे। वह पुनः एक अबोध शिशु का शरीर प्राप्त कर जीवन के हर अवस्था से गुजरने के लिए वही शुद्धता, वही सात्विकता और उसी पवित्रता के साथ अपना कर्म-धर्म और भाव लेकर प्रकट होता है।

भोर पत्रिका के इस अंक में हम पुनः नई कोपल की भांति कई विषयों को लेकर आए हैं परंतु अगर आपने सच में एक जिज्ञासु पाठक की भांति इसका रस्वादन किया तो निसंदेह आप प्रत्येक अंक की प्रति को अपने लाइब्रेरी में सजाना चाहेंगे। भोर में उत्तम लेखकों की रचनाएं और हर तरह की नवीन सामाग्री लेने की कोशिश की जा रही है। हर नए अंक को और बेहतर करने पर निस्वार्थ भाव से काम की जा रही है पुरे टीम द्वारा । इस बार ज्यादातर उन सभी लेखकों की रचनाएं सम्मिलित की गई हैं जो हमारे मंच से पहली बार जुड़ रहे हैं भोर के माध्यम से जिन्हें शायद हम व्यक्तिगत तौर से नही जानते बल्कि उनकी रचनाओं द्वारा उनसे परिचित हो रहे हैं। मुझे लगता है की एक रचनाकार के लिए उसकी रचनाओ द्वारा पहचान प्राप्त हो यह बहुत ही गर्व की बात होती है। शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच की तरह ही भोर पत्रिका में आप सभी का स्वागत है। आपके भाव से भरी हर रचना का स्वागत है बस पत्रिका के नियम अनुसार, उसकी गुणवता आप स्वयं जांचे और हमे भेजे।

प्रथम अंक में ही हमने कहा था कि हम हर जरूरी विषय को जगह देंगे। तो इस बार पर्यटन, रसोई, आई हंसी आई, बूझो तो सही (बच्चो के कालम) इत्यादि बहुत से विषय सम्मिलित किए गए है। फिर भी कितनी रचनाएं सम्मिलित नहीं हो पाई हैं तो उसे अगले अंक में जगह दी जाएगी। ऑनलाइन लोकार्पण के दौरान कार्यकारिणी मंडल/संपादक मंडल द्वारा नियम और अन्य बहुत सी जानकारियां दी जाती है। उसे आप ध्यानपूर्वक सुने, समझे और नियम अनुसार रचनाएं भेजे।

भोर की प्रतीक्षा तो प्रकृति का हर प्राणी करता है, तो आइए आज के उदित भोर को प्रणाम कर कार्य आरंभ करें और अगली सुहानी भोर (सितंम्बर अंक) का फिर करेंगे इंतज़ार...!

आप सभी सद्भाव प्रसन्नवदन रहें, सबके साथ मानवता और खुशियाँ बांटे।

शुभकामना सहित धन्यवाद
जय मानवता

पत्रिका समीक्षा

सनत जोशी
वरिष्ठ पत्रकार

"भोर' के थाल में बहुमूल्य रत्न"

नेपाल की तपोभूमि काठमांडू से प्रकाशित ई-पत्रिका "भोर" को देखते ही दिल-ओ-दिमाग में भोर की सी ताजगी और ऊर्जा महसूस हुई।

"शेयर योर ह्यूमैनिटी" के आदर्श वाक्य को लेकर "भोर" के रूप में जो महायज्ञ प्रारंभ किया गया है,वह वास्तव में प्रशंसनीय और स्वागत योग्य है। मानवता हमारे जीवन की आधारशिला है।

"दिन है, पर उजाला नज़र नहीं आता।"
"भीड़ है, पर आदमी नज़र नहीं आता"

यदि हमारे दिल में दया, करुणा, प्रेम, स्नेह और संवेदनाएं नहीं है तो हम इंसान कहलाने के अधिकारी नहीं है। आदमी में आदमी को स्थापित करने का प्रयास स्तुत्य है।

साहित्य के क्षेत्र में गीत, ग़ज़ल,मुक्तक, दोहे और कविताओं के साथ-साथ यात्रा-स्मरण, उपन्यास, कहानी,लघु कथाओं के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर की विभूतियों और रचनाधर्मियों की लेखन कला से आम आदमी को जोड़ने का जो प्रयास किया गया है,वह श्लाघनीय है। पत्रिका में साहित्य के दोनों तटबंधों का भरपूर प्रयोग -उपयोग किया गया है।

हमारे देश के भविष्य बाल मन को मंच उपलब्ध करा कर आपने बाल मन की तरल अनुभूतियों को टटोला, परखा और संवारने, तराशने की जो पहल की उसके सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

"पहला सुख नीरोगी काया" जीवन के सबसे प्रमुख क्षेत्र स्वास्थ्य के लिए, जो सामग्री पाठकों को उपलब्ध कराई गई है, वह बेमिसाल और बेजोड़ है।

"अफसोस उसकी ये बात भी नहीं मानी मैंने।"
"उसने कहा था अपनी सेहत का ख़याल रखना ।"

आदमी अपने स्वास्थ्य को लेकर बहुत लापरवाह है, उसे जगाने का प्रयास आपके कर्म की सार्थकता सिद्ध करेगा।

हमारे गौरवपूर्ण इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक थाति से आने वाली पीढ़ियों को रूबरू कराने का जो प्रयास किया गया है, वह प्रशंसनीय है।

क्या ही अच्छा हो जाता चार लाइनें हमारी राजनीति और मातृ शक्ति पर भी उपलब्ध करा दी जाती ।

कुल मिलाकर "भोर" में साहित्य की सभी विधाओं का स्पर्श देखने को मिलता है।जहां आलेख सारगर्भित और ज्ञानवर्धक हैं, वहीं कविताएं और ग़ज़लें मर्मस्पर्शी और आंदोलित करने वाली हैं।सामग्री चयन और प्रस्तुतीकरण में संपादक की पैनी नज़र दिखाई देती है। आवरण आकर्षक और लुभावना है। टाइपोग्राफी (फॉंट)का चयन बेमिसाल और लाजवाब है। "भोर" पत्रिका पठनीय तो है ही, साथ ही संग्रहणीय भी है।

मेरा विश्वास है,भविष्य में शोधग्रंथों के सृजन में "भोर" संदर्भ ग्रंथों की भूमिका निभाएगी।

संपादक मोनी विजय कोइराला ने संसार के कोने-कोने से साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक बहुमूल्य मोतियों ,रत्नों को चुन -चुन कर विश्व स्तरीय "भोर" के थाल में जिस सलीके से सजाया है, संवारा है, वह वास्तव में स्पृहणीय है।

प्रथम पुष्प पर मेरी ओर से हार्दिक मंगलकामनाएं। बधाईयां ।
।।इति शुभम् ।। "

भोर___त्रैमासिक ई-पत्रिका ___मेरी नजर में

'भोर त्रैमासिक हिंदी ई--पत्रिका का प्रवेशांक मार्च 2024 मेरे हाथों में है। इसमें प्रकाशित रंग-बिरंगे रचनाओं का गुलदस्ता...इस पत्रिका की विशेषता है कि यह मानवता, सकारात्मकता, रचनात्मकता को बढ़ावा देती है। यही इसका मूलमंत्र है।

इसमें वह सबकुछ है जो एक रसज्ञ पाठक को चाहिए। धारावाहिक उपन्यास... रोचक ।

साहित्य व्यक्तित्व विशेष कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी की कहानी -स्त्री और पुरुष ...जिसे पढ़कर आज भी मन भावविभोर हो उठा।

गजलें,कविताएं,ऋतु विशेष बसंत ..जिसमें मेरी भी रचना है वीणावादिनी... सरस्वती पूजा... का वर्णन है।

ध्रुव गुप्त जी का प्रेम आलेख ...प्रेमपूर्ण पंक्तियों से सुशोभित है।

बच्चों का पन्ना जिसमें देशविदेश के बच्चों की स्वरचित रचनाएं भी हैं... बच्चों को प्रोत्साहित करने की यह सुखद पहल है।

कथा साहित्य का संसार, लघुकथाएं अपना पूरा छाप पाठकों के मनोमष्तिष्क पर छोड़ती है।

मेरे नजर में 'भोर' ई-पत्रिका अपने प्रथम प्रयास में सफल रहा है। समयानुसार और सुधार स्वयमेव होता रहेगा। मैं प्रकाशक मंडल, रचनाकारों और इससे जुड़े सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ और पत्रिका के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करती हूं।

डॉ उर्मिला सिन्हा
रांची --झारखंड ---भारत

पाठकों की प्रतिक्रिया

पत्रिका समीक्षा

भोर की ताज़गी

जब पहली बार 'भोर' पत्रिका को लेकर इस लड़की का फोन मेरे पास आया और उसने पत्रिका के बारे में मुझे बताया कि "भइया मैं ऐसा-ऐसा करना चाहती हूं....", तो मुझे लगा कि ये लड़की, जो मुझे 'भइया' बोलती है- मोनी विजय; जो क़तर से अपनी बसी-बसाई दुनिया त्याग, नए सिरे से नेपाल में बसने जा रही है; घर, परिवार, बच्चों की ज़िम्मेदारी संभालते हुए भी जो मंचों का संचालन करती है; कविताएं, गीत, कहानी लिखती है; गाती है; ऑनलाइन 'शेयर योर ह्यूमैनिटी' जैसे वैश्विक और लोकप्रिय मंच पर निरंतर सक्रिय रहती है; वो एक और नया दायित्व ओढ़ रही है- ई-पत्रिका के प्रकाशन का दायित्व.... इतना सब कुछ कैसे कर पायेगी वो....!

मैंने कहा भी कि इतना सब कुछ कैसे कर पाओगी, अभी तो तुम्हारी घर-गृहस्थी पूरी तरह से पटरी पर भी नहीं आई है। उसने बहुत विश्वास से कहा, "भैया मैं सब कर लूंगी, बस आपका आशीर्वाद चाहिए...."

मैं हंस पड़ा। मैंने कहा, "भाई कहती हो तो ये तो मेरा फर्ज है और ताउम्र रहेगा..." उसके बाद जब पत्रिका का पहला ड्राफ़्ट मेरे सामने आया तो मैं विस्मित हो गया। क्या कहूं इस लड़की की ऊर्जा को.... मेरे भीतर भी इतनी ऊर्जा नहीं, कि जितनी तैयारी, परिश्रम और मनोयोग से; और उससे भी बढ़कर जिस सौंदर्यबोध के साथ उसने इस पत्रिका को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया है, वह किसी के लिए भी गर्व और स्पर्धा का विषय हो सकता है..... मेरे लिए तो वाकई तुम मेरा अभिमान हो मोनी।

फिर पत्रिका जब अपने अंतिम स्वरूप में अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहुंची तो वाकई मोनी की मेहनत हैरान करने वाली थी। संपूर्ण पत्रिका का संयोजन- चाहे वह विषय हो या नियमित स्तंभ- हर पृष्ठ कलात्मक और ताज़गी से भरा हुआ.... बहुत उम्दा.... ऐसा कहीं से लगता ही नहीं कि ये काम वह पहली बार कर रही है।

मुझे उसने संरक्षक और सह-संपादक के तौर पर पत्रिका से जोड़ रखा है, जो न भी होता तो भी मैं उसके साथ होता.... बस, अपने दायित्व को अच्छे से निभा पाऊं, मेरी यही कोशिश है और रहेगी, इस अंक और आने वाले तमाम अंकों के लिए.....। पत्रिका के लिए मोनी तुम्हें, बहुत-बहुत स्नेह और शुभेच्छाएं......

डॉ. किशोर सिन्हा
संरक्षक एवं सह –संपादक 'भोर'

"भोर" एक उमगता अहसास

शेयर योर ह्यूमेनिटी के वैश्विक मंच द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी ई पत्रिका "भोर" का आकर्षक कलेवर देखकर प्रभात की पहली किरण की ऊर्जा का अहसास हुआ। संस्थापक व मुख्य संरक्षक के रुप में आदरणीय मोनी श्रीवास्तव कोईराला तथा आदरणीय विजय जी कोईराला का यह भागीरथ प्रयास है जिसमें साहित्य व संस्कृति की अविरल धारा समाज हित में प्रवाहित हो रही है।

देश विदेश के वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय लक्ष्मी शंकर जी बाजपेई, डॉ किशोर सिन्हा जी और डॉ रमा शर्मा के संरक्षण में भोर पत्रिका की सामग्री आकर्षक,पठनीय व मनोरम बन पड़ी है।भोर में उमगती भावनाओं के सदृश्य इसमें सतरंगी साहित्यिक आयाम गीत , मुक्तक, ग़ज़लें, कविताएं, ऋतु विशेष बसंत,कथा, कहानी, लघुकथाएं प्रतिभासित है। सबसे आकर्षक कलेवर है बाल मंच का - बच्चों की दुनिया में, बाल गुंजन में कविताएं, निबंध, आओ तस्वीरें बनाएं जैसे पृष्ठ नन्हे मुन्ने बच्चों की किलकारियां से गुंजनें लगते हैं। उपन्यास, यात्रा संस्मरण, हमारी संस्कृति हमारी धरोहर, ग्लोबल मंच के कार्यक्रम की तस्वीरें, स्वास्थ्य लाभ अपना ख्याल रखें, आध्यात्मिक खंड, अन्तर्मन स्पर्श, पाठकों की प्रतिक्रियाओं के साथ मोनी जी के कहन से "भोर" पत्रिका एक सम्पूर्ण पत्रिका के रुप में स्थापित हो जाती है। सर्वश्रेष्ठ पत्रिका की गुणवत्ता भोर में समाहित है। समाज के प्रत्येक पक्ष की संवेदनाओं को स्पर्श करती रचनाएं, आलेख, कहानियां मर्म स्पर्शी है। देश विदेश के श्रेष्ठ सृजनकारों, रचनाकारों के सृजन के अतिरिक्त बाल मंच, स्वास्थ्य,और आध्यात्मिक खंड को जोड़कर मोनी जी ने पत्रिका को पूर्णता प्रदान की है।

पृष्ठ दर पृष्ठ पाठक की उत्कंठा बढ़ती जाती है और पाठक तल्लीनता से पठन पाठन करता चला जाता है। अपनी मानवीय भावनाओं को,मानवता को बांटें और लोगों तक पहुंचाएं जैसे पवित्र संकल्प से ओत-प्रोत यह पत्रिका निश्चित रूप से समाज में नवचेतना और जागरण का स्त्रोत सिद्ध होगी। समस्त संपादकीय टीम और मोनी विजय जी को हार्दिक बधाइयां और शुभकामनाएं और साधुवाद

प्रमिला शरद व्यास
उदयपुर,राजस्थान
भारत

पत्रिका समीक्षा

तिमिर को चीरते हुए
लो भोर आ ही गई
उषा की लालिमा लिए
एक सुखद सुबह की शुरुआत हो गई ।।

भोर

भोर - राइजिंग ऑफ़ ह्यूमैनिटी वर्ल्डवाइड का प्रवेशांक भोर की सुनहरी किरणों की तरह हमारे जीवन में प्रवेश करता है। मुखपृष्ठ से ही इस खजाने में हमारे लिए साहित्य की जो अनमोल रत्न-मंजूषा धरी हुई है उसका आभास हो जाता है। इसके विद्वान और अनुभवी संरक्षक और संपादक मंडल के साथ इस की प्रधान संपादक श्रीमती मोनी बिजय हम सबके लिए साहित्य के एक सतरंगी संसार की रचना लेकर प्रस्तुत हुई है।
उदाहरणार्थ गीत और मुक्तक के दो सशक्त हस्ताक्षर श्री दरियाब सिंह राजपूत "ब्रजकण" और श्री विनोद दुबे के गीत और मुक्तक पढ़कर एक साथ वीर रस और श्रृंगार रस में मन डूब जाता है। ग़ज़ल में पंडित सुरेश नीरव और श्री आर.पी.घायल की ग़ज़लों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। पर इसी कड़ी में ग़ज़ल ग़ज़ल है या नहीं यह प्रश्न मन में आता है। कविताओं में मधु खरे, अरुण एन गुप्ता "हीर", अनु बाफना, मधुरु तिवारी भट्ट, निधि दवे, शिव मोहन, अन्नदा पाटनी की कवितायें मन को स्पर्श करके हौले से सहला जाती हैं। वसंत ऋतु पर ध्रुव गुप्त और डॉ. उर्मिला सिन्हा के लेख शिक्षाप्रद है। वसंत ऋतु में जैसे कहीं से कोयल की कूक सुनाई दे वैसे ही मुंशी प्रेमचंद की कहानी "स्त्री और पुरुष" पढ़कर मन इस कालजयी लेखक की लेखनी के आगे एक बार फिर से नतमस्तक हो जाता है। पाठकों के लिए भारतीय साहित्य के दैदीप्यमान सितारों की रचनाएँ हर अंक में पढ़ने को मिलेंगी ऐसी आशा करना हूँ।
कथा और लघुकथाओं में लक्ष्मीशंकर बाजपेयी, मंजु तिवारी कुमार, डॉ. रमा शर्मा, मंजु श्रीवास्तव की रचनाएँ प्रभावित करती है।
भोर के सुखद हवा के झोंको जैसा बालमंच ताजगी का अहसास जगा जाता है।
जय कृष्ण मिश्रा की कलम से "तंजानिया देश का यात्रा विवरण" उस देश की तरफ पाठक को खींचने लगता है। डॉ. आरती लोकेश अबूधाबी में नव निर्मित बेप्स हिन्दू मंदिर का सजीव चित्रण अपनी सशक्त लेखनी से पाठकों के सामने ले आती है।

प्रवेशांक के रूप में भोर प्रभावित करता है और अगले अंकों में यह उत्तरोत्तर प्रगति करेगा इस का विश्वास इस अंक से पाठकों के मन में जाग जाता है।

भोर के संपादक और संरक्षक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

डॉ. नितीन उपाध्ये
दुबई - ०३-०६-२०२४

बहुत ही अद्भुत भोर का प्रथम संस्करण।चाहे उसके मुख्य पृष्ठ की बात करें या फिर उसके विषय सामग्री की सब अपने आप में अनोखा। इसके लिए मोनी बिजय जी एवं उनकी समस्त कार्यकारिणी समिति को अनंत बधाई एवं शुभकामनाएं।

भोर दिन-प्रतिदिन प्रगति करे और पत्रिका की दुनिया में एक नया मुकाम हासिल करें।

शुभकामनाओं सहित
ऐश्वर्या संपन्ना (मुंबई)

'भोर' त्रैमासिक हिंदी ई - पत्रिका का प्रवेशांक मार्च 2024 का अंक पढ़ा। संपादक मंडल एवं संरक्षक मंडल को हार्दिक बधाई। भाषाई त्रुटियों पर थोड़ा ध्यान देने की आवश्यकता है। विश्व हिंदी दिवस विषय पर लिखा आलेख सच्चाई का आईना है। सभी संपादक मंडल को साधुवाद !!

मीरा ठाकुर
आबुधाबी यू. ए. ई.

शेयर योर ह्यूमैनिटी मानवता मंच की पत्रिका 'भोर' का प्रवेशांक अत्यंत सुंदर बन पड़ा है। सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात कि इस अंक में कविता, कहानी, आलेख आदि हर विधा को स्थान दिया गया है। पृष्ठ संयोजन और पत्रिका की साज सज्जा प्रशंसनीय है। संपादन से जुड़े सभी सदस्यों को साधुवाद! कामना है कि यह पत्रिका निरंतर ऊंचाइयां प्राप्त करे !

श्वेता सिन्हा
बैंगलोर , भारत

“जापान” की सैर.

डॉ. रमा शर्मा

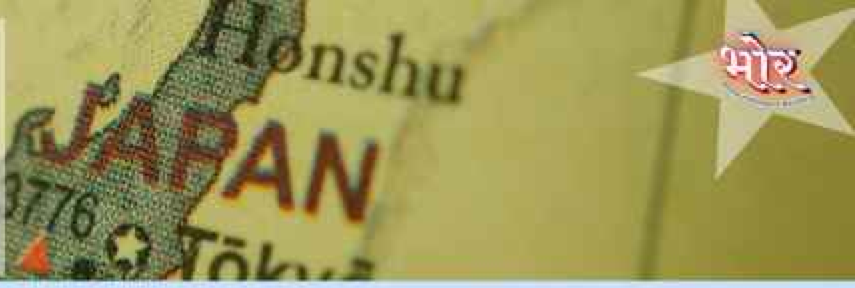

'जापान'...

जिसे जापान में लोग निप्पॉन या निहोन कहते हैं लेकिन अंग्रेज़ी भाषा में इसे जापान कहा जाता है । यह एशिया में स्थित एक लोकतांत्रिक देश है और इसकी राजधानी टोक्यो है और सबसे बड़ा शहर है । जापान पूर्वी एशिया में द्वीपों का देश के नाम से प्रसिद्ध है। यह 14,125 द्वीपों के एक द्वीपसमूह में फैला हुआ है, जिसमें चार मुख्य द्वीप होक्काइडो, होन्शू ("मुख्य भूमि"), शिकोकू और क्यूशू हैं। टोक्यो देश की राजधानी और इसके बाद योकोहामा, ओसाका, नागोया, सपोरो, फुकुओका, कोबे और क्योटो हैं।जापान एक उत्तर-पूर्वी एशियाई देश है, जो एक शीर्ष तकनीकी और आर्थिक शक्ति के रूप में माना जाता है। यह उत्तर-पश्चिमी प्रशांत महासागर में स्थित है और पश्चिम में जापान सागर से घिरा हुआ है, जो कि उत्तर में ओखोटस्क सागर से लेकर और दक्षिण में पूर्वी चीन सागर , फिलीपीन सागर और ताइवान तक फैला हुआ है।

जापान की आबादी 125 मिलियन से ज़्यादा है, जो इसे दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले देशों में से एक बनाता है। यह एक संवैधानिक राजतंत्र देश है जिसमें संसदीय सरकार है। सम्राट औपचारिक राष्ट्राध्यक्ष होता है और प्रधानमंत्री सरकार का मुखिया होता है। जापान की अर्थव्यवस्था दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी है। यह अपनी तकनीकी प्रगति, ऑटोमोबाइल उद्योग और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र के लिए जाना जाता है। यहाँ अत्यधिक विकसित शिक्षा प्रणाली है जो अपनी शैक्षणिक कठोरता और अनुशासन और कड़ी मेहनत पर जोर देने के लिए जानी जाती है। यहाँ के विश्वविद्यालय दुनिया के कुछ शीर्ष रैंक वाले विश्वविद्यालयों में माने जाते हैं ।

जापान रिंग ऑफ फायर का हिस्सा माना जाता है। रिंग ऑफ फायर में 750 से 915 सक्रिय या निष्क्रिय ज्वालामुखी हैं, जो दुनिया के कुल का लगभग दो-तिहाई है। रिंग ऑफ फायर के भीतर ज्वालामुखियों की सही संख्या इस बात पर निर्भर करती है कि कौन से क्षेत्र शामिल हैं। दुनिया के लगभग 90% भूकंप,जिनमें सबसे बड़े भूकंप भी शामिल हैं, इसी बेल्ट में आते हैं।

यहाँ की जनसंख्या भी बहुत अधिक है, लेकिन वे अपनी टेक्नोलॉजी, संगठन और सामाजिक प्रणाली के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ की सांस्कृतिक विविधता, वास्तविकता और प्रौद्योगिकी में उत्कृष्टता का मिश्रण है। जापान देश अपनी शिक्षा, उद्योग, और कला में भी महत्वपूर्ण है।यह एक अनूठा समृद्ध संस्कृति, प्रगतिशील और अभिनव सोच का केंद्र है, जो विश्व भर में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखता है।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: जापान का ऐतिहासिक पारंपरिक विरासत, जैसे कि समुराई, निंजा, और गेशिया, दुनियाभर में मशहूर हैं। यहाँ बुद्धिमत्ता, शिक्षा, और कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है।

2. समृद्ध वाणिज्य और औद्योगिक उत्पादन: जापान एक गर्म और सक्रिय वाणिज्यिक बाजार के साथ विश्व के अग्रणी औद्योगिक उत्पादक है। यह निर्यात, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, और यातायात के क्षेत्र में अग्रणी है।

3. सामरिक और राजनीतिक प्रभाव: जापान एक सामरिक और राजनीतिक शक्ति है, और यह प्रशासनिक, आर्थिक, और सामाजिक मामलों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. पर्यटन: जापान का पर्यटन उत्कृष्ट है, जिसमें समृद्ध ऐतिहासिक स्थल, प्राकृतिक सौंदर्य, और आधुनिक शहरों का संगम शामिल है।

5. कला और साहित्य: जापानी कला, संगीत, साहित्य, और फिल्म विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ कबुकी, नो और मंगा जैसे कला रूपों का उत्कृष्ट विकास हुआ है।

जापानी लोग अपनी सामर्थ्य और संगठनशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें समृद्धि, कार्यकुशलता, और समाज में सामंजस्य के मूल्यों को उच्चतम माना जाता है।

जापानी संस्कृति समृद्ध और विविधतापूर्ण है, जिसमें पारंपरिक शिंटो और बौद्ध मान्यताओं के साथ-साथ आधुनिक पश्चिमी संस्कृति का भी प्रभाव है। यह अपनी कला, साहित्य, भोजन, मार्शल आर्ट और काबुकी और नोह जैसी पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं के लिए प्रसिद्ध है। जापान में कई प्रमुख त्योहार मनाए जाते हैं, जैसे शोगुन के समय से प्रारंभिक रूप से मनाए जाने वाले त्योहार – साकुरा मत्सुरी (चेरी ब्लॉसम फेस्टिवल), ओ-बोन (बोन फेस्टिवल), टाना-बोन (स्वतंत्रता दिवस), और गोजि (वर्ष का आखिरी दिन)। इनमें से हर एक का अपना महत्व और मनाने का तरीका होता है।

"जापान" की सैर.

1. साकुरा मत्सुरी (CHERRY BLOSSOM FESTIVAL): यह त्योहार जापान का बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रिय त्योहार है। यह वसंत के समय में मनाया जाता है। जब साकुरा (चेरी ब्लासम) पेड़ों पर फूल खिलते हैं। सारा जापान गुलाबी हो जाता है ।लोग दोस्तों और परिवार के साथ पिकनिक करते हैं, पार्क में फूलों के समीप बैठते हैं, और हनामी (फूलों की देखभाल) करते हैं।

2. ओ-बोन (OBON): यह बौद्ध त्योहार है जो उनके मृत पितरों को याद करने के लिए मनाया जाता है। यह मानते हैं कि इस समय पितर अपने परिवारों के लिए आत्मा के रूप में वापस आते हैं, और लोग उनका स्वागत करते हैं। इस अवसर पर, लोग अपने घरों को सजाते हैं, प्रार्थना करते हैं और बड़े परिवार की साथ भोजन करते हैं और घर में बने मंदिर जिसे कामी गाना कहते हैं, में रोज़ पितरों के लिये खाना रखते हैं ।

3. टाना-बोन (TANABATA): यह त्योहार जुलाई के महीने में मनाया जाता है। इस त्योहार में, लोगों को तारों की परिक्रमा करने का अवसर मिलता है। वे अपनी इच्छाओं को लिखकर पेड़ों पर छोटे-छोटे लकड़ी के लट्ठ पर लगाते हैं, काग़ज़ों पर लिख कर उन्हें पेड़ों पर बाँधते हैं और प्रार्थना करते हैं कि उनकी इच्छा पूरी हो।

4. गोजि (OSHOGATSU): यह नए साल का पहला दिन होता है, और 1 जनवरी को मनाया जाता है। इस त्योहार में, लोग अपने परिवारों और दोस्तों के साथ मिलकर खुशियों का आनंद लेते हैं, और नए साल की शुरुआत के लिए धर्मिक अनुष्ठान भी करते हैं। फूलों को और संतरों को घर के बाहर , अपनी दुकान, अस्पताल, कार पर टांगते हैं।

जीवन पर कुछ हाइकु

कुछ अपना
बाकि सब पराया
यही जीवन।

अंधेरे मोड़
संभल के चलना
खतरा बड़ा।

अपनाया है
ये कड़वा सच तो
जीवन चला

मानव मन
घमंड ही घमंड
अंत निश्चय।

समय कम
काम फैले बहुत
अंत निकट।

घमंड चूर
स्वाभिमान की जीत
यही सत्य है।

रोये जीवन
मुस्कुराये किस्मत
संघर्ष रत।

डॉ. रमा शर्मा

वरिष्ठ साहित्यकार, सम्पादक,संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
'हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका' टोक्यो जापान
ईमेल : HINDIKEEGOONJ@GMAIL.COM',
संरक्षक ('भोर' पत्रिका)

मानवता के हाथ

लुवोर म्यूज़ियम: आबु धाबी में भारतीय संस्कृति

एक बार फ्रांस जाकर भी 'लुवोर म्यूज़ियम' देखने से चूक गए थे तो व्याकुल मन यू.ए.ई. की राजधानी आबुधाबी में इसे देखने को मचल उठा और इसके भ्रमण को मैं सपतीक पहुँची। संग्रहालय में भिन्न-भिन्न देशों की बहुत सी नायाब कलाकृतियाँ, मूर्तियाँ, हस्तशिल्प, चित्रकारी व कारीगरी देखने को मिली। भारत पूरे गौरव के साथ बहुत-सी पुरातन शिल्पकृतियों को लेकर वहाँ उपस्थित दिखा तो मन आनंद से भर गया। गौतम बुद्ध की भाँति-भाँति की मूर्तियाँ अलग-अलग देशों से लाकर संग्रहीत की गई थीं। मूल रूप से भारत में उपजा बौद्ध धर्म किस प्रकार विश्व में फैला, यह देखकर बहुत संतोष हुआ। इस वृत्तांत में मैं 'लुवोर म्यूज़ियम' में प्रदर्शित बौद्ध अवशेषों का उल्लेख करूँगी।

1) ब्रह्माण्ड के धर्म में दया मूलभूत गुण है। बौद्ध धर्म में बोधिसत्त्व के आदर्श के द्वारा इसे स्थापित किया गया है। गांधार, पाकिस्तान से लाई गई बोधिसत्त्व मूर्ति 136 सेंटीमीटर ऊँची है। इसका निर्माण 'कुश' वंश के शासनकाल में ईसापूर्व 100 से 300 वर्ष के मध्य हुआ।

2) गांधार, पाकिस्तान से बुद्ध का यह शीश 'कुश' वंश के शासनकाल में ईसापूर्व 100 से 300 के मध्य बना है। यह आध्यात्मिकता को बढ़ाने वाला तथा शरीर व मन के संतुलन को कायम करते हुए मनुष्य को लालच व इच्छाओं से मुक्त करता है।

3) भारत के महाराष्ट्र राज्य के अमरावती शहर से लाया गया 130 सेंटीमीटर ऊँचा यह अवशेष बौद्ध स्तूप का अंश है। पत्थर का यह टुकड़ा सन् 100 से 300 के बीच में निर्मित है। इस पत्थर पर बौद्ध धर्म के उद्देश्य उभरे हुए हैं। पहिएनुमा आकृति सूर्य का प्रतिरूप है जो सम्राट अशोक के राजचिह्न से भी समबद्ध है। अन्य आकृतियाँ बुद्ध, बौद्ध उपदेश और मठों को दर्शाती हैं। नीचे की ओर बना सिंहासन भी मनुष्य रूप में बुद्ध की उपस्थिति का अहसास कराता है।

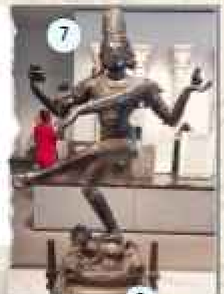

4) चीन से लाई गई बुद्ध की यह प्रतिमा 'उत्तरी क्यी राजवंश' द्वारा वर्ष 550-557 के दौरान चूने पत्थर से बनाई गई थी।

5) 1100-1200 के मध्य नेपाल में बनी यह प्रतिमा मैत्रेय की है। ऐसा माना जाता है कि यह आने वाले समय के बुद्ध हैं, इनका समय भविष्य में आएगा। इसे 'मालिया' राजवंश द्वारा बनवाया गया था।

6) लकड़ी, लाख और सोने से बनी यह राजसी वेश में बोधिसत्त्व की मूर्ति जापान में सन् 1100-1200 में निर्मित हुई थी। 'करुणा के बोधिसत्व' का यह रूप एक मंदिर में स्थापित था। दैवीय जगत और मानवीय संसार की मध्यस्थता करने वाले बोधिसत्त्व सबसे अधिक पूज्य हैं, जिनका उद्देश्य मनुष्य को निर्वाण प्राप्ति को प्रेरित करना है।

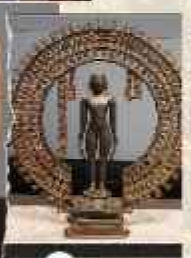

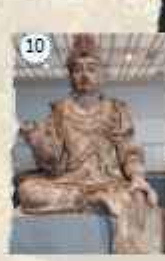

7) नटराज (नृत्य करते भगवान शिव) की काँसे की यह 76 सेंटीमीटर लंबी मूर्ति तमिलनाडु में वर्ष 950-1000 के मध्य बनाई गई थी। भगवान शिव भयावह तथा परोपकारी, दोनों रूपों में हिन्दू धर्म में पूजे जाते हैं।

8) समाधिस्थ बुद्ध की यह प्रतिमा कोरिया से लाई गई है। इसे 'चोसोन' राजवंश में सन् 1400 से 1500 के बीच निर्मित किया गया था। यह लकड़ी के टुकड़ों से बनी हुई है।

9) बौद्ध सूत्र की मौलिक पाण्डुलिपि, जिसमें आदर्श विवेक के सूत्र अंतर्निहित हैं, 'पाला' राजवंश द्वारा पूर्वी भारत में 1191 में रची गई थी।

10) 'ग्वानीन' बोधिसत्त्व (करुणा मूरत) की यह प्रतिमा चीन देश के उत्तरी 'सॉन्ग' राजवंश के दौरान 1050-1150 के मध्य बनाई गई। यह लकड़ी को कुरेदकर बनाई गई है। इस भंगिमा में सीधे हाथ से निडरता का संकेत किया जा रहा है।

11) लाल बलुई पत्थर से बना बुद्ध का 195 सेंटीमीटर का सिर गुप्त वंश के दौरान सन् 400 से 500 के बीच बनाया गया। उत्तरी भारत के मथुरा क्षेत्र से इसे लाया गया है। इसमें बुद्ध ध्यान की अवस्था में हैं। उनकी अधखुली आँखें उन्हें आलौकिकता प्रदान करती हैं।

12) इसके साथ ही सफ़ेद संगमरमर से बना बुद्ध का 151 सेंटीमीटर का सिर पूर्वी चीन से लाया गया। छठी शताब्दी में सन् 530 से 580 के दौरान यह 'क्यी' वंश द्वारा बनवाया गया। उत्तरी चीन के चैपल मंदिर में यह प्रतिष्ठित हुआ करता था।

13) महावीर जैन की योग-ध्यान में स्थिर यह भव्य प्रतिमा 'चोल' राजवंश द्वारा भारत के तमिलनाडु में सन् 1000-1100 के भीतर बनवाई गई।

14) ध्यानमग्न बुद्ध की यह मूर्ति, जिसमें लोककथा के अनुसार बुद्ध की रक्षा स्वयं नागदेव कर रहे हैं, कंबोडिया से लाई गई है। यह 111 सेंटीमीटर ऊँची बलुई मिट्टी से वर्ष 1100-1150 के दौरान बनी है।

15) थाईलेंड से आई बुद्ध मारविजय की यह खूबसूरत प्रतिमा काँसे की बनी हुई है। इसे वर्ष 1400 से 1500 के बीच बनाया गया था।

>>>>>

लूवोर म्यूजियम: आबु धाबी में भारतीय संस्कृति।

डॉ. आरती लोकेश

आबूधाबी, यू. ए. ई.

प्रसिद्ध साहित्यकार,
हिंदी अध्यापिका –आबूधाबी,
संस्थापक अध्यक्ष –वागीश अंतरराष्ट्रीय संस्था
यू.ए.ई.

हिंदू धर्म दर्शन और योग

डॉ. श्वेता दीप्ति

पूर्व अध्यक्ष
हिन्दी केंद्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू
सम्पादक, हिमालिनी,
हिन्दी मासिक पत्रिका
काठमांडू से प्रकाशित

मानव सभ्यता जितनी पुरानी है, उतनी ही पुरानी योग की उत्पत्ति मानी जाती है, लेकिन इस तथ्य को साबित करने का कोई ठोस सबूत मौजूद नहीं है । इस क्षेत्र में व्यापक शोध के बावजूद भी, योग की उत्पत्ति के संबंध में कोई ठोस परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं । ऐसा माना जाता है कि भारत में योग की उत्पत्ति लगभग ५००० साल पूर्व हुई थी । बहुत से पश्चिमी विद्वानों का मानना था कि योग की उत्पत्ति ५००० साल पूर्व नहीं, बल्कि बुद्ध (लगभग ५०० ईसा पूर्व) के समय में हुई थी । सिंधु घाटी की सबसे प्राचीन सभ्यता की खुदाई के दौरान, बहुत ही आश्चर्यजनक तथ्य उभरकर सामने आए । खुदाई के दौरान, इस सभ्यता के अस्तित्व वाले साबुन के पत्थर (सोपस्टोन)पर आसन की मुद्रा में बैठे योगी के योग की महिमा और यज्ञों की सिद्धि के लिए उसकी परमावश्यकता बतलायी गयी है। इसी सिद्धांत का 'ऋक् संहिता' में स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है-

"यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चि तश्चन।
स धीनां योगमिन्वति।।" (ऋक् संहिता मंडल १, सूक्त १८, मंत्र ७)

अर्थात् योग के बिना विद्वान का कोई भी यज्ञकर्म नहीं सिद्ध होता, वह योग क्या है सो चित्तवृत्ति निरोधरूपी योग या एकाग्रता से समस्त कर्तव्य-व्याप्त हैं, अर्थात सब कर्मों की निष्पत्ति का एकमात्र उपाय चित्तसमाधि या योग ही है।

वैदिक योग

वेदों के अनुसार, भारत में योग की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई है। सबसे प्राचीन यौगिक शिक्षाएँ वैदिक योग या प्राचीन योग के नाम से मशहूर हैं और इसे चार वेदों- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में देखा जा सकता है। वैदिक योग से जुड़े अनुष्ठान और समारोह मन को तरोताज़ा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, उस समय लोगों ने वैदिक योग को जीवन के बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू के रूप में अपनाया था। योग को अदृश्य दुनिया से जुड़ने और अपने आप को किसी के प्रति समर्पित करने का एक तरीका माना जाता है। उस समय समर्पण का उपयोग करके ही एक बात पर लंबे समय तक ध्यान केंद्रित किया जाता था।

प्रारम्भिक शास्त्रीय योग

वैदिक योग के बाद प्रारम्भिक शास्त्रीय योग का युग आया और इसे उपनिषदों के निर्माण के रूप में चिन्हित किया गया था। इसकी अवधि लगभग २,००० वर्षों की थी और यह योग दूसरी शताब्दी तक चला था। इस योग के कई रूप हैं, लेकिन इस प्रारंभिक योग के अधिकांश योग, वैदिक योग के समान ही हैं ।

शास्त्रीय योग

'योग सूत्र' में शास्त्रीय योग का प्रमाणीकरण किया गया था और पतंजलि ने दूसरी शताब्दी के आसपास शास्त्रीय योग के निर्माण के प्रतीक का व्याख्यान किया था। पतंजलि का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति का निर्माण-तत्व (प्रकृति) और आत्मा (पुरुष) से मिलकर होता है। योग के माध्यम से, इन दोनों को पृथक करके आत्मा का शुद्ध रूप में नवीनीकरण किया जा सकता है।

हिंदू धर्म दर्शन और योग

पूर्व शास्त्रीय योग

पूर्व शास्त्रीय योग का ध्यान वर्तमान पर केंद्रित था। इसमें पतंजलि योगसूत्र के बाद, अस्तित्व में आने वाले योग के सभी अनुभाग निहित होते हैं। शास्त्रीय योग से विपरीत, पूर्व शास्त्रीय योग में सब कुछ कठोर एकाग्रता पर केंद्रित होता है। इस अवधि के दौरान योग ने एक दिलचस्प मोड़ ले लिया था, क्योंकि इस अवधि के योग शरीर के अंदर छिपी क्षमता की जाँच करने में सक्षम थे। इसलिए, शरीर का नवीनीकरण के लिए योग-गुरुओं द्वारा साधना की एक प्रणाली का निर्माण किया गया था, परिणामस्वरूप वर्तमान योग के एक शौकिया प्रारूप 'हठयोग' की रचना हुई।

आधुनिक योग

माना जाता है कि वर्ष १८९३ में शिकागो में आयोजित धर्मों की संसद् में आधुनिक योग की उत्पत्ति हुई थी। स्वामी विवेकानंद ने धर्मों की संसद में, अमेरिकी जनता पर स्थायित्व से परिपूर्ण प्रभाव डाला था। उसके फलस्वरूप वह योग और वेदांत की ओर छात्रों को आकर्षित करने में काफी सफल हुए। उसके बाद, दूसरे योगगुरु परमहंस योगानन्द को माना जाता है। वर्तमान समय में, पतंजली योगपीठ ट्रस्ट के स्वामी रामदेव ने भारत के प्रत्येक घर में, यहाँ तक कि विदेशों में भी योग का प्रसार करने में कामयाबी हासिल की है।

योग का संक्षिप्त इतिहास

योग का उपदेश सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ ब्रह्मा ने सनकादिकों को, उसके पश्चात विवस्वान (सूर्य) को दिया। बाद में यह दो शाखाओं में विभक्त हो गया- ब्रह्मयोग और कर्मयोग। ब्रह्मयोग की परम्परा सनक, सनन्दन, सनातन, कपिल, आसुरि, वोढु और पच्चंशिख नारद-शुकादिकों ने शुरू की थी। यह ब्रह्मयोग लोगों के बीच में ज्ञान, अध्यात्म और सांख्य योग नाम से प्रसिद्ध हुआ। जबकि कर्मयोग की परम्परा विवस्वान की है। विवस्वान ने मनु को, मनु ने इक्ष्वाकु को, इक्ष्वाकु ने राजर्षियों एवं प्रजाओं को योग का उपदेश दिया।

योगग्रंथों योगसूत्र, वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता, हठयोग प्रदीपिका, योग दर्शन, शिव संहिता और विभिन्न तंत्र ग्रंथों में योग विद्या का उल्लेख मिलता है। सभी को आधार बनाकर पतंजलि ने 'योगसूत्र' लिखा जो योग पर लिखा गया सर्वप्रथम सुव्यव्यवस्थित ग्रंथ है।

अन्य धर्म और योग

यहूदी धर्म और योग- हजरत मूसा ने कुछ यम-नियमों के पालन पर ज़ोर दिया था । मूसा की दस आज्ञाएं यहूदी संप्रदाय का आधार हैं। यह वेद और योग से ही प्रेरित हैं।

जैन धर्म और योग- जैन धर्म का योग से गहरा नाता है। जैन धर्म में पंच महाव्रतों का बहुत महत्व है- अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (धन का संग्रह न करना)।

पारसी धर्म और योग- महात्मा जरथुस्त्र भी एक योगी ही थे। पारसी धर्म का वेद और आर्यों से गहरा नाता है। अत्यंत प्राचीन युग के पारसियों और वैदिक आर्यों की प्रार्थना, उपासना और कर्मकांड में कोई भेद नज़र नहीं आता । वे अग्नि, सूर्य, वायु आदि प्रकृति तत्वों की उपासना और अग्निहोत्र कर्म करते थे।

बौद्ध धर्म और योग- बुद्ध की हठयोग-संबंधी साधनाओं एवं क्रियाओं की पहल 'गुहासमाज' नामक तंत्र ग्रंथ से मिलती है और यह ग्रंथ ईस्वी सन् तीसरी शताब्दी में लिखा गया है। बौद्ध धर्म ने योग को बहुत अच्छे से आष्टांगिक मार्ग में व्यस्थित रूप दिया है। इसी से प्रेरित होकर संभवत पतंजलि ने अष्टांग योग लिखा होगा ।

ईसाई धर्म और योग- ईसाई धर्म के लोग चंगाई सभा करके लोगों को ठीक करने का दावा करते हैं। दरअसल ये योग की प्राणविद्या, कुंडलिनी योग और रेकी का ही कार्य है। ईसा मसीह इसी विद्या द्वारा लोगों को ठीक कर देते थे। बपस्तिमा देना, सामूहिक सस्वर प्रार्थना करना यह योग का ही एक प्रकार है।

इस्लाम धर्म और योग- हज़रत मुहम्मद स. अलै. ने प्रार्थना और प्रेम- इन मुद्दों को और परिष्कृत करते हुए परमात्मा को संपूर्ण शरणशीलता और उसकी सामूहिक प्रार्थना पर ज़ोर दिया। 'इस्लाम'- इस अरबी शब्द का अर्थ ही परमात्मा के संपूर्ण शरणागत होना है।

सिख धर्म और योग- सिख धर्म में कीर्तन, जप, अरदास आदि अनेक बातें योग की ही देन हैं। सभी गुरु एक महान् योगी ही थे। साहस, शुचिता और सत्य की सीख देने वाला महान् सिख धर्म संपूर्ण योग ही है।

धर्म के सत्य, मनोविज्ञान और विज्ञान का सुव्यवस्थित रूप है योग। योग की धारणा ईश्वर के प्रति आप में भय उत्पन्न नहीं करती और जब आप दुःखी होते हैं तो उसके कारण को समझकर उसके निदान की चर्चा करती है। योग पूरी तरह आपके जीवन को स्वस्थ और शांतिपूर्ण बनाए रखने का एक सरल मार्ग है। यदि आप स्वस्थ और शांतिपूर्ण रहेंगे तो आपके जीवन में धर्म की बेवकूफ़ियों के लिए कोई जगह नहीं बचेगी ।

योग एक ऐसा मार्ग है जो विज्ञान और धर्म के बीच से निकलता है। वह दोनों में ही संतुलन बनाकर चलता है। योग के लिए महत्वपूर्ण है मनुष्य और मोक्ष। मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखना विज्ञान और मनोविज्ञान का कार्य है और मनुष्य के लिए मोक्ष का मार्ग बताना धर्म का कार्य है; किंतु योग यह दोनों ही कार्य अच्छे से करना जानता है। इसलिए योग एक विज्ञान भी है और धर्म भी।

(कल्याण के दसवें वर्ष का विशेषांक योगांक तथा अन्य स्रोतों के आधार पर तैयार आलेख)

गंगा दशहरा

संजय वर्मा 'दृष्टि'
125 बलिदानी भगत सिंह मार्ग
मनावर जिला धार मप्र

इंदौर से मनावर 127 किमी की दूरी पर स्थित है। मनावर से 25 किमी की दरी पर स्थित गांगली गांव है। ये कालांतर में गंगा से गांगली हो गया। ये नर्मदा के तट पर स्थित है। यहाँ पवित्र कुंड विद्यमान है, जिसमें निरंतर गंगा का जल प्रवाहित होता रहता है। इस जल की पुष्टि गंगा नदी के जल से की गई है। ये जल बहकर नर्मदा के जल में मध्य में आता है, जिसे 'सातमात्रा' के नाम से भी पुकारा जाने लगा। यहाँ माँ गंगा और नर्मदा का मिलन होता है। यहाँ शिवलिंग भी है जो नंदिकेश्वर के नाम से जाना जाता है। प्राचीन स्थान का पुराण (स्कंध पुराण के रेवाखंड और शिव पुराण) में उल्लेख है। पंडित प्रदीप जी मिश्रा ने होशंगाबाद जिले के सेमरी हरचंद गाँव में कथावाचन के दौरान मनावर के नाम का उल्लेख किया था। यहाँ दशमी को भव्य मेला भी लगता है। गंगा दशहरा पर भारी भीड़ रहती है। ये स्थल सरदार सरोवर के डूब क्षेत्र में आने से, जब पानी नहीं रहता, तब श्रद्धालुओं के लिए सुलभ होता है। यहाँ देश के सभी प्रांतों से गूगल मैप के ज़रिये स्थान खोज कर दर्शन का लाभ लेते हैं। यहाँ पहुंचने के दो रास्ते हैं- एक सिंघाना गणपुर होकर एवं एक मनावर से पक्का डामर एवं सीमेंट रोड से सेमल्दा रोड़ पर वायल, पचखेड़ा होकर करोली फाटा आता है। वहाँ पर क्रांतिकारी टंटिया मामा की प्रतिमा से करोली फाटा से पिपलाज के आगे से ग्राम बीजाबयड़ी से टर्न होकर मात्र २ किमी की दूरी पर गांगली (सातलाई) में गंगा कुंड निर्मित है। कुंड में ऊपर से जाली लगी है ताकि कोई उसमे ना गिरे। कुंड में दूसरी ओर स्नान हेतु पेढ़ियां बनी हुई हैं। ग्राम का नाम सातलाई में सात तलाई है जिसमे से दो तलाई में पानी भरा हुआ है। उसके समीप प्राचीन शिव मंदिर है और उसी क्षेत्र में जागोद-बागोद दो शिव मंदिर हैं जहाँ शुद्ध घी का भंडारा डेढ़ वर्ष तक चला था। दर्शनीय स्थल में माँ गंगा का माँ नर्मदा के जल में विलय होने का स्नान एवं दर्शन-लाभ अवश्य लेना चाहिए। गंगा दशहरे के दिन धार्मिक मेला लगता है।

अरब अमीरात में ईद –उल फितर

संयुक्त अरब अमीरात में रमादान का महीना अति पावन माना जाता है। पहली बार यू. ए. ई. में जब मैंने इस माह की गतिविधि देखी तो मन में मिलीजुली प्रतिक्रिया हुई। भारत से आने के बाद यह हमारे लिए अनोखा अनुभव था। जैसे हम सुबह से शाम तक घर से बाहर कहीं भी कुछ खा-पी नहीं सकते थे, यहाँ तक कि हाथ में पानी की बोतल भी खुले आम नहीं ले जा सकते थे। शाम को रोज़े के खत्म होने के बाद ही कहीं कुछ खाने-पीने की क्रिया शुरू होती थी। शाम की रौनक बस देखते ही बनती थी। होटलों, छोटे रेस्टोरेंट में तो मानो त्यौहार का-सा माहौल हो जाता था। तरह-तरह के व्यंजन देखकर देखने वाले के मुँह में भी पानी आ जाता। रमादान के अवसर पर पूरे महीने अल्लाह के बंदे अल्लाह की इबादत करते हैं, रोज़ा रखते हैं। यहाँ इस पाक महीने में काम-काज का समय भी बदल दिया जाता है। एक महीने के लिए स्कूल, कॉलेज का समय भी बदल जाता है। सड़कों पर ट्रैफिक धीमा हो जाता है। भाग-दौड़ से भरी ज़िंदगी में कुछ समय के लिए मानो एक ठहराव-सा आ जाता है।

शुरुआत में शाम के समय भी लोग जल्दी अपने घरों की ओर रवाना होते हैं। शाम की नमाज के बाद इफ्तार होता है। हर रोज किसी न किसी के यहाँ इफ्तार का इंतजाम होता है, जिसमें सब उत्साह से शरीक होते हैं। मेरे खयाल में ऐसी रौनक किसी अन्य देश में देखने को नहीं मिलती है। बड़े-बड़े होटलों में इफ्तार के बड़े-बड़े आयोजन होते हैं। जहाँ देखो मानो मेला-सा लग जाता है। वर्ष में एक बार यही सबसे मिलने-जुलने और भाई-चारा बढ़ाने का अनोखा अवसर होता है। सब के घरों में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को बनाने की होड़-सी लगी रहती है। घरों में शाम का समय सबके इकट्ठे होने का रहता है, शाम की नमाज अदा करने के बाद इफ्तार का इंतजाम होता है। सबसे पहले खजूर दी जाती है। इससे उपवास तोड़ना सेहत के लिए अच्छा माना जाता है। इसके बाद तरह-तरह के व्यंजन खाने के लिए रखे जाते हैं। सारा माहौल बड़ा ही उत्साहवर्धक होता है। एक महीने रोज़े के कैसे निकल जाते हैं, पता ही नहीं चलता। चारों तरफ रोशनी की बहारें दिखाई देती हैं। घर से बाहर का नजारा देखते ही बनता है। सड़कों पर मीलों लंबी बिजली की झालरें लगीं रहती हैं। उन पर उस वर्ष होने वाले तमाम गतिविधियों के बारे में जानकारी भी दी जाती हैं। इस माह जकात अर्थात दान को भी काफ़ी महत्व दिया जाता है। यहाँ की सरकार गरीबों पर भी बहुत ध्यान देती है। यहाँ इस अवसर पर तमाम प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

मीरा ठाकुर
आबुधाबी यू. ए. ई.

मुंबई यूनिवर्सिटी से एम. ए. (हिन्दी) में स्वर्ण पदक प्राप्त, पूर्व हिंदी अध्यापिका, कई पत्र - पत्रिकाओं जैसे नवभारत टाइम्स (मुंबई), जनसत्ता, गृह शोभा, सरिता, मुक्ता, नन्दन आदि में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। हाल ही में इनकी कविताओं की पुस्तक 'धूप -छाँव की दरी 'प्रकाशित हुई है।

एक महीने के रोजों के बाद बारी आती है ईद की अर्थात 'ईद-उल-फित्र' की। इसका लोग बेसब्री से इंतज़ार करते हैं, क्योंकि यह छुट्टी वर्ष में आनेवाली सबसे लंबी छुट्टियों में से एक है। यहाँ के लोग अर्थात् प्रवासी लोग इन छुट्टियों में अपने घर जाते हैं और अपने लोगों के साथ यह त्यौहार धूमधाम से मनाते हैं, बाकी प्रवासी देश से बाहर घूमने का कार्यक्रम बनाते हैं। यह पर्व त्याग और अपने मजहब के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

अमीराती परंपरा के अनुसार, रमजान की शुरुआत की घोषणा करने के लिए दो बार और इफ्तार की घोषणा करने के लिए हर दिन एक बार तोप दागी जाती है। ईद-उल-फित्र की घोषणा करने के लिए लगातार दो बार गोलीबारी की जाती है और त्यौहार की सुबह दो बार गोलीबारी की जाती है। ईद तोप को स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं का पुनरुद्धार और प्रामाणिक सामाजिक विरासत के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का हिस्सा माना जाता है, जो अमीराती समाज की स्मृति और विवेक में गहराई से निहित है। तोप एक परंपरा ह, जिसके अमीरात के लोग और देश के निवासी आदी हो गए हैं।

वैशाख की महिमा

ममता मृदुल
काठमांडू नेपाल

दस पुस्तकें प्रकाशित जिसमें कविता ,कथा, लघु कथा ,समीक्षा , उपन्यास सम्मिलित हैं।
5 पुस्तकों का संपादन, प्रुफ रीडर – 'गोरखा पत्र संस्थान', अध्यक्ष – 'नारी स्रष्टा नेपाल', 'लघुकथा समाज कोशी प्रदेश' । साथ ही साहित्य , कला, नारी उत्थान, शांति और सामाजिक कार्यो के लिए अनगिनत विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित ।

जब सुनाखरी अपनी खुली लट को झुलाती हुई खिलखिलाती है, तब सबको लगता है की -हां वैशाख आ गया है । साल मे एक बार अपनी अदा के साथ फूल खिलती है तो ऐसा लगता है सुनाखरी की उन्माद को निहारने के लिए ही वैशाख माह आई है ।

कोयल की कुहु –कुहु मीठी धुन सुनाती है । जब कोयल गाती है उससे खुशियाँ बांटने के लिए । यहाँ के पहाड़ियों मे ऐसेलु, काफल पकते है । उनकी मिठास में अपना मन झुमता है । सरगम की तरह अपनी मादकता छिडकती हुई आती है वैशाख ।

हर मास की अलग महिमा होती है । बारह मास मे कुछ मास का इन्तजार रहता है — जैसे की वैशाख, सावन, कार्तिक फिर फागुन । आज मै आपके साथ वैशाख मास की बात करने जा रही हूं ।इस माह के पहले दिन को पूरे हिंदू राष्ट्र में नववर्ष के रूप में मनाया जाता है । हम उस दिन खुशियां बांटते हैं । साथ मे घुमने भी जाते है । वर्ष का यह दिन खुशियों का त्योहार जैसा मनाया जाता है।

वैशाख मे हम माता – तीर्थ मनाते है, नेपाल में उसे "आमा को मुख हेर्ने" बोलते है । उस दिन दुर या नजदीक रहने वाली माँ के लिये उपहार देने का रिवाज है । जन्म देनेवाली माँ को उस दिन सम्मान करते हुए सभी बच्चे मिलकर उत्सव में परिवर्तित करते हुए मनाते हैं । जिनकी माँ नही होती वो उन्हें याद करते दान देते है । यह दिन बुजुर्ग को सम्मान देने का दिवस है

उसके बाद अक्षय तृतीया आता है । इस दिन बद्री केदारनाथ मन्दिर का किवाड़ खुलता है । ऐसा कथन है, भगवान शिव और माता पार्वती का इसी दिन शादी हुआ था। अक्षय तृतीया पर्व मे सत्तु और शरबत खिलाने का, दान देने तथा पानी का प्याऊ लगवाने का रिवाज़ है। उस दिन बहुत से लोग लक्ष्मीनारायण का व्रत भी करते है । व्यापारी अपना हिसाब – किताब इसी दिन से शुरू करते हैं।

इस माह में हम निखर जाते है, कपकंपाती ठण्ड से निकलकर शरीर धूप में खिलकर आनंद लेता है जैसे बहुत दिनो से छुपे थे अब खुला आसमान मिला है । मन चिडियों के तरह उड़ने लगता है और कहता है की अब वसन्त की मादकता में झुमेगें । माँ का मन चहकता है की बच्चो के उच्च क्लास मे जाने की खुशी के साथ झूमता है । वैशाख तो आकर बच्चो के आकार प्रकार और शिक्षा में बड़ा कर देता है।

पूरे साल मे वैशाख एक ऐसा महिना है जब हम सभी को लगता है की महीने के साथ साथ पूरी प्रकृति में और हम सब में खुशियों का बदलाव आया है ।

मै चाहती हुँ की ऐसे ही खुशियों का मौसम बरकरार रहे और आप सब सदैव मुस्कराते रहें।

सादर धन्यवाद ।

नयाँ बर्ष
२०८१ मंगलमय हो।

हमारी प्रकृति – हमारा पर्यावरण

नमिता पाठक

सिडनी ऑस्ट्रेलिया

लेखिका, कवयित्री, कम्युनिटी लीडर
(विजन फैमिली डे केयर सर्विस) ,
सह-संपादक (SYH - भोर, ई-पत्रिका)

"प्रकृत्यैव विभिद्यन्ते गुणा एकस्य वस्तुनः।
वृन्ताकः श्लेष्मदः कस्मै कस्मैचित् वातरोग कृतः।।"

प्रकृति ही तो सम्पूर्ण जगत् की प्रथम जननी है। प्रकृति है तो हम सभी हैं। कहते हैं- "क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंचतत्व मिली बनी शरीरा।" ऐसी सृष्टि को परखना आसान नहीं है और शब्दों में बांधने की कोशिश तो निःसंदेह मुश्किल है। फिर भी अपना मन अपने शब्दों के माध्यम से बाँटने की कोशिश कर रही हूँ। हमारी प्रकृति, हमारा पर्यावरण और हमारी नैसर्गिक आवश्यकताएँ बता रही हैं कि पर्यावरण के प्रति प्रेम का अलख जगाना जरुरी है। जन-चेतना का समय है पर्यावरण से प्रेम करने की जरुरत है। इसी एक सोच के तहत व्यापक पैमाने पर विश्व पर्यावरण दिवस की नींव रखी गई। तारीख थी ५ जून और साल था १९७३।

मतलब ५० वर्ष से भी अधिक समय हो गए हैं जब मैं, आप या हम सभी नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व एकसाथ अपनी आवाज उठा रहा है। पर्यावरण की सुंदरता, सुगमता और स्वच्छता की बातें हो रही हैं, भाषण हो रहे हैं, नारे लगाए जा रहें हैं, गीत, गजल, कविता, कहानी, कलाकृतियाँ, पुस्तक, ग्रंथ लिखे जा रहे हैं। अनगिनत प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हो रहा है। सरकारी और गैर-सरकारी स्वयंसेवी संस्थाएं मिलजुल कर पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अपनी क्षमताओं के अनुसार कार्य करने की कोशिश करती हुई दिखाई दे रही हैं। शायद यही वजह है कि आज आम जनमानस भी पर्यावरण जैसे कठिन शब्दों की भाषाई उपमा से बेखबर नहीं है और समझने लगा है कि प्रदुषणमुक्त वातावरण को बनाए रखने की जरुरत के लिए जन जागरण की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण, इसी एक बात की बातें हो रही हैं, बातों-बातों में, कई एक बोलियों में, विचारों में, गाँव, शहर-कस्बों में, देशों और विदेशों में मंच सजे हुए हैं, जहाँ हर वय और उम्र के लोग अपने विचारों और जज्बातों की बयानी कर रहे हैं। जी हाँ, विश्व स्तर पर ग्लोबल वार्मिंग से बचने की बातें तो अब बच्चे भी करने लगे हैं मगर इतना कुछ होने पर भी हवाएं काली क्यों हो रही हैं ? पीने का पानी बोतलों में क्यों भर कर आ रहा है ? जंगल कटते क्यों जा रहे हैं ? क्यों लुप्त होती जा रही हैं, प्रकृति की गोद में खेलने वाले दुर्लभ जानवरों की प्रजातियाँ कहाँ खोता जा रहा है, जलों में जीने वाला जीवन, पेड़, पौधे, पहाड़ पत्थर कुछ भी शेष क्यों नहीं ? आकाश का रंग आसमानी, सफ़ेद और बादलों वाला क्यों नहीं? ये चिमनियों के धुंए वाला चारकोल-सा काला क्यों होता जा रहा है ? माँ धरा भी पथराई हुई-सी कंक्रीट की शिलाओं सी जीर्ण-शीर्ण क्यों होती जा रही है? इन सभी के बीच हम-तुम और ये-वो भी तो हैं जो अपने-अपने तरीके से इस प्रकृति से लिए जिए जा रहे हैं। हम सभी के बीच का, कोई लिख रहा है, कोई सुन और सुना रहा है, कोई रो रहा है, तो कोई सो रहा है। सभी की चाहत जरूर है प्रकृति के सुन्दर-सुवासित होने की, लेकिन समाधान मुश्किल महसूस हो रहा है। सुखद आश्चर्य है कि देश और महादेश एकजुट होकर पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं और साथ ही वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई एक पहल और कार्यवाहियों का साथ दे रही हैं, मगर असर कहाँ हो रहा है, किसपर और कैसे हो रहा है, ये दिखता क्यों नहीं ?

सभी की चाहत है कि पक्षियों की चहचहाहट सुनूं और रात की रानी अपनी खुशबू बिखेरती रहे। सूर्यदेव के उगने के साथ-साथ मुर्गे की बांग भी सुनी जा सके। गौ माता की आवाज आए। आम, जामुन, पपीते, केले, कटहल, अमरुद ,अंगूर, संतरे की महक से प्रकृति के सुन्दर सुवासित होने का आभास मिलता रहे, लेकिन समाधान मुश्किल महसूस हो रहा है। क्योंकि चाह तो है मगर राह नहीं है, और ये इसलिए कि हममें से हर एक इस विश्वास से मूक और बधिर होकर बैठा है कि कोई करिश्मा होगा और हम प्रकृति की सुंदरता का सदियों पुराना वैभवशाली अपूर्व रूप पुनः देखेंगे। मगर ये तभी संभव होगा जब हम तन-मन-जीवन से एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे और पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षण की कोशिश करेंगें। इस साल 2024 के पर्यावरण दिवस का प्रसंग है(Land restoration, desertification and drought resilience) जिसके लिए देश और महादेश एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं। समुद्री प्रदूषण, जनसंख्या की समस्या, ग्लोबल वार्मिंग, टिकाऊ विकास और वन्यजीव अपराध जैसे पर्यावरणीय मुद्दों के खिलाफ लोगों को जागरूक कर रहे हैं। पत्रिका 'भोर' भी अपने सभी सुधि पाठकों को विश्व पर्यावरण दिवस की बधाई देती है और आह्वान करती है कि आइये मिलकर चलते हैं। धरती है तो प्रकृति है, हवाएं हैं तो सांसे हैं और जल है तो जीवन है।

आइये 'शेयर योर ह्यूमैनिटी' के लिए हमने जितना लिया है हमारी प्रकृति से, हम अपने पर्यावरण को उससे ज्यादा देंगे। अपने घरों से शुरुआत करेंगे। हम प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे। बच्चे मिट्टियों से लिपटकर, माँ धरा की गोद में खेलेंगे। जी हाँ पेड़ों की संख्या बढ़ाइए पेड़ लगा कर, मगर जनसंख्या जैसी समस्या को बढ़ावा नहीं दीजिये। पर्यावरण धरोहर है जिसे हमें बचाकर रखना है, अपने बच्चों के लिए, उनके भविष्य के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए।

अपने जीवनकाल में कम से कम एक पेड़ जरूर लगाएं और अपने बच्चे की तरह उसकी देखभाल करें और आपके आस-पास जो पेड़-पौधे लगे हुए हैं उसकी देखभाल अपने बुजुर्ग होते माता-पिता की तरह करें। अगर आप ऐसा कुछ भी कर रहे हैं जिससे हमारे पर्यावरण को मजबूती मिल रही है और आप पर्यावरण प्रयोग नहीं, पर्यावरण संरक्षण में अपनी अहम भूमिका का निर्वहण कर रहे हैं, तो हमें जरूर लिखें। पर्यावरण की सुरक्षा हमारी नैतिक जिम्मेवारी है, ये न तो हम भूलें न, अपने आस-पास के लोगों को भूलने दें।

गणपति वंदन

हे गणपति, प्रथमेश्वर
सभी गणों के स्वामी,
पूजन करूं अर्चन करूं
कष्ट हरो हे अंतर्यामी।
हे बुद्धिनाथ, सद्बुद्धि दाता
शुभागमन सद्गुण है लाता,
पूजन करूं शरण गहूं
साथ आपका सन्मार्ग
दिखाता।
हे गौरीनंदन,असुर निकंदन
रूद्रप्रिय ओमकार,
पूजन करूं वंदन करूं
वर दो हे शुभकार।
हे वक्रतुंड, शुभकरण
सिद्धिविनायक कवीश,
पूजन करूं चंदन करुं
विश्वराजा जगदीश।
हे पीतांबर, एकदंता
चतुर्भुजी देवाधिदेव,
आप के प्रथम पूजन से
प्रसन्न होते महादेव।
हे विघ्नहरता, विघ्न विनाशक
मंगलकारक विघ्नों को हरते,
शुभगुणकानन, सर्वदेवात्मन
तेरा सुमिरन हमसब करते।
बप्पा कृपा का ना कोई जोड़
नहीं है कोई तोड़या,
गणपति बप्पा मोरया,
मंगल मूर्ति मोरया।

डॉ. श्वेता सिन्हा,
आयोवा अमेरिका

कवयित्री,मंच संचालक, ब्यूरो चीफ –अद्भुत मीडिया,
पेज – श्वेतो उवाच

श्री राम भजन

आओ चलें हम अवध को ,
दर्शन करें श्री राम का
पूजन, भजन, अर्चन करें,
स्वागत करें श्री राम का
कण कण में व्यापक है वही,
शिव श्याम है और हरि वही
किसी नाम से भी पुकार लो,
हर नाम है श्री राम का
हर क्लेश को पल में हरे,
जीवन को मंगलमय करे
हर सुख प्रदाता मोक्ष दाता,
नाम है श्री राम का
तज काम, क्रोध और मोह को,
ईर्ष्या अहम् और लोभ को
कर दे समर्पित स्वयं को ,
बन जा तू बंदा राम का
मिट जाएंगे अंधियार सब,
खुल जाएंगे सुख द्वार सब
कादम्बरी धर ध्यान,
आठों याम प्रभुश्री राम का

कादंबरी आदेश
अमेरिका

गीतकार , संगीतकार,
लेखिका एवं गायिका

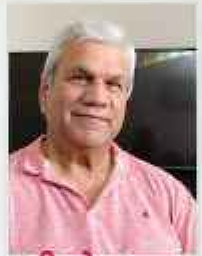

श्री नरेश नाज़
पटियाला – पंजाब,
भारत
रिटायर्ड सीबीआई ऑफिसर, प्रख्यात साहित्यकार तथा संस्थापक- अंतरराष्ट्रीय 'महिला काव्य मंच'

हमको बड़ा यकीं है

हमको बड़ा यकीं है, ज़मीं-आस्माँ मिलेंगे,
इक रोज़-पाकिस्ताँ और हिंदोस्ताँ मिलेंगे।

बाँटा फिरंगियों ने, जो देश था हमारा,
लेकिन दिलों का अपने कर पाए न बँटवारा।

देखेगी सारी दुनिया फिर दो जहाँ मिलेंगे,
इक रोज़ पाकिस्ताँ और हिंदोस्ताँ मिलेंगे ।

सूरत भी एक-सी है, सीरत भी एक-सी है,
करते हैं प्यार सबको फितरत जो एक-सी है।

अपनी मुहब्बतो के हरसू निशाँ मिलेंगे,
इक रोज़-पाकिस्ताँ और हिंदोस्ताँ मिलेंगे ।

जाँबाज़ सिपाही जो बरें - सगीर में हैं,
दिल में वतनपरस्ती, बिजली शरीर में है।

किसी मुल्क की सेना में ऐसे कहाँ मिलेंगे,
इक रोज़-पाकिस्ताँ और हिंदोस्ताँ मिलेंगे ।

इक हाथ में खड्ग है, दूजे में है गुलदस्ता,
दुनिया को दिखाते हैं हरदम अमन का रस्ता।

दुनिया में नहीं ऐसे कहीं नौजवाँ मिलेंगे,
इक रोज़-पाकिस्ताँ और हिंदोस्ताँ मिलेंगे ।

उपजाऊ ज़मीं-नदियाँ, पर्वत औ' ये समुन्दर,
मौसम कई तरह के, दौलत ज़मीं के अन्दर।

जो चाहे चला आए, ये मेहरबाँ मिलेंगे,
इक रोज़ पाकिस्ताँ और हिंदोस्ताँ मिलेंगे ।

डॉ. प्रतिभा जैन

सेवा निवृत्त प्रो. (संस्कृत), सुप्रसिद्ध साहित्यकार, नाटककार, साहित्य कला परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित मोहन राकेश नाटक प्रतियोगिता 2022_2023 में 'महाश्रमण चंद्रगुप्त मौर्य' को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित, साथ ही कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित।

वत्स !
खंडहर नहीं हूं मैं
अतीत भी नहीं
न काल के वक्ष
पर लिखी
इबारत....
हूं परतों में दबा
संचित खजाना
अनुभवों का
गिर-गिर कर उठती
उत्तल तरंग हूं
भवसागर की...।

सुत!
हूं दर्पण
जिसमें देख सकते हो तुम !
अपना आगत प्रतिबिंब.
मेरी धड़कन के साथ धड़कती
है दुआएं की रुनझुन घंटियां
ताल-वाद्य पर ध्वनित होती है
हर क्षण आशीष के स्वर ।

आत्मज !
तुम मुझसे अलग कहां ?
तुम चाहो तब भी विलग नहीं
विधाता ने बांधा है हमें
उस सूत्र से
जो डी.एन.ए
कहलाता है
है हमारा संवाहक
जन्म-जन्मांतर की पहचान
का

पुत्र!
गर्व करो पुरखों पर
तुम सुनहरी जिल्द हो
मेरी जिंदगी के पन्नों की
शोभा बनूंगी एक दिन
तुम्हारे पुस्तकालय की
जिसे पढ़ेंगे
पलट पलट कर
हमारे वंशधर.....

ग़ज़लें

ममता किरण वाजपेयी

मशहूर शायरा, कवयित्री
पेज – अक्षर आंगन

जाने कितने ही सवालों से घिरी है दुनिया
फिर भी परवाह नहीं करती कभी है दुनिया।

इसके तो पांव में लगता है कि चक्कर कोई
रात-दिन चलते हुए भी न थकी है दुनिया।

धर्म तो प्रेम की ही बात सिखाता है मगर
धर्म के नाम पे लड़ने को तुली है दुनिया।

ज़लज़ले ज़िंदगी में आते हैं दुनिया की भी
अपनी सीरत से कभी भी न बुझी है दुनिया।

ये तो चलती ही सदा रहती है अपनी धुन में
कब मेरे और तेरे दुःख में रुकी है दुनिया।

आप क्या जानें हरिक राह थी दुर्गम उसकी
जाने कितनी ही दफ़ा उसकी हिली है दुनिया।

गोला-बारूद लिए बैठे हैं हाकिम अब तो
आज ये कैसे मुहाने पे खड़ी है दुनिया।

फूल,तितली,नदी,चिड़िया, घटा,झरने,पर्वत
खूब क़ुदरत के नज़ारों से सजी है दुनिया।

•

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

सुप्रसिद्ध कवि,
साहित्यकार एवं
संरक्षक – 'भोर'

शहर से गांव लौट आया है
कर्ज़ मिट्टी का यूं चुकाया है।

फिर से लहरों ने सर उठाया है
फिर समुंदर में ज्वार आया है।

फल के आने पे मैं रहूं ना रहूं
पेड़ मैंने मगर लगाया है ।

ये खजाना कभी चुका ही नहीं
प्यार मैंने बहुत लुटाया है।

दर्द क्या मुझको आजमाएगा
दर्द को मैंने आजमाया है।

रात के दिल में क्या उदासी है
चांद की कब समझ में आया है ।

आज मंजिल पे वो जो पहुंचा है
रास्ता उसने खुद बनाया है। •

मधु मधुमन
पटियाला, पंजाब

मशहूर शायरा, कवयित्री
यूटयूब चैनल –'मधुमन की अंजुमन '

दूर तक बस धूप थी कोई घना साया न था
ज़िंदगी ऐसी भी होगी, यह कभी सोचा न था।

ग़ैर तो थे ग़ैर ,उनसे क्या शिकायत, क्या गिला
मेरा अपना ख़ुद का साया ही मेरा अपना न था।

वक़्त-ए-मुश्किल लापता थे जो क़रीबी थे मेरे
साथ देने आए वो जिनसे कोई रिश्ता न था ।

अब नहीं है प्यास थे तो दरिया मयस्सर है हमें
और जब थी प्यास तो हासिल हमें क़तरा न था।

कल अहम किरदार थे जो दास्ताने-ज़ीस्त के
आज उनके नाम तक का भी कहीं चर्चा न था।

काटनी है उम्र सारी अब हमें उनके बग़ैर
एक लम्हा भी कभी जिनके बिना कटता न था।

कुछ तो हम ही ज़िंदगी तुझसे निभा पाए नहीं
और कुछ तेरा रवैया भी बहुत अच्छा न था।

कर दिया ख़ुद को हवाओं के करम पर आख़िरश
और अब इसके सिवा 'मधुमन 'कोई चारा न था।

•

ओमप्रकाश यती
सिडनी,ऑस्ट्रेलिया

दुनिया जगर-मगर है कि मज़दूर दिवस है।
चर्चा इधर-उधर है कि मज़दूर दिवस है।

मालिक तो फ़ायदे की क़वायद में लगे हैं
उन पर नहीं असर है कि मज़दूर दिवस है।

ऐलान तो हुआ था कि घर इनको मिलेंगे
अब भी अगर-मगर है कि मज़दूर दिवस है।

थोड़े से साधनों से ही भरने हैं कई पेट
इक टोकरी है, सर है कि मज़दूर दिवस है।

हाथों में फावड़े हैं 'यती' रोज़ के जैसे
इनको कहाँ ख़बर है कि मज़दूर दिवस है।

•

डॉ. कपिल कुमार
बेल्जियम

मशहूर शायर, कवि,
उद्घोषक

उफ़! भगवान बताकर, पत्थर बेच दिया
मन्दिर- मस्जिद में, रब का घर बेच दिया।

दीन - धरम के झगड़ों के हाथों तुमने
हर अवतार औ ' हर पैग़म्बर बेच दिया।

मुल्ला ने ता 'वीज़ में रखकर बेचा रब
पण्डित ने मन्तर में ईश्वर बेच दिया।

ऐसे - ऐसे ' नटवर लाल ' यहाँ पर हैं
ताजमहल दिखला कर खंडहर बेच दिया।

आज़ादी के बाद , सियासत वालों ने
अम्नो- चैन का हर इक मंजर बेच दिया।

•

मंत्री जी आने वाले हैं।

श्री विनोद पांडेय
गाजियाबाद
प्रतिष्ठित हास्य व्यंगकार, संपादक, कवि तथा सॉफ्टवेयर इंजीनियर

सड़के चमचम चमक रही हैं
गलियाँ सारी दमक रही हैं
गड्ढे-वड्ढे छूमंतर है
ग़ायब मक्खी और मच्छर है
टेढ़े खम्भे हुए बराबर
बिछा है पगडंडी पर पत्थर
ठीक हो गए सीवर सारे
पानी फ़ेक रहें फ़व्वारे
लाइट वाइट एकदम टाइट
दिखा रिपोर्टर लेते बाइट
पार्षद जी नर्वस है थोड़े
जल्दी गरियाने वाले हैं
मंत्री जी आने वाले हैं ।।

पुल पर फ़ीता बँधा हुआ है
आम आदमी सधा हुआ है
हुए लापता सब भिखमंगे
और क़ैद में भूखे नंगे
चारों ओर पुलिस का पहरा
हुआ प्रशासन गूँगा बहरा
तम्बू में झंडा है लटका
सबके गर्दन में है पटका
गला एंकर खोल रहा है
माइक घो-घो बोल रहा है
जनता माथा पकड़े बैठी
नेता चिल्लाने वाले हैं।
मंत्री जी आने वाले हैं ।।

पूरा प्रांगण भरा हुआ है
जिसका है वो डरा हुआ है
गए जुटाए जो थे ख़ाली
लुच्चे,टुच्चे और मवाली
मंदिर मस्जिद पेंट हो गया
प्याऊँ परमानेंट हो गया
कुछ शरीफ़ भी आँख गड़ाए
उनके हिस्से शर्बत आए
मंच प्लेट से भरा हुआ है
लिम्का बोतल धरा हुआ है
बजी सायरन भगे दरोगा
पदोन्नति पाने वाले हैं
मंत्री जी आने वाले हैं ।।

मंत्री आए मंत्री आए
माला पहने और पहनाए
भाषण दे ताली बजवाए
कुछ के संग फ़ोटो खिचवाए
पार्टी ज़िंदाबाद हो गयी
जनता सब आबाद हो गयी
मंत्री निकले,लेकर हल्ला
सूना-सूना हुआ मोहल्ला
पाँव विधायक पटक रहे हैं
बाक़ी शर्बत गटक रहे है
ठेंगा दिखा गए मंत्री जी
चमचे बहलाने वाले है ।।
मंत्री जी आने वाले हैं।

कुछ दिन बीतें, वही कहानी
सीवर के ऊपर था पानी
टूटी सड़कें ,खड्डे गड्ढे
पाँव तोड़ते युवक -बुड्ढे
बिजली रानी दिन में आतीं
नल ख़ाली बूँदे टपकाती
कोई नहीं पूछता है अब
जाने कहाँ पार्षद ग़ायब
मौन विधायक जी हैं पूरे
सबके सपने रहे अधूरे
जिनको आस टिकट की है वो
कल से मंडराने वाले हैं।
मंत्री जी आने वाले

●

आर. पी. घायल
पटना बिहार, भारत
प्रतिष्ठित शायर

अंधेरी रात में दीये जलाना भी इबादत है
किसी की याद में आँसू बहाना भी इबादत है।

अभी के हाल में दुनिया बहुत बेहाल है लेकिन
किसी को देखते ही मुस्कुराना भी इबादत है।

कभी भी फूल अरमां के खिलें जब दिल की बस्ती में
उन्हीं फूलों की ख़ुशबू में नहाना भी इबादत है।

किसी की राह तकते ज़िन्दगी जिसने गुज़ारी है
उसी को है पता पलकें बिछाना भी इबादत है।

बड़े-बूढ़े जो अक्सर घर का रस्ता भूल जाते हैं
सहारा देकर उनको घर पहुँचाना भी इबादत है।

बहुत से लोग हैं जिनको नहीं मालूम है 'घायल'
किसी के ज़ख़्मों पर मरहम लगाना भी इबादत है।

●

प्रवासी मजदूर

उर्मील आज़ाद
नॉर्विच, यू.के.

दो वक्त की रोटी की भूख ने,
हमें खानाबदोश बना दिया।
न अपनी मिट्टी के रह सके,
न ही अपने शहर में बस सके।
मरूस्थल सी तपती यादें है,
सूना–काल सा ये जीवन है।
मजबूर करता है वापस लौटने को,
निकल पड़ते है फिर भी धरोहर लिये।
अपनी ही हिम्मत अपना ही जज़्बा,
वतन की कुछ यादें कुछ फ़रियादें।
दो वक्त की रोटी जो,
कसूरवार है जीवन मरण की,
मुझ जैसे कितने ही लौटने को,
व्याकुल हैं, भूखे हैं, बेघर हैं,
न नाम न गाम न पहचान,
बस,
हम प्रवासी मजदूर हैं।

●

अनिता सोनी
देहरादून, भारत

झूठ ही बोल दो मन बहल जायेगा।
फ़लशफा ज़िन्दगी का बदल जायेगा।

रोक मत राह मेरी खुदा के लिए।
मिन्नतों पर दिवाना पिघल जायेगा।

संदली रूप तेरा कयामत हुई।
देख मत गौर से तीर चल जाएगा।

आजकल आप छाये हुये सोच में।
अब सदा के लिए प्यार पल जायेगा।

ये इशारा यहाँ आप जाने अगर।
आज इजहार-ए-इश्क फल जायेगा।

दौर जैसा रहा संग तुम थे सदा।
देखना आज भी दर्द टल जाएगा।

प्रेम ऐसी दवा है सभी के लिए।
हो गया तो अँधेरा निगल जाएगा।

शुष्क बेजान से भाव मन से हटे।
पीर पर्वत वहीं पर पिघल जाएगा।

रोशनी है दुआओं भरी साथ में।
भाग्य से तंज का ताप ढल जाएगा

●

मां अब कम बोलती है

वो मां जो मुझे देख गर्म फर्श की ओर बढ़ता,भागती थी बदहवाश मुझे पकड़ने को ,
फंस जाता था अंगूठा पैर का उसकी साड़ी में ,फिर भी वो खींच लेती मुझे अपनी बाहों में,
भर लेती आंचल में ।
छत की मुंडेर पर पतंग उड़ाता देख..
चिल्लाती थी पूरी ताकत से ,
किनारे मत जाना....।
वो मां अब कम बोलती है...हसरत से मुझको निहारती उसकी आंखें अब,मुझे कम तौलती हैं....हां मां अब कम बोलती है...।

●

डॉ. सुनीता शरण,
म. प्र. भारत

कविताएं

ग़रीबी का बचपन

खोया खोया सा रहता है
गुमनाम सा फिरा करता है
गली कूचे में बेहिसाब मिलता है
ये ग़रीबी का बचपन है जनाब
जो अपना नसीब सड़कों पे खोजता है।

छोटे छोटे से कांधों पे लटकता
नन्हे पाँव के छालों में झलकता
बेजान आँखों से झूठी आस ढूँढता
ये ग़रीबी का बचपन है जनाब
जो अपना प्रारब्ध सपनों में खोजता है।

परियों की कहानी से दूर रहता
दो वक़्त की रोज़ी रोटी कमाता
बेबसी की पोटली लिए मज़दूरी करता
ये ग़रीबी का बचपन है जनाब
जो अपनी तक़दीर हथेलियों में खोजता है।

किताबें खिलोने घूमना फिरना
इनसे मानो जुदा सा रहता है
धूल मिट्टी में मासूमियत बेचता
ये ग़रीबी का बचपन है जनाब
जो अपना भाग्य पसीने में खोजता है।

कहने वाला कहता जाता है
बनाने वाला बनाता जाता है
नियम क़ानून तोड़ शोषण फिर भी करता
ये ग़रीबी का बचपन है जनाब
जो अपना जीवन ख़्वाबों में खोजता है।

•

मीनू लोढ़ा
शिकागो -अमेरिका

मुझे अच्छा लगता है

दोस्तों के साथ उठना बैठना गप्पें लड़ाना
सुबह की सैर पर निकलना ठहाके लगाना
पार्क में बैठ कर पुरानी बातों को याद करना
बच्चों को खेलते देख कर बचपन में खो जाना
मुझे अच्छा लगता है
मुश्किल वक़्त में किसी के काम आना
बच्चों से मिल कर बच्चों सा बन जाना
दूसरों को खुश देख कर खुश हो जाना
गम में किसी के शामिल हो आना
मुझे अच्छा लगता है
गांव की गलियों में यूं ही घूम आना
मंदिर में जाकर जोर से घंटी बजाना
बटवृक्ष के नीचे बैठकर यादों में खो जाना
बुजुर्गों को रिश्ता लगाकर बुलाना
मुझे अच्छा लगता है
अपनों संग मिलकर खुशी का जश्न मनाना
पुराना मधुर सा कोई गीत गुनगुनाना
दुनियाँ में लगा रहेगा यूं ही सबका आना जाना
मन ही मन यह सोचकर मुस्कुराना
मुझे अच्छा लगता है
गांव के खेत में काम करना हल चलाना
खेतों में दूर दूर तक घूमने निकल जाना
रास्ते में मिलने वालों से बतियाना
अपने घर के आंगन में जमीन पर बैठ जाना
मुझे अच्छा लगता है

•

रविन्द्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर
हि. प्र. – भारत

छोटी गट्ठर

छोटी गट्ठर यही नजराना है,
तराना है,
बंदगी है,
समर्पण है,
मेहनत और उत्साह है,
सबका विश्वास है।
छोटी सी गट्ठर ही,
सबमें सबका दिखता अहसास है।
बुरे लोग बहुत कम है,
मजबूत दावेदार नहीं है,
बस फिसलन भरी सड़क पर,
नज़र आते हैं,
कुछ ख़ास नहीं कर पाते हैं।
उम्मीदों पर खरा उतरना,
नहीं जानते हैं,
मज़हब को ही,
सफ़र का रहस्य बताकर,
लोगों को भड़काते हैं।
ताक़त देती है हौंसले बुलंद हो जब,
नहीं इसके आगे ठहरता है,
पाखंडी मज़हब।
प्रेम जैसी साजबाज रखना चाहिए,
दुनिया को हराकर,
सबमें सुखद अहसास,
भरने की कोशिश कर,
सबमें अनूठा प्रभावी और सर्वगुण संपन्न,
हैसियत से,
खुद को साकार करने में,
आगे रहना चाहिए।
छोटी गट्ठर को,
सबसे खूबसूरत उपहार मानकर,
इन्सानियत को,
बरकरार रखें लोग यहां।
ज़िन्दगी की तमाम हसरतें पूरी होगी ज़रूर,
सब पर ऐतबार रखेंगे जब लोग यहां।

•

डॉ. अशोक शर्मा
पटना-बिहार, भारत

चोट लगने पे मुस्कुराते हैं
हाय कैसी है ये अदा जाने ,

छाछ क्यूं फूंक फूंक पीता है,
राज़ ये दूध का जला जाने,

दिल के टुकड़े जिन्हे लुभाते हों
उनसे उम्मीद क्या.. वफ़ा जानें ,

कभी अंजुम तो कभी माहताब तकते हैं
कहाँ-कहाँ ये दिल लगा जाने,

जिधर भी देखते हैं बस तेरा तसव्वुर है..
कमबख़्त दिल को क्या हुआ जाने..।

•

प्रतिभा मिश्रा
"ख़्वाहिश "
वाराणसी -भारत

कविताएं

सेहत का खजाना- 'योग'

ध्यान करो, कुछ योग करो।
काया को तुम निरोग करो।
प्रतिदिन प्रातः में उठकर
योगासन सब लोग करो।।

योग न सिर्फ एक व्यायाम है।
विविध आसन प्राणायाम है।
यह तो तन, मन, आत्मा को
जोड़ने वाला एक आयाम है।।

यह भारत की पहचान है।
योग विशुद्ध विज्ञान है।
सदियों की प्राचीन परंपरा,
ऋषियों का अनुसंधान है।।

ये अन्य देशों ने भी माना है।
कि योग सेहत का खजाना है।
विश्व योग दिवस पर यह बात,
आज जन-जन तक पहुँचाना है।।

जीवन में योग को अपनाओ।
शरीर स्वस्थ, सुखमय बनाओ।
इसकी अहमियत समझाकर
औरों को, अपना फर्ज निभाओ।।

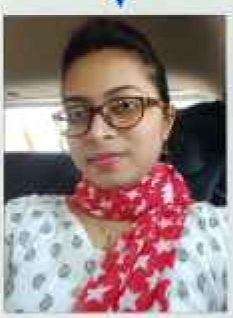

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात - भारत

गौरैया से लड़ाई

गाँव में
बूढ़े माँ-बाप को पसंद नहीं
गौरैया घर के छज्जे पर
या फोटो-फ्रेम के पीछे
कहीं अपना घोंसला बनाएँ।

वे आती हैं घास-फूस लेकर
घोंसला बनाने की कोशिश में
खलार डालती हैं बहुत
गौरैया से एक घोंसला नहीं बन पाता
पर वह कई घोंसलों का साजो-समान
बिखेर देती है फर्श पर।

बूढ़े माँ-बाप
स्वयं को ही सँभालते हैं बड़ी मुश्किल से
कैसे सहेजें वे गौरैया का सामान
गौरैया से मेरी लड़ाई जारी है
उन्हें रोक रहा हूँ
छज्जे या फोटो-फ्रेम के पीछे आने से
धर्म-संकट में हूँ
शहर में अब कहाँ दिखती हैं अब गौरैया
चोंच में घास का तिनका दबाए
चोंच में घास का तिनका दबाए
तू कहाँ-कहाँ उड़ेगी री गौरैया
तूने जो ठीया ढूँढ़ रखा था
वहाँ अब मेरा पहरा है।

आ... आ तो सही
तुझे बैठने ही नहीं दूँगा छज्जे पर
कड़ा पहरा है
तू हार मुझसे
जा कहीं और किसी घर में
बना घोंसला
जहाँ रोज होती है बुहारी
जहाँ सुबह-सुबह
घर की सफाई करने वाली
सक्षम औरतें हैं।

रत्न चंद 'रत्नेश'
एफिनिटी ग्रीन्स, एयरपोर्ट रोड, जीरकपुर, पंजाब - भारत

राजेश पाठक
झारखंड सरकार में जिला सांख्यिकी पदाधिकारी पद पर गोड्डा जिला में कार्यरत।

कलम नहीं जयगान करेगी।

मुर्दों में भी जान भरेगी
कलम नहीं जयगान करेगी!

जो बन बैठे रक्त पिपासु
पोछे ना जो बहते आँसू
ऐसे असुरों की काया के
रुधिर, रक्त का पान करेगी
कलम नहीं जयगान करेगी!

लोकतंत्र की यही कहानी
इसमें ना कोई राजा-रानी
चुप,छुप कोई बन जाए तो
उसकी भी पहचान करेगी
कलम नहीं जयगान करेगी!

दूजे की भर देती थाली
अपना घर हो भले ही खाली
नहीं पसारे हाथ कभी वो
अपने पर अभिमान करेगी
कलम नहीं जयगान करेगी!

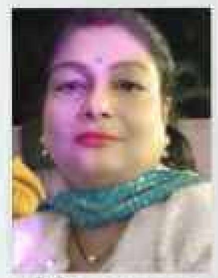

मोनिका प्रसाद
रांची- झारखंड, भारत

पेड़

ईश्वर ने दिया है सारा,प्राकृतिक वरदान।
पर्वत जंगल नदियां घाटी, नीला गगन वितान ।।

हरे भरे पेड़ों से धरती, करती है श्रृंगार।
पेड़ों से होते संरक्षित , भू जल के भंडार।।

पेड़ों पर ही तो निर्भर है, मानव जीवन सार।
पेड़ों से ही तो मिलती हैं, नदियों को भी धार।।
पेड़ों से निर्धारित होती ,वर्षा जल औ वायु।
पेड़ों से मानव को मिलती ,प्राण और आयु।।

जंगल ही पर्वत को बांधे ,बनाते जल प्रपात ।
पत्तों से जल खींचे बादल , करते हैं बरसात।।
मिट्टी के क्षय को भी रोके ,पेड़ों के जड़ मूल।
पंछी को आश्रय देते हैं ,पंथी को फल और फूल।।

पेड़ ही मानव सभ्यता के ,हैं जीवन आधार।
पेड़ ही तो पर्यावरण का ,करे संतुलित भार।।
पेड़ ही हमको कुदरत का , हैं अनुपम वरदान।
पेड़ लगा कर चलें बचाएं, जीव जगत की जान ।

मृत्यु चिंतन

शनै शनै मैं,
मृत्यु की ओर,
बढ़ रहा हूं,
मृत्यु चिंतन कर रहा हूं!

माया में लिपटा हूं,
बच्चों की चिंता करता हूं,
अब क्या होगा सोचता हूं,
मैंने सचमुच सब बेचा हूं!

या अगले ने मेरा,
ऐसा हाल कर दिया,
यही सोचता रहता हूं,
मृत्यु चिंतन करता हूं!

जाने का समय करीब है,
यह भी मैं जानता हूं,
शनै शनै उस ओर बढ़ता हूं,
मृत्यु चिंतन करता हूं!

समय आने पर जाना है,
समय पास है जानता हूं,
फ़िर भी नहीं मानता हूं,
मृत्यु चिंतन करता हूं!!

सतीश "बब्बा"
सतीश चन्द्र मिश्र
कोबरा, चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश,भारत

कविताएं

मैं किन्नर हूं

दिशा हीन और दशा दीन थी
दोष न था मेरा, न था जननी का ।
विधाता का विधान था,
समाज का यह विचित्र प्रावधान था ।
दंडित, निरपराध को किया,
घर से मुझे निष्कासित किया ।
मस्तिष्क में न थी कोई विकृति,
न मिली फिर भी किसी से स्वीकृति ।
पहनती साड़ी तो- थी कहलाती,
अभद्रता सहकर भी मन सबका बहलाती ।
मेरी दुआएं-आशीर्वाद फलीभूत हों-
नवजात के लिए, लेते मेरी बधाइयां
मिलती थीं बख्शीश में रुपयों से भरी तश्तरियाँ ।
उदर भरण के लिए,
कफन निर्लज्जता का ओढ़ लिया ,
स्वयं पर हँस स्वयं ही बजाती तालियाँ ।
लुप्त हो गई थीं सारी खुद्दारियां ,
भाव आत्मसम्मान का तिरोहित हो गया,
समझौते का पौधा रोपित मन में कर लिया ।
शनै शनै
हिम्मत आई जननी में ,
किया संघर्ष जन- जन से ।
कतराती थी खुलेआम जो गले लगाने से,
हाथ थाम तत्पर हुई आगे बढ़ाने में ।
थी या था बनाकर मुझे पढ़ाया।
पलकों पर बैठाया, आशीर्वाद से शीश सहलाया ।
आत्मबल मनोबल मुझ में आ गया,
श्रापित जीवन से छुटकारा पा लिया ।
दिव्यांगों की श्रेणी में नहीं हूँ मैं,
ईश्वर का विशेष वरदान किन्नर हूँ मैं ।
इसमें न तनिक अब लाज मुझे ,
आद्योपांत मेरे समस्त विषाद बुझे ।
न छद्म रूप अब धरना है ,
कीचड़ में कमल सम खिलना है ।
हित में किन्नरों के –
संग, लक्ष्मी त्रिपाठी और गौरी सावंत के
दूषित मानसिकता से भिड़ना है ।

चित्रा गुप्ता,
सिंगापुर

लेखिका, कवयित्री, विदेश महासचिव मकाम

उनको प्रणाम

उनको प्रणाम जो बन उल्का टूटे कायर अंग्रेजों पर
उनको प्रणाम जो लेट गये भालों पर तीखे नेजों पर
उनको प्रणाम जिनके डर से थर-थर-थर कांप उठा लंदन
उनको प्रणाम जिनके भय से कर उठे फिरंगी थे क्रंदन
उनको प्रणाम जो गहन तिमिर में जले स्वयं बनकर मशाल
उनको प्रणाम जिनके गुस्से से सिहर उठा था महाकाल
हाथों में शीश लिये अपने,वे चढे वतन के चरणों पर
दुश्मन पर ऐसे झपटे वे ज्यों सिंह झपटता हिरणों पर
उनको प्रणाम अर्पित करते तन-मन रोमांचित होता है
जडता कपूर सी उड जाती स्फुरण बाहु में होता है
अनगिनत दृश्य,अनगिनत चित्र,अनगिनत कथायें जाग रहीं
वह देखो वीरों से डरकर अंग्रेजी फौजें भाग रहीं
बैरकपुर से मेरठ तक मंगल पांडे हुंकार उठे
गुस्से से लाल रूद्र मानो तप बिसरा कर जाग उठे
जागे नाना तात्या जागे जागी भारत की तरूणाई
जागा है बूढा शहंशाह , जागी रानी लक्ष्मीबाई
जागा है अवध ,रूहेलखंड दिल्ली भी जागी है भाई
थके -आहत भारत में फिर से नई ऊर्जा आई-सुप्त -
बेगम हज़रत के गुस्से को सह सकी नहीं रेज़ीडेंसी
फोर्ट विलियम में छटपटा रहे वह देखो हिज़ एक्सीलेंसी
वो भाग रहा है मेटकाफ बुरका ओढे औरत बनकर
पूरा भारत है जाग उठा ,वह खडा हो गया है तनकर
है उधर सिंधिया भाग रहा सह सका नहीं रानी का वार
जा छिपा आगरे में कायर लेकर निज -हिय पर गहन भार
भूखा -प्यासा लारेंस मरा , मर गया केज़ गोली खाकर
मर गये बसानो ,मैक्लीन मौलवी के डर से घबराकर
नरपत नाहर बनकर टूटा उड गये होप के तुच्छ प्राण
ले कुमुक पहुंच पाता कोलिन ज़नरल पेनी का हुआ काम
सिब्बाल्ड ,ऐलेक्ज़ेंडर भागे, लो भाग गया है मैकेंज़ी
रूहेलखंड की धरती से मिट गया राज सब अंगरेजी
आरा में बाबू कुंअर सिंह ललकार रहे ,हुंकार रहे
वो उधर रिवाडी में तुलाराम गिन -गिन के फिरंगी मार रहे
दिल्ली में लडते बख्त खान ,बैसवारा में बेनीमाधो
कह रहे कानपुर में नाना अंग्रेजों अब बिस्तर बांधो
हर तरफ जल रही क्रांति ज्वाल,इस प्रखर ज्वाल को शत प्रणाम
इन लपटों को निज़ प्राणों से प्रज्जवलित कर गये शत अनाम
इस महायुद्ध के साक्षी उस बेबस दरवाजे को प्रणाम
बर्बरता नील की झेल गये उन वृक्षों गांवों को प्रणाम
इन प्रणाम के बोलों में पीढी कृतज्ञता बोल रही
जो रक्त से तुमने सींची थी आज़ाद सभ्यता बोल रही
लहराता तिरंगा कहता है, ना भूले हैं, ना भूलेंगे
तव प्रेरणा से हम प्रगति शिखर शीघ्रातिशीघ्र ही छू लेंगे
इस ध्वज को जिन्होने लहराया उनकी स्मृति को शत प्रणाम
भावुक प्रणाम,शत शत प्रणाम,शत शत प्रणाम------

अध्यक्ष :पंडित रामप्रसाद बिस्मिल फाउंडेशन पांच कविता संग्रह ,एक व्यंग्य संग्रह और दो उपन्यास प्रकाशित .

निवास – गाज़ियाबाद ,भारत

अरविंद पथिक

डॉ. जय महलवाल
(अनजान)

ई ०१ ,
प्रोफेसर कॉलोनी
राजकीय
महाविद्यालय
बिलासपुर
हिमाचल प्रदेश

हां, मैं डरता हूं

बिन मतलब के रिश्ते ढोने से,
किसी अपने के खोने जाने से,
किसी के दिल को चोट पहुंचाने से,
हां मैं डरता हूं ।
किसी को जल्दबाजी में अपना बनाने से,
अपना बना के किसी को छोड़ देने से,
किसी के अरमानों के साथ खेलने से,
हां मैं डरता हूं।
अपना बनाके धोखा देने वालों से,
अपना उल्लू सीधा करने वालों से,
हर जगह अपनी ही बात मनवाने वालों से,
हां मैं डरता हूं।
दूसरों का घर बिगाड़ने वालों से,
बातों से दूसरों को बहकाने वालों से,
जले पर नमक छिड़कने वालों से,
हां
मैं डरता हूं।

जैविक पेस मेकर (विज्ञान कथा)

डॉ. रमेश पाठक

पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राणी विज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना, भारत

विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में कविता, कहानी, विज्ञान कथा तथा विभिन्न समाजिक एवं विज्ञान विषयों पर आलेख प्रकाशित। विज्ञान नाटक वेव एलियन्स को प्रसार भारती पुरस्कार। साहित्य सम्मेलन पटना द्वारा राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह सम्मान।

समुद्री जीव अनुसंधान केन्द्र में डा. वेद का लैब।लैब बहुत ही व्यवस्थित है। छोटे- बड़े टैंक और एक्वेरियम में समुद्री जीव शोभयमान हो रहे हैं। रंग-बिरंगी मछलियाँ उसमें चार चाँद लगा रही हैं। आधुनिक और जटिल उपकरण भी यथा स्थान रखे हुए हैं। डा. पाठक अपने लैब में माइक्रोस्कोप में नजर गड़ाये हुए हैं। किसी महत्वपूर्ण चीज को देख रहे हैं। कुछ देर माइक्रोस्कोप देखने के पष्चात् वे माइक्रोस्कोप से नजर हटाते हैं और कुछ सोचते हुए अपनी कुर्सी पर आराम की मुद्रा में पसर जाते हैं।अब वे छोटे -बड़े टैंकों में रखे समुद्री जीवों को निहारने लगते हैं। वे देखते हैं ऑक्टोपस की अठखेलियों को तब उन्हें याद आता है 2010 का फूटबॉल का वह विष्वकप जिसमें महान ऑक्टोपस पॉल ने बिल्कुल सही भविष्यवाणी किया था और स्पेन की जीत हुई थी। ऑक्टोपस से नजर हटी तो अन्य जीवो पर से फिसलती हुई इलेक्ट्रिक रे यानि टॉरपीडो पर आ कर ठहर गई और बहुत देर तक वे उसे देखते रहे। वे मानों उसमें खो गए थे तभी डा. अनुराधा का प्रवेष होता है। वे डा. पाठक को इस तरह टॉरपीडो में खोए हुए देख कर चुप रह जाती हैं। थोड़ी देर चुप रहने के बाद वे अपना धैर्य खो देती हैं और डा. पाठक को संवोधित करती हैं-

सर---।

- हाँ । (डा. पाठक अचकचा कर जबाब देते हैं।)

- सर आप कहाँ खोए हुए थे। आप एकटक टॉरपीडो के देखे जा रहे थे।

- हाँ। मैं उसे ही देख रहा था ।

- क्या देख रहे थे सर। लैब में प्रवेष करते हुए डा. अनुपमा ने आष्चर्य व्यक्त किया ।

डा. पाठक ने फिर कहा - टॉरपीडो को।पता नहीं मुझे ऐसा लगा कि टॉरपीडो में कुछ खास है।

लैब में काम करने के बाद डा. पाठक घर आ गए। रात में जब वे सोने के लिए गए तो टॉरपीडो फिर उन्हें याद आ गया। वे सोचने लगे कि आखिर क्यों वे उसे देखने में इतने खो गए थे।क्या उनका मन उसके बारे में कुछ खास सोचना चाह रहा था। लेकिन मन क्या खास सोचना चाहता था! टॉरपीडो एक समुद्री मछली है। हाँ ,उसमें अन्य मछलियों से अलग विद्युत अंग हैं , उसकी आँखों के अगल-बगल जिनमें विजली बनाने की क्षमता है। उस विद्युत के झटके का उपयोग वह दूसरे जीवों से अपनी सुरक्षा के लिए करती है। इतना सब सोचते- सोचते वे सो गए पर मन नहीं सोया और रात में संभवतः उन्हें सपने भी कुछ इसी तरह के आये।सुबह उठ कर वे तैयार होने लगे तो मन खोया- खोया लग रहा था

पर क्यों वे समझ नहीं पा रहे थे। वे तैयार हो कर अनुसंधान केन्द्र के लिए चल पड़े। डा. पाठक जब अपने लैब में पहुँचे तो पुनः उन्हें टॉरपीडो दिख गया और वे उसके पास चले गए। कुछ देर उसे निहारते रहे और फिर अपने काम में लग गए। काम भी चलता रहा और साथ - साथ टॉरपीडो के संवध में चिंतन भी। आखिरकार उन्होंने माइक्रोस्कोप को बंद किया और टॉरपीडो के पास चले गए।उन्हें ऐसा लग रहा था कि टॉरपीडो में कुछ खास तो है जो उन्हें बार- बार आकर्षित कर रहा था। उन्होंने एक छोटे से टॉरपीडो को निकाला और अपने वर्किंग टेबल पर ले आए। वे उसे उलट- पलट कर देख रहे थे कि उनकी नजर उसके इलेक्ट्रिक अंग पर ठहर गई। अचानक उन्हें लगा कि उनके मन में झनझनाहट हो गई। एक बात उनके मन में सनाक से प्रवेश कर गई कि क्या इसका इलेक्ट्रिक अंग मात्र दूसरे जीवों को डराने के लिए है या और भी कुछ। देह में विद्युत तो बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करती है। वह सूचनाओं को एक जगह से दूसरे जगह ले जाने का काम करती है। संचार और नियन्त्रण का काम तो शरीर में वही करती है, पर वह तो कोषिका स्तर पर ही हो जाता है फिर यह इलेक्ट्रिक अंग किसलिए! कुछ तो बात होगी। क्या है इसका रहस्य। इस इलेक्ट्रिक अंग का कोई और उपयोग भी हो सकता है क्या!हो सकता है, पर क्या! डा. पाठक का मन लगातार इस विषय पर सोचने पर विवश हो गया था।

डा. पाठक को कहीं खोए हुए देख कर डा. अनुपमा ने पूछा- क्या बात है सर, आप टॉरपीडो को जब भी देखते हैं तो कहीं खो जाते है?

हाँ। मुझे लगता है कि इसके इलेक्ट्रिक अंग का कुछ दूसरा उपयोग भी हो सकता है। डा. पाठक ने कहा।

- दूसरा उपयोग?

- हाँ। मानव कल्याण के लिए इसके संवंध में कुछ सोचना होगा।

डा. पाठक को यह प्रश्न परेशान कर रहा था कि टॉरपीडो के इलेक्ट्रिक अंग का और क्या उपयोग हो सकता है। उन्होंने तय किया कि पहले उस जीन को खोजा जाए जो इलेक्ट्रिक अंग की कोशीकाओं को विजली बनाने के लिए तैयार करता हैं। उन्होंने टॉरपीडो के भ्रूणीय विकास का अध्ययन करना शुरू किया और उसमें वे जीन की भूमिका का भी अध्ययन करने लगे। उन्होंने यह बात अपनी टीम को भी बतलाई। अब उनकी पूरी टीम इस अनुसंधान मे लग गई और आखिरकार उन्होंने उस जीन का पता लगा लिया जो विद्युत अंग की कोषिकाओं द्वारा विद्युत बनाने के लिए उत्तरदायी था ।

-सर क्या इलेक्ट्रिक अंग हमेशा विद्युत उत्पन्न करते रहते है।? डा. अनुराधा ने पूछा।

- नहीं। आवश्यकता पड़ने पर।

- मतलब?

- जब उनके पास कोई दूसरा जीव आता है तब।

- तो फिर इनको नियन्त्रित कौन करता है।

- मस्तिष्क।

- तो क्या मस्तिष्क भी इन्हें विद्युत के द्वारा ही नियन्त्रित करता है?

- नहीं । रसायन के द्वारा।

- यह विद्युत और रसायन के बीच का संवाद तो अद्भुत् है सर।

- आप ठीक कह रही हैं। यह विद्युत और रसायन के बीच का संवाद जीवों में ही पाया जाता है। यह प्रकृति का जीव जगत को अनोखी देन है ।

डा.अनुराधा इस संवाद के बाद चली गईं पर डा. पाठक का मन अपने आप से संवाद करने में व्यस्त हो गया। वे प्रकृति में विचरने लगे। उनका मन सब कुछ घटते हुए देखने लगा। उनके मन ने विद्युत और रसायन का मानवीकरण कर लिया । वे देखने लगे कि कैसे रसायन विद्युत को सूचना दे रहा है और विद्युत रसायन को और दोनो मिल कर जीवन का संचालन कर रहे हैं।उनके मुँह से अचानक ' अद्भुत' निकल गया। तभी डा.अनुपमा आती हैं।

-क्या अद्भुत सर?

-संवाद।

-किसके बीच।

- रसायन और विद्युत के बीच।

- क्या! यह आपने कैसे सुन लिया सर?

जैविक पेस मेकर (विज्ञान कथा)

डॉ. अनुराधा, जीव जगत तो निरंतर आपस में संवाद करता रहता है।

- हाँ सर, हमलोग तो आपस में संवाद कर ही रहे हैं।

- नहीं। ऐसे नहीं। बिना आवाज के।

इस बिना आवाज के संवाद में डा. पाठक का मन फिर उलझने लगा। वे सोचने लगे कि ऐसा मूक संवाद तो सभी प्राणियों के अंदर होता है। तो क्या एक प्राणी के संवाद को दूसरे प्राणी में स्थापित किया जा सकता है। क्या एक प्राणी के अंगों के बीच के संवाद को दूसरे प्राणी के अंगों केे बीच स्थापित किया जा सकता है! यदि किसी प्राणी का कोई अंग आपसी आंतरिक संवादहीनता का शिकार हो कर नष्ट होने लगे तो क्या उसके संवाद तंत्र को किसी दूसरे प्राणी के अंगों के संवाद तंत्र को स्थापित कर ठीक किया जा सकता है! किया जा सकता है उनके मन ने कहा। ,पर कैसे यह प्रश्नवाचक चिह्न रह गया। क्या टॉरपीडो के संवाद तंत्र को आदमी में डाला जा सकता है! यह एक विचित्र विषय था और डॉ. पाठक का मन इस विचित्रता में उलझता जा रहा था।वे सोच रहे थे कि क्या यह उपचार का एक माध्यम हो सकता है! इतना सोचने के बाद वे फिर टॉरपीडो की ओर मुड़ गए। वे उसके मस्तिष्क और विद्युत अंग के बीच के संवाद को उपचार का माध्यम बनाने के बारे में सोचने लगे।

डॉ. पाठक उलझे मन और बड़े प्रष्न के साथ दूसरे दिन अपने लैब में पहुंचते हैं। टॉरपीडो फिर उनके सामने होता है और उसके विद्युत अंग एक बड़े प्रश्नवाचक चिह्न के रूप में उन्हें दिख रहे हैं तभी डॉ. अनुपमा प्रष्न के साथ प्रवेश करती हैं - सर संवाद वाली बात कुछ सुलझी क्या?

- नहीं उसने तो मुझे और भी उलझा दिया है।

- जानते हैं सर, जब मैं घर गई तो यह सब सोच- सोच कर मेरी तो धडकन बढ़ गई। मुझे लगा जैसे मेरे अंदर विद्युत- रसायन संवाद कुछ ज्यादा ही हो रहा है।

- क्या कहा आपने डॉ. अनुपमा?

- ऐसा लगा कि रसायन-विद्युत संवाद ज्यादा होने से धड़कन बढ़ गई।

- व्हाट!

- छोड़िये न सर । मैंने तो बस मजाक किया था।

- आप शायद नहीं जानती कि आपने अंजाने में एक बहुत बड़ी बात कह दिया है।

- क्या सर?

- हमारे अंदर भी तो यह संवाद होता ही है डॉ. अनुपमा। हमारे मस्तिष्क और दिल के बीच भी तो रसायन-विद्युत संवाद होता ही है। यह संवाद ही तो कभी धड़कन को बढ़ा देता है तो कभी घटा देता है और फिर दोनो ही स्थिति में संम्भालता भी है।

- पता नहीं सर ,यह आप ही सोचें।

ऐसा कह कर डॉ. अनुपमा चली गईं। डॉ. पाठक फिर से अपने प्रयोग में लग गए पर उनका मन कुछ और सोचना चाह रहा था। उनका मन फिर से दिल पर आ कर अटक गया।वे दिल की धड़कन और बिमारियों के बारे में सोच रहे थे तभी उनके मन ने कहा- पेस मेकर। पेस मेकर से ही तो दिल के विद्युत संवाद को ठीक किया जाता है। जब दिल की धड़कन कमजोर पड़ने लगती है तो बाहर से पेस मेकर का सहारा लिया जाता है जो एक विजली उत्पन्न करने वाला बैटरी होता है। बैटरी भी विद्युत उत्पन्न करता है और टॉरपीडो का इलेक्ट्रिक अंग भी, तो क्या टॉरपीडो के इलेक्ट्रिक अंग का उपयोग बैटरी की जगह किया जा सकता है। क्या इलेक्ट्रिक अंग से जैविक बैटरी बनाया जा सकता है। उनके मन ने कहा और फिर एकदम से शान्त हो गया। उनके दिल की धड़कन भी सामान्य हो चुकी थी। उन्हें अनुसंधान की दिशा मिल चुकी थी। टॉरपीडो पर बार -बार नजर ठहर जाने का कारण भी समझ में आ चुका था।

- क्या बात है सर! बहुत प्रसन्न दिख रहे हैं?आते के साथ डॉ. अनुराधा ने पूछा।

- क्या सचमुच?

- हाँ सर। लगता है टॉरपीडो से आपकी दोस्ती पक्की हो गई। यह कह कर वे हँसने लगीं।

डॉ. पाठक भी हँसते हुए बोले - बिल्कुल।

डॉ.पाठक ने जैविक पेस मेकर के लिए अनुसंधान की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। उन्होने टॉरपीडो के इलेक्ट्रिक अंग की कोषिका और चुहे के दिल और मस्तिष्क की कोषिकाओं के जीन पर काम करना शुरू किया। वे एक तरह से इन तीनों कोषिकाओं को मिला कर एक हाईब्रीड कोषिका तैयार करना चाहते थे जिसमें इन तीनों कोषिकाओं के गुण समाहित हों और उसमें विद्युत उत्पादन और रासायनिक स्त्राव की क्षमता के साथ-साथ वह उनके प्रति संवेदनशीलता भी हो तथा उनके प्रभाव में आ कर दिल की कोषिका की तरह उसमें संकुचन भी हो यानि धड़कन हो। डॉ. पाठक ने रात- दिन लग कर प्रयोग दर प्रयोग कर सफलता पूर्वक इस काम को अंजाम दिया।

आज डॉ. पाठक के लिए एक खास दिन था क्योंकि मानव जाति के कल्याण के लिए एक नए युग की शुरूआत होने वाली थी। उनके लैब में आज बड़े-बड़े वैज्ञानिक ,पत्रकार एवं अनुसंधान केन्द्र के कई लोग उपस्थित थे। टेबल पर एक डिसेक्टेड चुहा रखा हुआ था जो मरनासन्न दिख रहा था। उसके दिल में धड़कन नहीं हो रही थी।उसके दिल से लेड का एक तार जुड़ा हुआ था। डॉ.पाठक एक बटन की तरह की चीज ले कर आए जो एक तरल पदार्थ में रखा हुआ था। उन्होंने उसे बाहर निकाल कर एक पेट्रीडिस्क में रख दिया । फिर उसमें चुहे के दिल से जुड़े तार को लगा दिया। तार का सम्पर्क जैसे ही उस रचना से हुआ चुहे का दिल धड़कने लगा।इसे देख कर सभी आष्चर्यचकित हो गए। केन्द्र के निदेशक डॉ. भटनागर ने डॉ.पाठक को बधाई दिया और पूछा- डॉ. पाठक वह बटन जैसी चीज क्या है। उसने कैसे चुहे के दिल में धड़कन पैदा कर दिया?

सर,वह जैविक पेस मेकर है।

जैविक पेस मेंकर क्या है डॉ. पाठक? डॉ. भटनागर ने फिर पूछा।

सर,यह जैविक पेस मेकर भविष्य में पेस मेकर का स्थान लेगा और दिल की बीमारीयों के उपचार में सहायक होगा। यह बना किस चीज से है। डॉ. भटनागर ने अपनी जिज्ञासा दुहराई।

सर, यह एक हाईब्रीड टिस्सू है जो एक खास तरह की कोषिकाओं से बना है, डॉ. पाठक ने उन्हें समझाया।

इस बार डॉ. अनुराधा ने पूछा- वे कौन कौन सी कोषिकायें हैं सर?

डॉ. पाठक - इस हाईब्रीड टिस्सू के प्रत्येक कोषिका में टॉरपीडो के इलेक्ट्रिक अंग की कोषिका जो विजली उत्पन्न करती है, चुहे के मस्तिष्क की कोषिका जो रसायन बनती है और दिल की कोषिका जो धड़कती है , के गुण वर्तमान हैं।

डॉ. अनुपमा -यह कैसे संभव हुआ सर?

डॉ. पाठक - जीन मैनीपुलेषन से। तीनों तरह की कोषिकाओं के जीन एक साथ एक कोषिका में सम्मिलत कर नई तरह कोषिकायें विकसित की गंइ और फिर उन्हीं कोषिकाओं से यह जैविक पेस मेकर विकसित किया गया। तीनों कोषिकायें जो अलग -अलग काम करती थीं दिल के धड़कने के लिए, अब यह एक ही कोषिका इन सभी तीनों काम करेगी।

- इससे क्या होगा सर?

- अगर किसी कारण बस दिल की बीमारी इनमें से किसी की भी गड़बड़ी से होती है तो इस जैविक पेस मेकर के माध्यम से उसे ठीक किया सकता है।

डॉ. पाठक के इस चमत्कारी अनुसंधान पर सभी ने उन्हें बधाई दी। डॉ. पाठक ने सबकी बधाई स्वीकार की और दूसरे अनुसंधान के लिए अपने लैब की ओर चल पड़े।.....

हरित भविष्य की यात्रा

आदराम नायक
(नायब तहसीलदार जसरासर
जिला बीकानेर राजस्थान)

अध्यापक उस दिन 5 वीं कक्षा के अंतिम पीरियड में पर्यावरण का पाठ पढ़ा रहे थे।
अध्यापक - "बच्चों, आज आपको वृक्षों के महत्व के बारे में पढ़ायेंगे। कॉपी पेन लेकर लिखने के लिए तैयार रहें।"
(अध्यापक ने चाक उठाकर ब्लैक बोर्ड पर पेड़ का चित्र बनाया।) "क्या आप सब तैयार हैं?"
"यस सर।" सब बच्चों ने एक स्वर में कहा। फिर अध्यापक ने पढ़ाना शुरू किया।
"बच्चों। तुम्हें पता है वृक्षों का हमारे जीवन में क्या महत्व है? कोई बतायेगा?
मोनू - "वृक्ष हमें छाया देते हैं।"
सोनू - "वृक्षों से हमें फल मिलते हैं।"
प्रियंका - "घर के फर्नीचर के लिए लकड़ी प्राप्त होती है।"
रविन्द्र -"पेड़ पौधों से हमें औषधियाँ प्राप्त होती है।"
भारती -"पेड़ जंगली जानवरों और पक्षियों को आश्रय भी देते हैं।"
पंकज- "पेड़ मिट्टी के कटाव को रोक कर भूमि संरक्षण में भी योगदान देते हैं।"
अंकिता- "पेड़ हमें साँस लेने के लिए ताजी हवा और भोजन प्रदान करते हैं।"
"शाबाश। तुम सबने बिल्कुल सही बताया।"
किसी और छात्र - छात्रा को खड़ा न होते हुए देखकर अध्यापक ने फिर कहा," अब मैं तुम्हें बताता हूं कि वृक्षों से
हमें और क्या क्या लाभ होते हैं।
"जी सर।" सबने एक स्वर में कहा।
"पेड़ हवा से कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करते हैं और हमें सांस लेने के लिए स्वच्छ ऑक्सीजन देते हैं।"
पवन- "तो इससे पर्यावरण भी साफ रहता होगा गुरूजी?"
अध्यापक-"हां। इसलिए इन्हें धरती के फेफड़े भी कहा जाता है।"
रविन्द्र -"गुरु जी, यहाँ बरसात क्यों नहीं होती है?"
अध्यापक -"यहाँ वृक्षों की कमी है इसलिए यहाँ वर्षा बहुत कम होती है। चारों ओर सूखा ही सूखा दिखाई देता है।"
दिनेश- " और क्या- क्या लाभ है गुरूजी?"
अध्यापक- "आप सब लिख लें। प्रकाश संश्लेषण क्रिया द्वारा पेड़ पौधे हमारे लिए भोजन बनाते हैं।" पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में मदद करते हैं।"
"प्राकृतिक आपदाओं से हमारी रक्षा करते हैं।"
"असल में पेड़ ही हैं जो बादलों को बुलाते हैं और उनसे वर्षा करवाते हैं।"
"पेड़ प्रकृति की ढाल की तरह हैं, जो मिट्टी के कटाव और सूखे जैसी आपदाओं को रोकते हैं ।"
"यदि वातावरण में पेड़ नहीं होते तो पृथ्वी पर कभी जीवन संभव होता ही नहीं।"
रविन्द्र-"पेड़ पौधे तो हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है गुरुजी।"
अध्यापक -" हां। ठीक कहा तुमने। पर अफसोस की बात है कि लोग अक्सर अपनी जरूरतों के लिए पेड़ों को काट देते हैं। जिससे ऑक्सीजन में कमी और ग्लोबल वार्मिंग बढ़ जाती है।"
रविन्द्र -" यह ग्लोबल वार्मिंग क्या होती है गुरुजी?"
अध्यापक -"आजकल लोगों को बहुत ज्यादा गर्मी लग रही है। जानते हो क्यों?
"नहीं सर।" कई छात्रों ने कहा।
अध्यापक-"आजकल कुछ ही समय में तापमान 45°C से 50- 55°C तक पहुंच जाता है। वातावरण की इस बढ़ती गर्मी को ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। 56°C में इंसानों का जीवित रहना मुश्किल हो जाता है।"
रविन्द्र -" सर, ग्लोबल वार्मिंग क्यों बढ़ रही है?" अध्यापक - " धरती से वातावरण में जाने वाली ग्रीन हाउस गैसों के कारण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है।"
मोनू -" सर, ग्लोबल वार्मिंग को कम कैसे किया जा सकता है?"
अध्यापक -" पहला उपाय है कि ग्रीन हाउस गैसों में कमी लाई जाए ।और दूसरा उपाय यह है कि अधिक से
अधिक पेड़ पौधे लगाए जाएं। क्यों कि पेड़ पौधे ग्रीन हाउस प्रभाव को कम करके ग्लोबल वार्मिंग से हमें बचा
सकते हैं। आज भारत में 300 करोड़ पेड़ लगाने की आवश्यकता है।"
रविन्द्र -" पेड़ - पौधे लगाने में हम सबको अपना योगदान देना चाहिए। तभी हम यह लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।"
अध्यापक -" शाबाश। मैं तो चाहता हूं हम सभी पाँच -पाँच पेड़ जरूर लगाएं, सब कुछ सरकार पर न छोड़ें।"
विद्यार्थी -" हाँ गुरुजी। आपका कहना बिल्कुल सही है।"
अध्यापक -"बच्चो, आपने वृक्षों का महत्व अच्छी तरह जान लिया है, है ना ?"
"हाँ गुरुजी।" सभी एक स्वर में बोले।
घंटी बजती है। सभी छात्र - छात्राएं कक्षा से बाहर निकले। अपनी-अपनी साइकिल उठाई और घर की ओर चल दिए।
रास्ते में रविन्द्र ने कहा,"मोनू , सोनू, पंकज, देखो। इस रास्ते पर दूर-दूर तक कोई वृक्ष नहीं है। क्यों न हम वृक्षारोपण की शुरुआत यहीं से करें।
मोनू -"लेकिन हम पौधे कहाँ से लायेंगे?"
रविन्द्र -"जैसे हमारे घर के पिछवाड़े में नीम के नीचे बहुत से छोटे छोटे पौधे उगे हुए हैं। वैसे ही तुम्हारे घरों के आसपास भी होंगे। वहां से उखाड़कर हम यहां लगा देंगे।
"रविन्द्र, इतनी गर्मी में हमसे तो नहीं हो पायेगा। " उसके साथ चल रहे चार पाँच छात्रों ने कहा।
उनके जवाब से रविन्द्र निराश नहीं हुआ। उसने ठान लिया था कि वह रोज एक पौधा इस रास्ते के किनारे पर लगायेगा।
समय बीतता गया। रविन्द्र अब दसवीं कक्षा का विद्यार्थी था। सभी लोग जानते थे कि उसने अकेले ही पिछले पाँच सालों में तीन किलोमीटर रास्ते के दोनों किनारों पर नीम और शीशम के हजारों पौधे लगा दिये थे जिनमें से अब बहुत सारे बड़े वृक्षों में बदल गये थे। उनकी छाया राहगीरों के लिए वरदान साबित हो रही थी।
उस दिन 5 जून 2024 को पर्यावरण दिवस पर उनके स्कूल में एक निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। विषय था, " हरित भविष्य की यात्रा"।

विज्ञान नाटिका
हरित भविष्य की यात्रा...

अन्य छात्रों के साथ साथ रविन्द्र ने भी प्रतियोगिता के लिए नामांकन करवा रखा था। निबंध प्रतियोगिता 10 बजे नियत समय पर शुरू हुई। 20 छात्रों ने भाग लिया था लेकिन रविन्द्र कहीं नजर नहीं आ रहा था।

प्रतियोगिता सम्पन्न होने पर निर्णायक मंडल ने परिणाम घोषित किया।

निर्णायक -" प्रतियोगिता में पहला स्थान पंकज ने, दूसरा स्थान मोनू ने और तीसरा स्थान सोनू ने प्राप्त किया है। तीनों मंच पर पहुंचकर अपने प्रशस्ति पत्र प्राप्त करें।"

उपस्थित सभी विद्यार्थियों ने तालियां बजाकर खुशी जताई। मंच पर खड़े पंकज को रविन्द्र सबसे अंत में एक कोने में बैठा नज़र आया। जब मुख्य अतिथि उन तीनों को सम्मानित करने के लिए उठे तो पंकज बोला," क्षमा करें सर। हम इसे ग्रहण करने के योग्य नहीं हैं।"

मुख्य अतिथि -" यह क्या कह रहे हो? प्रतियोगिता में तुम तीनों प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे हो!"

पंकज -" इस सम्मान का असली हकदार रविन्द्र है सर।"

मुख्य अतिथि -"क्यों? उसने तो प्रतियोगिता में भाग ही नहीं लिया?"

यह सुनकर स्कूल के गुरु जी ने मुख्य अतिथि को रविन्द्र द्वारा किए गए वृक्षारोपण के बारे में बताया।

मुख्य अतिथि ने मंच पर रविन्द्र को तीनों सम्मान प्रदान करते हुए कहा - " मुझे खुशी हो रही है कि इस विद्यालय में पंकज, सोनू और मोनू जैसे प्रतिभाशाली और रविन्द्र जैसे पर्यावरण प्रेमी विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। विद्यार्थी रविन्द्र ने स्कूल आते-जाते समय अकेले ही सैंकड़ों वृक्ष लगाकर उन का पालन पोषण किया है। यदि हम सब इसका साथ देते तो यह सारा क्षेत्र आज हरा भरा नज़र आता। वृक्षारोपण के बारे में पढ़ना, पढ़ाना या संगोष्ठियां करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका अनुकरण आवश्यक है। इसकी लग्न और दृढ़ संकल्प ने तीन किलोमीटर लम्बे रास्ते को हरा-भरा और छायादार बना दिया है। ऐसी मिशाल दूर दूर तक मिलना मुश्किल है।"

अध्यापक -"रविन्द्र ने बताया कि आज उसे भी प्रतियोगिता में शामिल होना था। जैसे ही वह पौधों को पानी देकर रवाना हुआ, उसकी साइकिल पंक्चर हो गई। वह पैदल ही स्कूल आया, तब तक प्रतियोगिता सम्पन्न हो चुकी थी। इसलिए वह प्रतियोगिता में शामिल नहीं हो सका।"

मुख्य अतिथि -"मैं तीनों विजेताओं को शाबाशी देता हूँ कि उन्होंने वृक्षों के महत्व को, आज कागजों में नहीं बल्कि धरातल पर समझा। तीनों ने सभी पुरस्कार रविन्द्र को समर्पित कर उसका सम्मान बढ़ाया है।"

सभी विद्यार्थियों और उपस्थित जनों ने जोरदार तालियाँ बजाते हुए फूलों की माला से रविन्द्र का स्वागत किया।

तभी निर्णायक बोले -"एक नन्हें बालक ने युवा होते - होते बहुत ही अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। हमें भी इससे सीख लेनी चाहिए।"

फिर सभी मंचासीन अतिथियों, अभिभावकों, स्कूल स्टाफ एवं विद्यार्थियों ने एक साथ संकल्प लिया -"हम संकल्प लेते हैं कि " हरित भविष्य की यात्रा" में हम सभी रविन्द्र का साथ देंगे। हम भी वृक्षारोपण करेंगे। अपनी धरती को हरा-भरा बनायेंगे।"

बाल लघुकथा वृक्षमित्र

नौ साल का आरव, बारह साल का उसका भैया कणव। वे दो और उनके बीच कमरा एक, खटपट चलती रहती। आरव बड़े दिनो से चाह रहा है खुद का कमरा, जिसमें पढ़ने-लिखने को टेबल, अलमारी में खिलौने, बैडमिंटन के रैकेट, स्केटिंग बोर्ड हों। दूसरी तरफ कहानी की किताबें, पजल्स और वीडियो गेम्स रखे हों। एक आलमारी कपड़े रखने के लिए भी हो। सिर्फ उसका कमरा, जहाँ कोई उसे डिस्टर्ब न करे। अभी भाई के साथ कमरा बाँटना पड़ताहै तो कभी-कभी दोनों बेतरह लड़ पड़ते हैं । कणव बड़े होने का रौब दिखाता है, अक्सर वह सही भी होता है और ये बात तो मन ही मन में आरव भी मानता है। आरव को गृहकार्य मिला था, वह बोल-बोल कर कविता याद कर रहा था।

"चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेलों हरबोलो के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

कणव कॉमिक्स पढ़ रहा था। उसे शांति चाहिये थी। दोनों बुरी तरह लड़ पड़े। मम्मी इन झगड़ों से परेशान हो जाती हैं। समझा कर थक गई, मिल- बाँटकर चीजें काम में लेना नहीं सीखते हैं। दोनों को अलग चीजें चाहिए जिन पर सिर्फ उनका अधिकार हो। भैया की छुटपन की कहानियों की किताबें पढ़ना, खिलौनों से खेलना आरव को बिल्कुल नहीं भाता। हालांकि वे बहुत अच्छे दिखते हैं। बिल्कुल नये जैसे, लेकिन नये नहीं है, बल्कि बेकार हैं ! वह दोस्तों की नजरों में अपने खिलौनों की धाक कैसे जमाए!

आरव जब से पढ़ने लगा है, समझने लगा है, जरूरत न होने पर भी हर समय नये से नये खिलौने, नये डिजाइन के कपड़े, पेन-पेंसिल, लंच बाक्स, बैग खरीद कर पर्यावरण को कितना नुकसान पहुँचाते हैं ! आजकल आरव पर नया भूत सवार हुआ है, वह भैया के साथ कमरा नहीं बाँटेगा। पिछले दिनों मकान के रिनोवेशन की बात हुई, तो उसने मम्मी से कह दिया, लॉन छोटा कर उसके लिए एक कमरा निकाल दिया जाए। पापा ने मम्मी की सिफारिश मान ली। आरव तब से नए कमरे के सपने बुनने लगा है। एक दोपहर आरव स्कूल से आया तो देखा, पापा और आर्किटेक्ट शर्मा अंकल रिनोवेशन के बारे में बातचीत कर रहे हैं। शर्मा अंकल ने लॉन के कोने की तरफ इशारा करते हुए कहा, "कमरा निकल आएगा, बस ये नीम और बेल के पेड़ कटवाने पड़ेगें।"आरव की जिद है, उसका मन रखने के लिए कमरा बनवाने का सोच ही लिया है, तो भी पेड़ तो कटवाना नहीं चाहता हूँ। दु:ख होगा, पिताजी ने शौक से लगाये थे, लेकिन ठीक है, आरव की इच्छा पूरी होगी तो वह खुश हो जाएगा । पेड़ कटने की बात सुनकर आरव का जी धक से रह गया। पेड़ तो उसके दोस्त हैं ! पेड़ों से बहुत प्यार है उसे। पिछले सप्ताह ही उसके स्कूल में पर्यावरण दिवस पर पौधा रोपण का कार्यक्रम था, जिसमें उसने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था।

हर बच्चे के जिम्मे एक पौधा उगाना था। उसने खाद-पानी देकर अच्छी तरह देख-भाल की थी। उसके पौधे को प्रथम पुरस्कार मिला था, साथ में वृक्ष मित्र का प्रमाण पत्र भी। अब अलग कमरे की चाहत के कारण क्या इन हरे-भरे पेडों को कट जाने दे? उसके शौक के कारण दो निर्दोष पेड़ों को काटना पड़ेगा! आरव के मन में घमासान युद्ध मचा हुआ था। अपने कमरे की चाहत पूरी करने के लिये निरपराध पेड़ों की हत्या ? मन ने कहा, ना -ना! वह खुद को कभी माफ नहीं कर पाएगा। वो तो वृक्ष मित्र है, वृक्षों का दुश्मन कदापि नहीं। उस रात खाने की टेबल पर आरव ने कहा। "पापा, आप इन दो सुंदर पेड़ों को काटने से मना कर दीजिए, मुझे अलग कमरा नहीं चाहिए!" अपनी आवाज का प्रभाव वो अपने पिता के मुस्कुराते हुए चेहरे पर साफ - साफ देख रहा था।अंतत: अपने निर्णय पर आरव बहुत खुश था !

चंद्रकला जैन
चंडीगढ़

प. माधवराय सप्रे

संक्षिप्त परिचय:-

माधवराव सप्रे (1871-1926) हिन्दी के आरम्भिक कहानीकारों में से एक, सुप्रसिद्ध अनुवादक एवं हिन्दी के आरम्भिक सम्पादकों में प्रमुख स्थान रखने वाले सम्पादक हैं। वे हिन्दी के प्रथम कहानी लेखक के रूप में जाने जाते हैं। माधवराव सप्रे का जन्म सन 1871 ई. में दमोह जिले के पथरिया ग्राम में हुआ था। बिलासपुर में मिडिल तक की पढ़ाई के बाद मैट्रिक शासकीय विद्यालय रायपुर से उत्तीर्ण किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद उन्हें तहसीलदार के रूप में शासकीय नौकरी मिली। बिलासपुर जिले के एक छोटे से गाँव पेंड्रा से 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक मासिक पत्रिका निकाली। आपने मराठी में रचित समर्थ रामदास के 'दासबोध', लोकमान्य तिलक रचित 'गीतारहस्य' जैसे मराठी ग्रंथों, पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद भी बखूबी किया। 1924 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के देहरादून अधिवेशन में सभापति रहे थे। 'एक टोकरी-भर मिट्टी' को हिन्दी की पहली कहानी होने का श्रेय प्राप्त है। जिसे आज इस अंक में प्रकशित कर आपके साहित्यिक व्यक्तित्व को नमन है।

कथा-सार

'एक टोकरी-भर मिट्टी' हिन्दी की पहली कहानी सिद्ध हुई। इस कहानी में एक विधवा स्त्री के माध्यम से जमींदारों द्वारा गरीब जनता पर होनेवाले अन्याय को दर्शाया गया है। विधवा स्त्री की दयनीय अवस्था और नियति द्वारा उसके पारिवारिक सदस्यों का निधन होना उसकी दुर्दशा को व्यक्त करता है। जमींदार के द्वारा जबरदस्ती उसके झोंपड़ी पर कब्जा करना और झोंपड़ी की एक टोकरी-भर मिट्टी का उसके द्वारा न उठना उसके अपराधी भाव को दर्शाता है। अन्ततः इसी अपराध भाव का अहसास कर कृतकर्म का पश्चाताप करते हुए जमींदार का विधवा से माफी माँगना कहानी को आदर्शात्मक स्तर पर उठाता है। यह कहानी हिन्दी की पहली कहानी होकर भी प्रभाव की दृष्टि से मौलिक है।

एक टोकरी भर मिट्टी

किसी श्रीमान् जमींदार के महल के पास एक गरीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी। जमींदार साहब को अपने महल का हाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी; उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी। जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुःख के फूट-फूट कर रोने लगती थी। और जबसे उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गई थी। उस झोंपड़ी में उसका मन इतना लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब वे अपनी जमींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा करा लिया और विधवा को वहाँ से निकाल दिया। बिचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान् उस झोंपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे कि वह विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़गिड़ाकर बोली, "महाराज, अब तो यह झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।" जमींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा, "जब से यह झोंपड़ी छूटी है, तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत-कुछ समझाया पर वह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल। वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने यह सोचा कि इस झोंपड़ी में से एक टोकरी- भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले आऊँ !" श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। अपने आंतरिक दुःख को किसी तरह सँभालकर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठाकर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान् से प्रार्थना करने लगी, "महाराज, कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।" जमींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए। पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्योंही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्योंही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा, पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ भी ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे, "नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।"

यह सुनकर विधवा ने कहा, "महाराज, नाराज न हों, आपसे एक टोकरी-भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर क्योंकर उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए।"

जमींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे पर विधवा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापिस दे दी।

कमलेश भारतीय
हिसार हरियाणा-भारत

वरिष्ठ साहित्यकार

श्रम संगीत

दरबार में सन्नाटा इतना था कि सुई गिरा कर भी जाना जा सकता था कि द्वारपाल से लेकर महाराज तक सभी
मौन संगीत के आनंद में हिलोरे ले रहे थे । दूर देश से आए संगीतज्ञ ने सबको अपने संगीत के वश में कर लिया था । एकाएक, संगीतज्ञ के हाथ रूक गए, नेत्र खुल गये और फैल गये । सभी के आश्चर्य की सीमा न रही, मानो कि जैसे सब नीद में थे और उन्हें बलपूर्वक जगा दिया गया हो। अनिच्छा से जागने वालों की तरह ही उनकी आँखों में भी क्रोध उतरआया था ।

"यह उपद्रव जिसने भी किया हो, सामने आए। " महाराज भूखे सिंह के समान गरजे। उनकी आवाज दरबार के मखमली गद्दों, रेशमी पर्दों से टकराने के बावजूद और भी खतरनाक होकर लौटी । हाथों में छेनी और हथौड़ा लिए शिल्पी ने प्रवेश किया । देश भर का शिल्पी था वह ।

"मैं हूं महाराज। " धीमे से उसने बताया, मस्तक उठाए हुए । "जो उपद्रव अभी हुआ था उसमें तुम्हारा भी कोई हाथ है ?" महाराज कि आवाज गूँज उठी। "मैं नहीं , मेरे हथौड़े छेनी की आवाज थी , महाराज। "

"क्या तुम कुछ देर रूक नहीं सकते थे?" महाराज ने आँखे लाल करते हुए पूछा।

शिल्पी- "इतना समय कहाँ शेष रहा प्रभु ?"

महाराजा - "मूर्ख यही समय मिला रंग में भंग डालने का ?"

शिल्पी- "रंग में भंग नहीं , राजन् । एक संगीत के सामने एक और संगीत सुनाने का । कल्पना के सामने सत्यता लाने का।"

महाराजा- "कैसा संगीत ?" "इस शोर को, हथौड़े और छेनी की आवाज को तुम संगीत कहते हो ?" "तुम शिल्पी हो , संगीतज्ञ नहीं", समझे ।"

शिल्पी- "राजन् , गलत समझे हैं आप । हथौड़े और छेनी का भी एक संगीत होता है, कभी आपने इस संगीत को सुना हो तब ना। " इस संगीत की साधना सिर्फ उंगलियों की थिरकन से ही नहीं की जाती बल्कि पूरी देह को मिट्टी में मिलाकर मिट्टी बन कर की जाती है। तब कहीं जाकर। "

महाराजा - "चुप रह मूर्ख, अपने उपदेश अपने पास रख और मरने के लिए तैयार होता जा। "

शिल्पी - "स्वामी, यदि मेरे प्राणों से श्रम संगीत को प्रतिष्ठा मिल सके तो प्रस्तुत हूँ ।"

शिल्पी ने सिर झुका दिया । दो कदम आगे आ गया । सिपाही उसकी गर्दन काट सकें, उनसे पहले ही हथौड़े और छेनी वाले शिल्पी के हाथ असंख्य हाथों में बदल गए। मखमली दरबार को तोडने वाला संगीत गूंजने लगा ।

"आपने नहीं सुना ?"

डॉ. नितीन उपाध्याय
दुबई, यू. ए. ई.

वरिष्ठ साहित्यकार

दाना दुनका

"सलीम, ये चौराहे पर भीख मांगने वाली बूढ़ी अम्माँ के पास ये दो छोटे -छोटे बच्चे कौन हैं ? क्या कहीं से भीख मंगवाने के लिए चुराकर लाई है?"

"नहीं मैडम जी, वह तो इसके पोता और पोती है। इसका नशेड़ी गंजेड़ी बेटा शहर के दूसरे कोने में भीख माँगा करता था। उसकी पत्नी इससे परेशान होकर दोनों बच्चे उसके पास छोड़कर चली गई थी "

"अच्छा तो वह भी अपनी जिम्मेदारी बूढ़ी माँ पर छोड़कर भाग गया? यह बेचारी खुद तो अपना जैसे- तैसे पेट भरती है, इन दोनों के लिए कहाँ से लाएगी -क्या ही कर पाएगी?"

"नहीं, महीना भर पहले वह भी नशे के ओवरडोज़ की वजह से मर गया। तब नगर निगम के लोग इन दोनों को यहाँ छोड़ गए है।"

"ओह! अरे पर यह बुर्के वाली औरत इन बच्चों के लिए क्या लेकर आई है।"

"यह इन दोनों के लिए रोज खाना लेकर आती है।

"मुझे तो लगता है कि यही इन बच्चों की असली माँ होगी, जिसने किसी दूसरे से निकाह कर लिया है, और बच्चों को बेसहारा देखकर खाना देने आ जाती है।"

"नहीं मैडम जी, यह तो मेरी बेगम रज़िया है।"

"अरे! तो क्या तुमने इन बच्चों की माँ से निकाह किया था। "

"नहीं मैडम जी, ऐसा तो फिल्मों में होता है, असल ज़िन्दगी अपने अजब ही रंग दिखाती है। रज़िया की सहेली थी, इन बच्चों की माँ। अब हम इनको अपने घर लाकर इनकी जिम्मेदारी तो नहीं न ले सकते थे, पर घोसले में माँ रास्ता देखते चूजों को दाना तो कोई भी दे सकता हैं न?

"आज ही मैं कुछ NGO वालों से बात करके इन बच्चों के रहने और पढ़ने की व्यवस्था करवाती हूँ। थोड़ा दाना दुनका तो समाज भी खिला ही सकता है। "

अंतिम साँस

बाबूजी की चिंता आखिर सच साबित हुई,अम्माँ जी उनका साथ छोड़ गई थीं। वह कैंसर की बीमारी से हार गईं। बाबूजी की लाख कोशिश उन्हें नहीं बचा पाई। बाबूजी का जीवन अंतिम पड़ाव पर अकेला रह गया था। उनकी हालत जैसे रेगिस्तान में करील के पेड़ जैसे हो गई थी। कहने को उनके पास सब कुछ था लेकिन कुछ नहीं था। अम्माँ की तेरहवीं संस्कार के बाद सभी चारो बेटे अपने-अपने कार्यस्थल लौट गए थे। बड़ा बेटा अमेरिका, दूसरा दुबई और तीसरा सिंगापुर में, जबकी चौथा मुंबई में सेटल था। जाते वक्त सभी बाबूजी के गले मिलकर खूब घड़ियाली आँसू रोए थे। सभी ने बाबूजी को दिलासा दिया कि कोई दिक्क़त हो तो बाबूजी बताएंगे । अब बाबूजी के पास इससे बड़ी क्या दिक्क़त होगी, कि वो अकेले रह गए थे और किसी ने बाबूजी से यह नहीं कहा था कि आप हम लोगों के साथ चलिए। यहाँ आप अम्माँ के बगैर नहीं रह सकते हैं। लेकिन बेटों के लाख चाहने के बाद भी उनकी पत्नियां बाबूजी को साथ रखने को राजी नहीं थीं। क्योंकि उनके स्वतंत्र जीवन में बाबूजी सबसे बड़ी बाधा बनते।

चारों बेटों और बहुओं के जाने के बाद आज बेटी रेनू को लेने उसके पति आए थे। वह बाबूजी को इस हालत में छोड़कर नहीं जाना चाहती थी, लेकिन ससुराल जाना उसकी भी मज़बूरी थी। क्योंकि ससुराल में वह अकेली थी और उसके सास -ससुर बूढ़े थे।

जाते वक्त रेनू बाबूजी को लिपट कर फुट पड़ी थी। रेनू को सबसे बड़ा दुःख यह था की बाबूजी आज अकेले रह गए हैं। अम्माँ की सेवा में उन्होंने खुद का जीवन समर्पित कर दिया था। बाबूजी ने कभी अम्माँ की कोई बात नहीं टाली। जीवन के अंतिम क्षण में मरते वक्त अम्माँ ने बाबूजी का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा था। "भगवान मुझे कुछ मत देना लेकिन हर जन्म में मुझे आपका साथ मिले। मैं आपके ऋण से मुक्त नहीं हो पाऊँगी।" 'आपका साथ मेरे अंतिम साँस तक मेरे हाथों में रहे, बस ! "

और अम्माँ ने दुनिया छोड़ दिया था। माँ के अंतिम शब्द अब भी गूँज रहे थे। सत्तर साल की उम्र में हमारे बाबूजी अकेले हो गए थे। जिन बच्चों की बाबूजी छतरी हुआ करते थे। उन्हें हर मुसीबत, धूप, छाँव और बारिश से बचाया था आज उनकी छतरी बनने को कोई तैयार नहीं था।

बिटिया रेनू को विदा करते समय बाबूजी की आँखें भी छल-छला आई थी। जिस उम्र में इंसान को सबसे अधिक परिवार की जरूरत होती है उस स्थिति में बाबूजी अकेले हो गए। अम्माँ ने तो उनका साथ हमेशा के लिए छोड़ा ही था चारों बेटे और बेटी ने भी छोड़ दिया।

रेनू की गाड़ी आगे बढ़ रही थीं और बाबूजी की आँखों से आँसू गिर रहे थे। फिर भी वह हाथ उठाकर कह रहे थे,

"जाओ खुश रहो। तुम चिंता मत करना"!

जीवन के अंतिम पड़ाव पर उन्हें बार-बार यह गीत याद आ रहा था।

"चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला, राही, पीछे छूटा तेरा मेला राही चल अकेला ।

प्रभुनाथ शुक्ल
(बरिष्ठ पत्रकार, लेखक एवं समीक्षक)
ग्राम: हरीपुर, पत्रालय: अभिया
जिला : भदोही, (उप्र)

कोरा पन्ना

"छोटू, कल सुबह चार बजे भी पहले की तरह अखबारवालों को विज्ञापन के ये बंडल दे आना, फिर चाहे तो थोड़ा लेट आ जाना कोचिंग में शाम को।" मनोहर अपनी सरकारी नौकरियों की तैयारियां करनेवाली 'उड़ान' कोचिंग संस्थान के पैम्पलेट मोहन को देते हुए बोले।

"जी सर", और मोहन उन कागजों के बंडलों को देख मुस्कुरा दिया। रात आठ बजे वह घर आया और उन बंडलों को मेज पर रख ही रहा था कि कमला उसके करीब आ अपने आँचल से उसके चेहरे पर आई पसीने की बूंदें पोछने लगी। "मम्मी, आटा लगा दिया चेहरे पर।", और वह अपने हाथों से चेहरे साफ करने लगा तो कमला आँचल में लगा पॉलीथिन देख झेंप गई। "मम्मी, कल सुबह फिर एक बार साढ़े तीन बजे उठा देना। ये कोचिंग के बंडल देने जाना है।" मोहन मुँह धोने जाने लगा तो कमला आँगन में उसके पीछे ही चल दी।

"लला, ये विज्ञापनों के कागज कल देकर परसों लोगों के घरों में मांगने चला जायेगा। अरे, इतनी मेहनत करता है तो खरीद लिया कर अपने लिए कॉपियाँ। अब कमाने भी तो लगा है।", हाथ में तौलिया लिए कमला मेज पर रखे उन बंडलों को देखने लगी।

"अरे मम्मी, स्कूल में टीचर को दिखाना हो तो नई कॉपी चाहिए। गणित के सवालों की प्रैक्टिस के लिए तो रफ़ कागज भी चल सकते हैं, सिर्फ कोरे कागज होने चाहिए। अभी तो नवीं की पढ़ाई है तो शाम को सर की मदद के लिए चला जाता हूँ, आगे दसवीं से पढ़ाई समय मांगेगी तब ? घर के हालात तो आप जानती ही हो।" और तौलिया लेकर अपना हाथ मुँह पोछने लगा।

"पर बेटा, यह काम कितनी मेहनत का है। मुझे एक आईडिया आया। तू एक बंडल में तो अभी से ही विज्ञापन के पीछे लिखने लग जा, और बाकी के बंडल अखबारवालों को दे आना। परसों से जब लोगों से घरों से इन्हें बटोरेगा तो कम से कम इतने तो नहीं लाने होंगे और वैसे भी सारे के सारे मिलते भी तो नहीं हैं। कमला उसके लिए खाना परोसते हुए बोली।

"ओह मम्मी, आज बोला तो बोला लेकिन आगे से मत बोलना ऐसा वरना लोग कहेंगे कि बेईमानी इसके खून में बहती है" और पलंग के नीचे पड़ी शराब की खाली लुढ़की हुई बोतलें देख अपने शराबी पिता के बारे में सोच उसका खून खौल उठा।

"अरे छोटू, तू तो छोटू नहीं रहा। अब तो बहुत बड़ा हो गया।"

मनोहर अपने हाथों में और भी बंडल लिए आए तो मोहन झट से हाथ के कौर को थाली में रख खड़ा हो गया।"अरे बैठकर खाना खा ले। इन बंडलों को उनके साथ ही रख देता हूँ " यह विमल के फर्नीचर की दुकान के विज्ञापन हैं। दोनों के साथ में ही अखबारवाले को तू दे आएगा यही सोच मैं भागता हुआ आ पहुँचा।" "लेकिन अब लगता है आना सफल हो गया, कल मेरी कोचिंग से देश का एक कलेक्टर निकलेगा। बेटा, कल कोचिंग से तेरे पढ़ने के लिए खाली कॉपियाँ ले जाना, जब जितनी जरूरत हो।"

"..और काम की टेंशन मत करना।"

"अब सिर्फ पढ़ना ही पढ़ना है।" मनोहर मुस्कुराते हुए जिस गति से आये थे उसी से वापस चले गए।

प्रतिभा जोशी
30- A, परिवहन नगर,
आदर्श नगर, अजमेर

सीमा सिन्हा 'मैत्री'
लेखिका, कवयित्री, मंच संचालक

वो दिन

रंजीत को ऑफिस जाने में देर हो रही थी। पर वह चाह रहा था की माँ को जूता पहना दें ताकि अस्पताल में उन्हें शर्मिंदगी महसूस ना हो। लकवा के कारण मेरी सासू माँ के पैर बिल्कुल टेढ़े हो चुके थे। लाख प्रयास के बाद भी जूते उनकी पैरो में नहीं पहने जा रहे थे।

देखकर बहुत बुरा लगा एक कड़क महिला, हमेशा से बन -ठन कर सूट- बूट में रहने वाली मेरी सासू माँ आज कितनी लाचार हो गई हैं । नँगे पाँव ही व्हीलचेयर पर बिठाकर रंजीत ने कहा "सुनीता माँ को हॉस्पिटल ले जाना और मुझे कॉल कर देना, मैं आकर डॉक्टर से मिलुँगा।" हड़बड़ी में रंजीत गाड़ी की चाबी लिए और निकल गए।

मैंने देखा माँ की आंखे नम हो गईं। पता नहीं आज माँ क्यों रो रही थी। उनकी आँखों में ठहरे आँसू में मुझे वो दिन नजर आया जब काम वाली बाई की नन्हीं सी बच्ची ने सासु माँ के जूते में अपना पैर डाला था, तो उन्होंने औकात की बात कहकर घंटे भर उसे एक ही पैर पर खड़े रहने की सजा दी।

कविता रानी सिंह
लेखिका, कवयित्री

रंगीन झालर

मुन्ना उस आलिशान से घर के गेट के पास पहुंच कर ठिठक गया था, जहाँ आज वो अपने डेकोरेटर के आदेश पर कल के सजावट के पैसे लेने आया था, डबडबायी आँखों से उन चकमक सजावटी झालरों को चुपचाप देख रहा था जो आज कूड़े में फेंके हुए थे तोड़े और नुचे हुए।

कल सुबह ही तो उस घर को सजाया था मुन्ना नें अपने टीम के साथ उस घर के मालिक के जन्मदिन के अवसर पर और रिटर्न गिफ्ट में उसे एक दर्द भरा जोरदार तमाचा मिला था भद्दी गाली और चोर जैसे कुछ अपमानजनक शब्दों के साथ।

क्योंकि उस आलीशान घर को सजाने के दौरान जो चकमक रंगीन झालर काट- छाँट कर बेकार हो गए उनको इकट्ठा कर रहा था वो कल ही के दिन पड़े अपने बेटे के जन्मदिन पर अपने छोटे से झोपड़े को सजाने के लिए...।

अरुण अन 'हीर'
लंदन - यू.के.
लेखिका, कवयित्री एवं शिक्षिका

नदिया के किनारे

स्कूल की घन्टी बजते ही 10 साल की लक्ष्मी ने अपना बस्ता उठाया और अपनी सहेली मीरा से यह कह कर भाग निकली मेरे पापा कल आठ महीनों बाद घर आ रहे हैं और मुझे उन्हें बावरी के बारे में बताना है ताकि वो मेरी मदद कर सकें!

लक्ष्मी के पापा एक फ़ौजी हैं और वो बहुत कम घर आते हैं यह बात मीरा को पता थी इसलिए उसने लक्ष्मी को नहीं रोका!

घर पहुँचते ही लक्ष्मी ने दादी माँ को प्रणाम करते हुए कहा माँ को कहना मैं बावरी के पास जा रही हूँ क्योंकि पापा के आने से पहले मुझे देखना है कि सब कुछ ठीक है!

अन्दर से माँ की आवाज़ आई लक्ष्मी रुक तुम्हें कुछ बताना है! माँ मैं अभी वापिस आ जाऊँगी और यह कह कर लक्ष्मी भाग निकली!

नदिया किनारे एक छोटे से शहर में लक्ष्मी अपने माँ पापा और दादी माँ के साथ रहती थी! कुछ हफ़्ते पहले वो दादी माँ के साथ नदी किनारे बैठ कर सावन की कहानियाँ सुन रही थी तो अचानक से दादी माँ ने नन्ही चिड़िया को देखते हुए कहा अरी बावरी यह कहाँ अपना घोंसला बना रही है तेरे नन्हे बारिश के आते ही नदिया में गिर जाएँगे! उसी पल से लक्ष्मी ने चिड़िया को बावरी नाम दे दिया था! पहले तो बावरी लक्ष्मी को देखते ही उड़ जाती थी पर आहिस्ता आहिस्ता दोनों में दोस्ती हो गई थी और अब तो बावरी लक्ष्मी के हाथ से दाना चुगती थी! लक्ष्मी अपने पापा को इस दोस्ती का तोहफ़ा देना चाहती थी!

किनारे पहुँचते ही लक्ष्मी ने अपनी जेब से लिफ़ाफ़ा निकाला बावरी को दाना खिलाने के लिए! दो दिन पहले बावरी के तीन चूज़े हुए थे और लक्ष्मी को पता था बावरी भूखी होगी! लक्ष्मी ने अपनी हथेली पर दाने डाले और बावरी को खिलाने के लिए हाथ आगे किया मगर ना वहाँ बावरी थी और ना ही उसका घोंसला! लक्ष्मी हैरान और परेशान होकर रोने लगी क्योंकि अभी तो सावन की पहली बारिश भी नहीं हुई थी तो फिर बावरी कहाँ चली गई!!

वो रोते रोते घर के लिए मुड़ी और यह सोच रही थी कि वो अपने पापा को अब क्या तोहफ़ा देगी! घर पहुँचते ही लक्ष्मी दादी माँ के साथ लिपट कर रोए जा रही थी और रोते रोते दादी माँ को बावरी के गुम होने के बारे में बता रही थी कि पीछे से उसके पापा ने आहिस्ता से उसे दादी माँ की गोद से उठा कर अपने सीने से लगा लिया! लक्ष्मी के आंसू एक दम थम गये और वो चीख कर बोली पापा आप तो कल आनेवाले थे! पापा ने हँसते हुए कहा मुझे एक दिन पहले ही छुट्टी मिल गई इसलिए मैं जल्दी आ गया और मेरे पास तुम्हारे लिए एक खूबसूरत तोहफ़ा है! लक्ष्मी उदास आवाज़ में बोली पापा जो तोहफ़ा मैं आपको देना चाहती थी वो ना जाने कहाँ गुम हो गया है!

पापा ने लक्ष्मी का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे आँगन में लाकर आम के पेड़ तले खड़ा किया और कहा वो देखो क्या है! लक्ष्मी ने देखा बावरी अपने घोंसले में आराम से बैठी थी और उसके चूज़े भी वहीं थे! लक्ष्मी कभी अपने पापा को देख रही थी और कभी घोंसले को उसे तो अपनी आँखों विश्वास ही नहीं हो रहा था!

पापा ने लक्ष्मी को अपनी बाँहों में समेटते हुए सब समझाया कि वो बावरी को यहाँ क्यों लेकर आए हैं ताकि ना ही बारिश में उसका घोंसला गिरेगा और ना ही लक्ष्मी को उसे दाना खिलाने नदिया किनारे जाना पड़ेगा!

लक्ष्मी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और वो अपने पापा के गले लगकर बोली पापा मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ!

डॉ. इंदू उपाध्याय, पटना बिहार , भारत

शिक्षिका पटना संत जोसफ कॉन्वेंट, अशोक राज पथ ,पटना (बिहार) लेखिका, समाज सेवी, रक्तदाता।

बाबूजी

किसने पहनी थी मेरी घड़ी..?

अरे घर में कोई है ..?

कोई बताएगा मेरी घड़ी किसने पहनी थी..?

कोई तो बताओ..!

पिता जी की गर्जन करने वाली आवाज पूरे घर से होते हुए बाहर दालान तक पहुंच गई। दीवारें थर्रा गई सभी औरतें अपने अपने कमरे में सहम सी गई ,जो जहां था वहीं जम गया,किसी को साहस न था की कोई आकर बताए की बाबूजी की घड़ी छुने कि हिमाकत किसने कि है।

बाबूजी के आसमान को सिर पर उठाने से पहले ही दालान के भीतर की ओर नन्हे -नन्हे कदमों से नन्हे अविनय आते दिखें जैसे ही आंगन में वो आएं पिताजी की गरजदार आवाज उनके कानों से टकराई ... अच्छा तो आप ही हैं क्या ?

क्या तुमने मेरी घड़ी उठाई थी..?

बाबूजी ने आकाश में चमकते हुए बिजली के समान गर्जना सी आवाज में कहा, अविनय का दिल इतने जोर से धड़क रहा था मानो अब वो बाहर आ जायेगा। टांगे अपनी जगह खड़ा होने में असमर्थता जता रहा थीं।अचानक उन्होंने आग उगलती आंखो से घड़ी को उठाया और दूर फेंक दिया सन्नाटे को चीरती घड़ी झन्नाटे के साथ दूर कोने में जा गिरी और अपने वजूद को रोने लगी। नन्हें अविनव की क्या दशा थी ये बताना संभव नहीं ।

' छड़ी लेकर आओ आज मैं तुम्हारी अच्छी मरम्मत करता हूं।' उन्होंने बालक की ओर बिना देखे हीं कहा।वो नन्हे कांपते पैरों से बाहर गए और छड़ी ढूंढने लगे। दालान के बाहर आकर बालक ने नज़र दौड़ाई तो पास रखे गोबर के ढेर पर एक डंडा दिखा । अविनव ने बड़ी सावधानी से छड़ी को निकाला किंतु उसमें गोबर लगा था।अब क्या करे ,इधर उधर नजर दौड़ाई उसे पास ही में पड़ा कागज दिखा ,बालक ने

कागज को बड़ी सावधानी से गोबर वाले भाग पर

लगा दिया और पिता के पास गए सिर झुकाकर डंडा आगे बढ़ा दिया ,पिता ने कहा -' कागज क्यों लगाए हो..?'

' आपके हाथ में गोबर लग जाता ?अविनव ने इतनी मासूमियत से कहा ।

पिताजी दंग रह गए .... बालक सिर झुकाए अपराधी की तरह खड़ा रहा। फिर सकुचाते हुए बोला ...'आपके हाथ में लग जाता न पिताजी' ...!

वो अकारण प्रेम करता है, बड़ा

होने से पहले ही बड़ा हो जाता है ।

पिताजी के जूते ,टोपी,कपड़े और

घड़ी भी पहनता है।

बड़ा होने से पहले ही बड़ा होना

चाहता है।

छोटी उम्र में बड़े काम करना चाहता

है,बेटा ऐसा भी होता है।

श्वेता सिन्हा
बैंगलोर, भारत

ई.एस.आई. कॉर्पोरेशन में सहायक निदेशक राजभाषा के पद पर कार्यरत। लेखिका एवं कवयित्री। प्रतिलिपि पर कहानियां का प्रकाशन।

दहेज रहित विवाह

दहेज रहित विवाह

अगर आप की कोई माँग हो तो स्पष्ट बता दें, ताकि कल को कुछ कहने को न रहे।

अरे शर्मा जी, कैसी बातें करते है। हमलोग रिश्ता कर रहे हैं, कोई व्यापार नहीं। नकद पैसे लेने का हमारे यहाँ रिवाज नहीं। ऐसा करके हम अपने हाथ गंदे नहीं कर सकते।

चलिए, ये तो बहुत अच्छे विचार हैं आपके। अब हमें आगे क्या करना है, शादी कैसे करनी है, इन बातों पर भी विचार कर लेना चाहिए।

अब ऐसा है कि गहने जो आप देंगे, वही हम आपकी बेटी को चढ़ा देंगे। मंडप पर शोभा तो होनी ही चाहिए। और बच्चे नए शहर में अपनी गृहस्थी शुरु करेंगे तो मदद भी तो हमें ही करनी होगी। मैं तो रिटायर्ड हूँ, जो बन पड़ेगा जरूर करूँगा और फिर मेरा तो सब कुछ इन्हीं लोगों का है। आखिर इकलौता बेटा है हमारा।

मैं समझ गया। टी.वी., फ्रिज और वाशिंग मशीन मैं दे दूँगा ताकि नई गृहस्थी में उन्हें ज्यादा परेशानी न हो।

शर्मा जी, एक बात कहनी थी।

हाँ, हाँ कहिए न।

बारात ठहराने की व्वस्था किसी अच्छे होटल में कीजिएगा। वो क्या है न कि हम और आप तो रिश्तेदार बन रहे हैं, पर बाराती तो सिर्फ अच्छा खाने पीने ही आते हैं। जितनी शानदार व्यवस्था होगी, उतना ही आपका नाम होगा। शादियाँ बार-बार तो होती नहीं। हम बारात में लगभग 200 लोग होंगे। कोई परेशानी हो तो बताइए।

नहीं, नहीं आप निश्चिंत रहिए। हमलोग अच्छी व्यवस्था करने की पूरी कोशिश करेंगे। आपको शिकायत का कोई मौका नहीं मिलेगा।

शर्मा जी मन ही मन जोड़ रहे थे- आठ लाख के गहने, तीन लाख का सामान, पाँच लाख सगाई और बीस लाख बारात स्वागत। बस.......

।

चिरनिद्रा

प्रमिला शरद व्यास
लेखिका, कवयित्री

आज सुबह से अनामिका की छाती में दर्द था। रात भर सो नहीं पाई थी। उसने तीन चार बार अपनी नौकरानी को बिटिया चारु को बुलाने क्लिनिक भेजा पर चारु ने व्यस्तता के कारण नौकरानी के हाथ दवाइयां भेज दी। मरीजों के साथ व्यस्तता में चारु को अपनी मां की सीख हमेशा याद रखी थी।

मां ने कहा था-" बेटा मरीजों की बीमारी के साथ-साथ उनकी भावनाओं आंतरिक परिस्थितियों को भी समझना"। दोपहर के 1:30 बजे चारु आई ,चारु ने हाथ धोते हुए मां से पूछा - "मम्मा कैसी हो?" अनामिका ने हाथ हिलाने की चेष्टा की,लेकिन हाथ हिला नहीं पाई। थकान से भरी चारु मां को नींद में जानकर थकी थकी सी अपने कमरे में चली गई। अनामिका चिरनिद्रा में समा गई थी।

लेखिका, कवयित्री
रश्मि सिंह
राँची – झारखंड, भारत

फादर्स-डे

राकेश के मोबाईल पर बार बार एक नंबर से फोन आ रहा था ,पर पता नहीं वजह व्यस्तता थी या कुछ और , वह फोन नहीं उठा रहा था या नहीं उठा पा रहा था।दरअसल आज बच्चों और पत्नी ने मिलकर "फादर्स डे" मनाने की तैयारी कर रखी थी।दोनों बच्चे अभी अपने पैरों पर खड़े नहीं थे पर फादर्स डे पर पापा के लिए ब्रांडेड शर्ट और महंगी मोबाईल ऑनलाईन मंगाई गयी थी जिसका भुगतान जाहिर है उनके,यानि राकेश जी के क्रेडिट कार्ड से ही हुआ था, पर बच्चों की भावना मायने रखती थी ,भले फिर वो फोन बेटा ही इस्तेमाल करे पर रहेगा तो पापा का ही।शानदार केक भी आया था जिसे राकेश को काटना था।अब ये बात और है बिचारे मधुमेह और हाई ब्लडप्रेशर के मरीज हैं और वो सब वर्जित है उनके लिए।पर बात यहाँ उसे स्पेशल फील कराने की थी जिसमें उनकी पत्नी और बच्चे कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। बेटे ने तो सुबह ही एक पेज का भावपूर्ण संदेश भी फेसबुक पर डाल दिया था जिसे ढेरों लाईक्स ,कमेंट्स मिल चुके थे।इन सब में अभिभूत राकेशजी बार बार आते उस कॉल से परेशान हो बार बार काट दे रहे थे।ये नंबर दरअसल उनके पिता का था जो शहर के बाहर स्थित एक वृद्धाश्रम में जीवन का आखिरी वक्त बिता रहे थे।पत्नी ने दुनिया को काफी पहले ही अलविदा कह दिया था ,और घर में राकेशजी के बड़े होते बच्चों को और उनकी पत्नी को स्पेस और प्राईवेसी में खलल पड़ रहा था इसलिए वृद्धाश्रम ही एकमात्र विकल्प था। राकेशजी अपने माता पिता की इकलौती संतान थे ।अच्छी नौकरी और पिता का बनाया घर भी मिल गया था तो रुपये पैसे की कोई कमी तो थी नहीं ।आखिर बच्चों के भी अरमान थे अपने पिता के लिए.....।

खैर शानदार डिनर कर के वे सब बेहद थककर घर लौटे और सोने गये तो फिर उसी नम्बर से फोन आया।इस बार पत्नी की नजरें बचाते हुए उन्होंने फोन उठा लिया । पर उधर से उनके पिता की जगह आश्रम के संचालक की आवाज थी, " गिरिराज जी (राकेशजी के पिता)का देहांत हो गया ।उन्हें बेचैनी महसूस हो रही थी तो बेटे से बात करने को बेचारे लगातार फोन कर रहे थे, अस्पताल ले जाने के पहले ही हृदयगति रुक जाने से उनका निधन हो गया है।कृपया आकर अपने पुत्रधर्म का पालन करें,ताकि उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो। "

डॉ. उर्मिला सिन्हा
राँची-झारखंड, भारत
वरिष्ठ साहित्यकार

गंवार

भोला अपनी ओर से सबको खुश रखने का प्रयास करता था। उसे अपनी हैसियत मालूम थी। उसके माता-पिता ने इसी हवेली में जीवन खपा दी। अब भोला की बारी थी। बूढ़े मालिक उसे पुत्रवत प्यार करते थे। लेकिन नई पीढ़ी की सामने भोला का कोई कीमत नहीं थी।

बल्कि उसकी शराफत, पूरे हवेली पर पकड़ उनकी आंखों में खटकता था।

मालिक के दोनों बहरवांसु बेटे अपने फ़ैशनपरस्त बीबीयां और उच्छृंखल बच्चों के साथ आये हुये थे।

"पिताजी हमें महानगर में पेंटहाऊस खरीदना है... अतः मेरा हिस्सा बेंचकर पैसा मुझे दे दीजिए "छोटा बेटा शुरू से हिसाब-किताब में तेज था। "

"अभी मैं जिंदा हूं... मेरे हजार खर्चे हैं और तुम्हारा हिस्सा बेंच तुम्हें पैसे दे दूं..."वृद्ध पिता उठकर बैठ गये।

"और क्या... आपके बाद यह सब हमारा ही तो है... मुझे भी कीमती कार खरीदनी है"बड़े बेटे ने छोटे के हां में हां मिलाई।

जमीन बेचने की चर्चा सुन दोनों की पत्नियां मोर्चा संभालने निकट खिसक आई।

वृद्ध पिता ने आंसू भरी निगाहों से पत्नी की तस्वीर देख बुदबुदाये, "मैंने समझा था हमारे बेटे मेरा सेवाटहल, कुशलक्षेम पूछने आये हैं लेकिन इन्हें तो इस पुश्तैनी संपत्ति की पड़ी है जो पहले ही इन्हें पढाने- लिखाने...शादी -विवाह ऐश-मौज में बिक गया या गिरवी पड़ा है। "

"हम पर कौन सा खर्चा हुआ आपका "दोनों बेटे निर्लज्जता पर उतर आयें।

"ले-देकर यह हवेली बची है... अगर इसे बेंच दिया तब मैं कहाँ रहूंगा। "वृद्ध पिता रो पड़े।

"अपने पास रखोगे मुझे "पिता की बात सुन... वास्तविकता से पाला पडते ही दोनों बेटे... नई चाल सोचने लगे।

उसी समय भोला मालिक की दवा और गिलास में पानी लेकर पहुंचा। "मालिक खा लीजिए। "

"नहीं खाना मुझे... अब जीने की लालसा नहीं है। "वृद्ध हिलक पड़े।

भोला उन्हें बहलाने का प्रयास करने लगा। दोनों भाई भोला पर फट पड़े, "लालची, गंवार कहीं का... भाग यहाँ से... तुम्हारी मक्कारी हम समझते हैं... गंवार। "

भौंचक्का भोला अपना बोरिया बिस्तर समेटने लगा। अचानक बाबूजी चीख उठे, "गंवार, लालची भोला नहीं बल्कि मेरे औलाद तुमलोग हो... मां के मरने के बाद झांकने तक नहीं आये... मैं जीता हूँ या मरता हूं... इस भोला ने नमक का सैयत दिया और मेरी हर प्रकार से देखभाल की। तुमलोग मुझे रखोगे नही भोला को अपमानित कर निकाल दोगे ताकि मैं विवश होकर हवेली बेंच तुम्हें पैसे दे दूं... और मैं इस बुढापे में दरदर की ठोकरें खाऊं। "

बाबूजी ने भोला का हाथ कसकर पकड़ लिया। दाल गलती न देख बेटों ने सपरिवार वापसी में ही भलाई समझी।

ऐश्वर्या संपन्ना,
मुंबई भारत
लेखिका, कवयित्री, मंच संचालक, SYH सचिव

मदर्स डे

परी के स्कूल में मदर्स डे की ज़ोर- शोर से तैयारी चल रही थी।मैम ने कहा था 'मदर्स-डे के अवसर पर सबकी
मम्मी आएँगी और बच्चे उन्हें सरप्राइज देंगे।
किट्टू अपनी मम्मी के लिए सुंदर सी पेंटिंग बना रही थी, वहीं रोहन
गाने का अभ्यास कर रहा था। कुछ बच्चे अपनी मम्मी के बारे में कुछ बोलना चाहते थे पर परी अभी तक कुछ
सोच नहीं पा रही थी कि वो मम्मी के लिए क्या करे। आखिर दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे क्या सोच सकते हैं?
मदर्स-डे के दिन बच्चे बड़े ही उत्साह के साथ अपने स्कूल पहुँचे। सबकी माँए भी आ चूकीं थीं। सबसे पहले बच्चों
ने माँ के लिए सुंदर सा गीत गाया। फिर बारी-बारी से सरप्राइज गिफ्ट अपनी मम्मी को दे रहे थे। सारी माँए भावुक हो रही थी।
परी चुपचाप एक किनारे खड़ी थी जब मैम ने कहा "परी तुम भी कुछ सरप्राइज दो मम्मी को"।
नन्हीं परी ने आकर कहा "मेरी मम्मी सुबह से शाम तक घर और ऑफिस का काम करते रहती हैं , यहाँ तक शनिवार और रविवार को भी मम्मी को आराम नहीं मिलता है। मैं अपनी मम्मी को एक दिन आराम देना चाहती हूँ।"
नन्हीं परी के मुँह से इतनी बड़ी बात सुनकर सब ज़ोर -ज़ोर से ताली बजाने लगे और मम्मी ने उसे भावुक हो गले लगा लिया।

शिखा पोरवाल
'मनस्विनी'
लेखिका, कवयित्री एवं शिक्षिका

आत्मग्लानि

आज बहुत दिनों के बाद बाहर अपनी सहेली ज्योति के साथ शापिंग के लिए निकली। शापिंग खत्म करने के बाद हम दोनों यूँ ही एक काफी शाप में बैठ गयी। सामने की टेबल पर नजर गई तो ऐसा लगा कि अमीत बैठा है। ज्योति ने भी देखकर कहा हाँ ये तो अमित ही है। आज भी वैसा ही लम्बा, दुबला पतला आकर्षक व्यक्तित्व का धनी। न जाने क्यों मैं अतीत में कालेज के दिनों में पहुंच गई।बखिया की तरह पूराने दिनों को उधेड़ने लगी।
मैं और अमित साथ ही में पढ़ते थे। हमारा चार - पाँच फ्रेंड्स का ग्रुप था। सारे समय हँसी – मजाक, मौज मस्ती में रहते थे। मुझे ज्योति और सारी फ्रेंड्स अमित के नाम से चिढ़ाती और कहतीं कि वो तेरे में ज्यादा ही इन्ट्रेस लेता है। ये बात सच भी साबित हो गई जब उसके बर्थडे पर उसने सिर्फ मुझे उसके घर पर बुलाया और अपनी मम्मी से मिलवाया। बहुत अच्छा और करीने से रखा गया हर सामान आज भी मेरी आँखों के सामने घुम गया। उसकी मम्मी भी सरल, सौम्य पर रौबदार व्यक्तित्व वाली महिला। ड्राइंग रूम में एक बड़ी सी तस्वीर पर हार लगा था। वो तस्वीर उसके पापा के नहीं होने का संदेश दे रही थी। उसकी मम्मी ने बहुत ही स्वादिष्ट व विविध प्रकार का भोजन बनाया था। साथ ही लाओपेला की क्राकरी व बड़ा सा डाइनिंग टेबल और सजावट उनके अमीर होने का दावा कर रही थी। खाना खाने के बाद नौकर ने सारी सफाई मिनटों में करके डिजर्ट सर्व कर दिया। उसकी मम्मी बहुत आत्मीयता व सौम्यता से बात कर रही थीं। बातों ही बातों में उन्होंने बताया कि अमित के पापा अमेरिका में बहुत बड़े डॉक्टर थे। अचानक दिल का दौरा पड़ने के कारण वो हमें छोड़ कर चले गए। हम लोग भारत नानाजी के पास आ गये। नानाजी ये सदमा न सह पाए और एक ही साल में दो हादसे सहन करने पड़े। नानाजी अपनी सारी दौलत सुमीत, अमित के छोटे भाई के नाम कर गए। कार, नौकर बड़ा सा आलीशान घर ये सब देखकर ही समझ आ रहा था कि कमी किसी चीज की नहीं। उतनी देर में नौकर ने कहा कि छोटे साहब (सुमीत) का वॉक पर जाने समय हो गया है। अमित की मम्मी ने कहा उसे ले जाओ मैं आज वॉक पर नहीं जा रही हूँ। अमीत की मम्मी ने कहा "कि देखो बेटा अमित तुम्हें बहुत पसन्द करता है। मुझे भी अमित की पसन्द पर कोई एतराज नहीं है।" तभी व्हीलचेयर पर सुमीत आ गया। मेंन्टली चैलेंज एडल्ट पर उसकी हरकतें कुछ अजीब सी । तब इतनी समझ और परिपक्वता कहाँ थी कि समझते ये तो भगवान का ही रुप है इनसे क्या डरना इसमें इनका क्या दोष है। सुमित के जाने के बाद अमित की मम्मी लगातार बोलती जा रही थी कि हमें ऐसी लडकी चाहिए जो कि सुमित का भी पूरा ध्यान रख लें। अमित ने भी मम्मी की हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा कि मेरे परिवार में सुमित के अलावा और कोई नहीं है। मैं दुनियाँ की हर खुशी उसको देना चाहता हूँ। मैं चुप्पी साध के सब कुछ सुन रही थी। मेरा दिमाग उस समय सुन्न सा हो गया। मेरे जेहन में तूफान, भूचाल सा आ गया था। ये सबकुछ मेरे लिए अकल्पनीय था। ये दिल इस तरह की जिम्मेदारियों को लेने के लिए तैयार नहीं था। शायद उम्र का ही तकाजा या बचपना था। दुश्वारियां अनगिनत, आवश्यकताएँ और अभिलाषाएँ भी बहुत परंतु इस तरह की सेवा भावना की मानसिकता के लिए ये रिश्ता नामंजूर था। अमित के घर से आकर दिल और दिमाग में जबरदस्त अनबन चली आखिरी जीत दिमाग की हुई।
तब कहाँ आता था, धैर्य के धागे में ख़्वाब पिरोना। मैंने धीरे-धीरे अमित से दूरी बढ़ा ली। मैं चाहकर भी अपनी मोहब्बत को अंजाम नहीं दे पाई। बर्फ हो गए थे हम दोनों के मिलने-जुलने के करार। कॉलेज खत्म होने के बाद मेरी भी शादी दीदी के देवर जो कि बैंक में कार्यरत थे, से हो गई। एक मध्यवर्गीय खींचतान की जिंदगी में सुकून की कस्तुरी तलाशने अग्नि को साक्षी मानकर चल पड़ी। तब किसे पता था अरमान हर किसी के पूरे नहीं होतें। कर्म का फेरा मेरी ही कोख से जन्म ले चुका था। मैंने मेंटली चैलेंज बच्चे को जन्म दिया और हर दिन आत्मग्लानि में जीकर भी मर-मर कर जीती हूँ ।आज अमित को देखकर घाव फिर हरे हो गए। इच्छा हुई कि उससे माफी मांगकर आत्मग्लानि के बोझ से मुक्त हो जाऊँ। पर इतनी हिम्मत नहीं जुटा पाई और फिर से जीत दिमाग की हुई।

डोली शाह
जिला- हैलाकंदी
असम-भारत

अपनत्व

बल्लभ जानकी तमिलनाडु के छोटे से गाँव वेल्लागवी में एक प्रतिष्ठित होम्योपैथिक डॉक्टर थे, जिसकी वजह से उन्होंने बच्चों की रुचि देख उच्च शिक्षा के लिए हर संभव प्रयास किया। यहाँ तक कि बड़े बेटे नवीन रामा को १२ वीं के बाद ही आगे पढ़ाई के लिए टोक्यो जापान के शिबरूयन नामक शहर भेज दिया। उसने वहीं से बी. टेक. की पढ़ाई पूरी कि और विदेशी कंपनी कि एक नौकरी में भी लग गया। वह सपरिवार वहीं बस गया । शुरू में तो उसे घर आने के लिए छुट्टी भी मिल जाती थी। लेकिन वक्त गुजरने के साथ ही उसे छुट्टी मिलने में तकलीफ होती गई और वह करीब एक साल तक घर आने में असमर्थ रहा।

तभी एक दिन उसकी माँ को बेटे को की देखने की इच्छा व्यक्त करने पर बल्लभ जी पत्नी (संध्या) सहित बेटे के पास शिबरियन शहर पहुँचे। वहाँ माता-पिता को देख नवीन की खुशी का ठिकाना ना रहा। एक नए शहर में हर दिन वह उन्हें यहाँ - वहाँ घुमाता। सप्ताह बाद ही नये साल का उत्सव था। नवीन रामा के कहने पर टोक्यो के कुछ ही दूरी पर स्थित योयोगी पार्क घूमने जाने का निश्चय हुआ। आस-पास खाने-पीने की व्यवस्था न देखकर नवीन रामा ने एक अच्छे रेस्टोरेंट से रास्ते से ही मोमो के साथ खाने- पीने की अन्य सामग्री भी ले ली। वहाँ इधर-उधर घूमना फिरना, मस्ती करने के साथ-साथ प्रकृति के साथ रूबरू होने का भी अवसर मिला। वहाँ बड़े-बड़े हाथियों का झुंड , चीते की दहाड़ ,जिराफ के लम्बे गले को देखते हुए चलते रहे, नजरें हटाने का मन बिल्कुल ही नहीं हो रहा था वहीं दूसरी ओर बड़े-बड़े गिद्ध, तोतों का कलरव , मयूर का नाचना ,पोखर में रंग- बिरंगी तैरती मछलियाँ, देखते ही बन रही थी। कुछ समय बाद वे खुले मैदान में बैठकर भोजन का पैकेट खोल ही रहे थे कि माँ चुपचाप बैठी मेरे पोटलों को निहार रही थी। इतने में नवीन रामा ने भोजन तैयार करके नजर उठायी ही थी कि माँ की छलछलाई नजरें उसकी नजरों से मिल गई।

" क्या हुआ माँ कहीं चोट लग गई क्या ?"

"अरे नहीं बेटा ,"

"तो बताओ ना क्या हुआ?"

"कुछ नहीं बस माँ की याद आ गई। कैसे साल की पहली तारीख को प्रातः के छोले भटूरे से लेकर दोपहर का भोजन, फिर रात्रि का भोजन अपने हाथों से बना कर सब बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर आराम से खाते और माँ के हाथों का स्वाद तो पूछो मत !"

"अरे! मेरे विवाह के बाद मेरे जाने पर भी माँ ऐसा करती थी।"

"ना जी, आपने भी तो देखा है, सब कुछ अपने ही हाथों से बनाती। "

"चाहे कौवे के बोलने से पहले ही उठकर बनाना पड़े। सचमुच वह भी क्या दिन थे।"

"मैं भी माँ के साथ क्या नहीं बनाती थी!"

"क्या सर्दियों में गोंद के लड्डू से लेकर आंवले का मुरब्बा और इडली, डोसा तो पूछो ही मत, हर दिन एक नई डिश।"

"विद्यालय से लौटकर आते ही पूछती आज क्या स्पेशल बना है खाने को।"

"लेकिन माँ आपकी मम्मी तो इतना कुछ बनाती थी तो आप क्यों नहीं ,आप तो हमें कुछ नहीं बना कर खिलाती?"

"बेटा आज तो सब कुछ खरीद कर ही मिल जाता है तो बनाने की जरूरत ही नहीं पड़ती।"

"माँ आप सही कह रही हो। खरीद कर सब कुछ तो मिल जाता है लेकिन वह अपनत्व नहीं मिलता, जिसके कारण लोगों के बीच आज अपनतव रहा भी नहीं!"

"हां बेटा यह तो तुमने 100 टके की बात कही है लेकिन अब यह शरीर इतना चलता भी नहीं कि हर रोज नयी - नयी"

"अरे माँ , शुरु तो करो, हम है ना साथ देंगे।" "ठीक है चलो आज शाम से रोज़ नाश्ता मेरी तरफ से " "वह मैं भी दफ्तर से जल्दी ही जल्दी आ जाया करूंगा। फिर हर शाम सब मिलकर"

"माँ छोटे को भी यहीं बुला लेता हूँ । अब मैं आप लोगों को यहाँ से जाने नहीं दूंगा। यहीं रहेंगे सब मिलकर एक साथ, खूब मस्ती करेंगे!" "छोटी सी जिंदगी है, सब मिलकर रहेंगे, मौज मस्ती करेंगे।"

इतने में नवीन ने छोटे भाई को तुरंत फोन करके कहा- " अरे! भाई, तू भी जापान की टिकट बुक कर ले और यहीं आ जा ! यहीं नौकरी ढूँढ लेना, सब मिलकर एक साथ रहेंगे ।" बच्चों की खुशी देख माता-पिता भी बहुत खुश हुए और सभी ने वहीं जापान के शिबरियन शहर में एक साथ रहने का निश्चय किया।

अनु निधि
स्टॉकहोम

भगवान मेरे साथ

(संस्मरण)—

ये १९९५ (उन्नीस सौ पंचानवे) की बात है, हम बड़ोदरा में रहने गए थे । वहाँ से मेरे पति को कुछ समय के लिए दुसरे शहर काम के लिए जाना पड़ा । मैं अपनी बेटी को लेकर वहीं बड़ोदरा में रहती थी । मेरे ऊपर ही सारे कामों की जिम्मेदारी आ गई । एक दिन मैं स्कूटर से बेटी को लेकर सामान खरीदने बाज़ार गई थी। वहाँ एक जगह मैंने स्कूटर खड़ा किया और सामान लेने चली गई । दो घंटे बाद जब मैं वापस आई तो स्कूटर वहाँ नहीं था । मैं उस शहर में नई-नई थी, छोटी सी बेटी को लेकर कहाँ भटकूँगी सोच कर मन घबरा रहा था । वहाँ के लोगो ने बताया कि आपका स्कूटर पुलिस टो करके ले गई है । आपको फ़लाना पुलिस थाने में जा कर स्लेकूटर लेना पड़ेगा क्योंकि आपने नो पार्किंग में अपनी गाड़ी खड़ी की थी, पर मैंने देखा की वहाँ कोई नो पार्किंग का बोर्ड नहीं था बस मिट्टी से चौकोर बनाया हुआ था । तभी वहाँ पर सफ़ेद कुर्ते पजामे में एक व्यक्ति आया और उसने बड़ी विनम्रता से कहा "आप चिंता ना करें, मैं आपको पुलिस स्टेशन लेकर चलता हूँ आपको कोई समस्या नहीं होगी l" पर मुझे थोड़ा संकोच हुआ। मैं ऐसे किसी पर कैसे विश्वास कर लूँ ? उनको मेरा संकोच समझ में आ गया और उन्होंने मुझे एक ऑटोरिक्शा में बैठकर उनके पीछे आने को कहा । उन्होंने पुलिस वाले से बात की और मुझ से जुर्माना भरवा कर मेरा स्कूटर दिलवा दिया । मैंने अपनी बेटी को बिठा कर स्कूटर जैसे मोड़ और धन्यवाद कहने के लिए देखा, तो वहाँ कोई भी नहीं था । मैं ४ साल वहाँ रही और मेरी आँखें उन्हीं व्यक्ति को ढूँढती रहती थीं , पर वे कभी नहीं दिखे । सच में साक्षात् भगवान सहायता करने आये थे l अब जब भी मैं घर से बाहर जाती हूँ, हाथ जोड़कर प्रार्थना करके निकलती हूँ कि मेरे साथ रहना l भगवान मेरे साथ हैं , यह सोच कर मैं सारी समस्याओं पर
विजय पा लेती हूँ।

"संवाद —व्यक्ति से व्यक्तित्व बनने का सफ़र", लाइव प्रसारण संख्या 198 में इस बार शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच की शोभा बढ़ाने आई थी – एक मशहूर शायरा, मज़बूत शख़्सियत, रूमानी आवाज़ की मल्लिका , लघु फिल्म की प्रोड्यूसर तथा बहुमुखी प्रतिभा की धनी श्रीमती श्वेता सिन्हा 'उमा', मास्को रूस से और उनके साथ संवाद स्थापित किया मंच की संस्थापक मोनी बिजय, नेपाल से अपने भारतीय सहयोगी एडमिन ऐश्वर्या संपन्ना मुंबई के साथ। संवाद द्वारा हम सब ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व से परिचित होते हैं। आप इस प्रोग्राम का लाइव प्रसारण 'शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच' के पेज पर भी देख सकते हैं।
HTTPS://WWW.FACEBOOK.COM/SHARE/V/TYDRHB71M1GDFC8V/?MIBEXTID=OFDKNK

श्वेता सिंह 'उमा'
लेखिका, कवयित्री एवं शिक्षिका

प्रस्तुत है साक्षात्कार के कुछ अंश

मोनीबिजय: श्वेता जी, कृपया अपने प्रारंभिक शैक्षणिक योग्यता व पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए।

श्वेता सिंह उमा : मैं मूलतः बिहार से हूं और मेरे पापा बिहार पुलिस में डी.एस. पी थे । हर तीन वर्षों में उनका स्थानांतरण हो जाता था इसलिए मेरी शिक्षा बिहार झारखंड दोनों जगह से हुई। मैं चार भाई बहनों में सबसे बड़ी हूं। स्कूली शिक्षा रांची से और कॉलेज की शिक्षा पटना से हुई। मैंने राजनीति शास्त्र , इतिहास में क्रमश स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण की है साथ ही फैशन डिजाइनर का भी कॉर्स किया है। विवाह उपरांत मैं मॉस्को आ गई और वहां भाषा से संबधित कोर्स किया । साथ ही फैशन डिजाइनिंग का कोर्स भी किया। मेरे दो बेटे हैं अब तो बड़े हो गयें हैं , दोनों बच्चे अमेरिका में पढ़ रहे हैं। अब मैं बिल्कुल फ्री हूं मेरे पास अभी समय ही समय है। मेरे पति और बच्चों ने क़दम-क़दम पर मेरा साथ दिया और हौसला अफ़जाई की है । अगर आपके परिवार के साथ मज़बूत रिश्ता हो तो आप उस फ्रंट से बिल्कुल निश्चिंत रहते हैं। जब सामने वाला आप से ज्यादा आप पर विश्वास करता है वहीं मेरे साथ हुआ मेरे परिवार को मुझसे ज्यादा उनको विश्वास है। आज मैं जो कुछ भी हूं मेरे पापा मम्मी और पति और बच्चों की वजह से हूं । यही मेरा छोटा सा परिवार संसार है मैं सोशल मीडिया पर परिवार के बारे में ज्यादा बात नहीं करती हूं पर जब आपने पूछा तो पूरी ईमानदारी से मैंने बता दिया। मेरे लिए मेरा परिवार बहुत कीमती चीज है जिसे हम पूरी दुनिया से छिपाते हैं।

ऐश्वर्या संपन्ना : जब बच्चे बड़े होकर शिक्षा के लिए निकल जाते हैं तो अचानक एक खालीपन आ जाता है पर उस बात को आपने सकारात्मक रूप देकर आगे बढ़ रही हैं उसके लिए आप बधाई की पात्रा हैं।

श्वेता सिंह उमा: बहुत धन्यवाद ऐश्वर्या जी ,मैं हमेशा से ये मानती हूं जैसे हम बच्चों की परवरिश बड़े मनोयोग से करते हैं वैसे ही बच्चे भी हमारा ध्यान रखते हैं और हमें आगे बढ़ने में हमारी मदद करते हैं।

मोनी बिजय : श्वेता जी को संगीत के साथ – साथ साहित्य से भी लगाव है तो क्यों ना हम एक ग़ज़ल इनसे सुनें ।
श्वेता सिंह उमा : जी जरूर।
(गज़ल समाप्ति पश्चात तालियों के साथ स्वागत)

श्वेता जी द्वारा गाई ग़ज़ल

होश वालों की सलाहों से किनारा कीजे
चश्म-ए-मयगूँ के नशे में ही गुज़ारा कीजे

मख़मली ख़्वाब तेरे नाज़-ओ-अदा में है पले
उनको पलकों से ज़मीं पर न उतारा कीजे

दिल की वीरानियों से ख़ुद को बचाना हो अगर
गाहे गाहे तो बहारों का नज़ारा कीजे

हूँ ख़तावार तेरा आ के सज़ा दे मुझको
जो सज़ा दें तो ख़ता फिर से दोबारा कीजे

माना मेहनत से तू आज बदल लेगा पर
अपनी तक़दीर इबादत से निखारा कीजे

कब तलक हिज्र की तन्हाई में घुटते रहना
जोश-ए-वहशत से कभी उनको पुकारा कीजे

रूह प्यासी है उमा पैकर-ए-दहलीज़ों में
इसको शादाब करूँ कैसे इशारा कीजे

मोनी बिजय: जहां तक मैं आपको जानती हूं किसी भी काम को जब आप हाथ में लेती हैं बहुत ही खूबसूरती से उसमे तारतम्यता बैठाती हैं। आप एक कलाकार हैं, संगीत का भी शौक रखती हैं और एक मशहूर साहित्यकार भी हैं । कैसे कर लेती है आप इतना सबकुछ?

श्वेता सिंह उमा: ज़हां तक साहित्य का सवाल है लिखने का शौक मुझे बचपन से ही था। मेरे पापा लिखते भी थे । पर उनको सुनना बहुत पसंद था वो मुशायरा सुनते थे, अलग-अलग साहित्यकारों को सुनते थे। घर में हमेशा साहित्य का माहौल रहा है। दादाजी भी अपने समय के प्रसिद्ध स्कॉलर रहे हैं। माहौल मुझे घर से ही मिला मै भी ज्यादा बोलती नहीं थी। मेरे दोस्त भी कम थे, तो अपनी भावनाओं को डायरी मे लिखती थी । पहले तुकबंदी से शुरू की, पर मुझे इंटरेस्ट तब आया जब मैंने अच्छे-अच्छे शायरों को पढ़ना शुरू किया । पढ़ने के बाद एक अलग इंटरेस्ट आता गया । आप उसमें डूबते चले जाते हैं मैंने उनकी पूरी हिस्ट्री पढ़ी उनकी बॉयोग्राफी पढ़ी । फिर स्कूल कॉलेज में अलग-अलग इवेंट में भाग लिया । ज्यादातर मैं लिखती थी और अपनी डायरी में रखती थी मुझे हमेशा से ये लगता था कि लोगो को पसंद नहीं आयेगा। मेरे अंदर बिल्कुल आत्मविश्वास नहीं था। करते -करते मेरे पास अच्छी खासी डायरी हो गई पर मै किसी को दिखाती नहीं थी । एक बार मेरे पापा के कुछ मित्र आये मैंने उनके सामने पढ़ा तो उनको बहुत पसंद आया । जब आपकी लिखी हुई बातें लोगों को पसंद आती हैं उससे भी ज्यादा जो आप लिखते हैं वो उनको समझ में आती है तो ये बात आपमें आत्मविश्वास भर देता है। धीरे-धीरे मैं मंचों पर जाने लगी । अलग-अलग अखबारों में मेरे आर्टिकल आने लगे, साझा संकलन आया । अभी मेरी एक पुस्तक भी आ रही है। आपने पूछा ना ऐश्वर्या जी आप किस विधा में लिखती हैं। पर मुझे लगता है कि जब मन में विचार आते हैं तो विधा भी अपने आप आ जाते हैं। नज़्म हो माहिया हो ग़ज़ल हो पर ज्यदातर मैं ग़ज़ल लिखती हूं।

...साक्षात्कार के अंश

ऐश्वर्या संपन्ना: साहित्य में आपकी रुचि कब से हुई और आप किस विधा में लिखती हैं?

श्वेता सिंह उमा: जहां तक साहित्य का सवाल है मैं बचपन से लिखती हूं। घर में हमेशा साहित्यिक माहौल था , पिताजी ग़ज़ल मुशायरा सुनने का शौक रखते थे और दादा जी एक जाने-माने रचनाकार थे। मितभाषी होने के कारण अपनी भावनाओं को शब्दों का रूप देना शुरू किया। ज्यादातर मैं ग़ज़ल लिखती हू।

मोनी बिजय : आप आर. जे. कैसे बनीं ? अगर आप इस बात को हमारे दर्शकों के साथ साझा करना चाहें ...?

श्वेता सिंह उमा : जी, बिल्कुल मुझे मॉस्को में किसी ने मेरी आवाज सुनकर आर जे का ऑफर दिया था। मैंने फरमाइशी गीतों का कार्यक्रम शुरू किया था रूस के लोगों के लिए । पर ये कार्यक्रम इतना लोकप्रिय हुआ कि दुनिया भर के लोग इस कार्यक्रम से जुड़ने लगे। ये सुपरहिट कार्यक्रम तीन साल तक लगातार चला । उसमें बस दिल की बातें करती थी मैं , कुछ सोचती नहीं हूं मेरा कोई खाका नहीं होता है बस कलम उठाया और लिखना शुरू कर दिया , मैं बस गाना सुनती थी उसके ऊपर डॉयलॉग लिखती थी और गाने के पहले उसे लगा देती थी । उसके बाद एक और कार्यक्रम बॉयोग्राफी का शुरू किया था जिसमें आर्टिस्ट एवं नामी गिरामी हस्तियों के साथ शुरू किया गया था । वो भी बहुत सुपरहिट हुआ है। अभी मेरी फिल्म के कारण मैं बहुत व्यस्त हो गई हूं । किसी भी कार्यक्रम के लिए उसकी तैयारी में काफी समय देना पड़ता है। जल्दी ही हम शुरू करेंगे का कुछ कार्यक्रम और कार्यक्रम हमारे जेहन में है उसपर भी विचार चल रहा है।

मोनीबिजय : आप एक फिल्म की प्रोड्यूसर भी हैं। कुछ अपने फिल्म के बारे में दर्शकों को बताइए।

श्वेता सिंह उमा : मेरी क्रियेटिव पैराडाइज प्रोडव कंपनी है। इन्होंने एक शॉर्ट फिल्म बनाई है जो लुप्त ह हुई परंपरा स्वांग के बारे में बनी है अभी इनकी फि कांस फिल्म फेस्टिवल में गई है। इसलिए अभी खुल फिल्म के बारे में बात नहीं कर सकती हैं।

मोनी बिजय: मैं यहां दर्शको के मैसेज लेना चाहूंगी सब तो जानते ही हैं श्वेता जी को भी ये बात मालूम दर्शक दीर्घा से बिजय कोईराला जी लिखते हैं आप बिल्कुल माधुरी दीक्षित जैसी लगती हैं।

ऐश्वर्या संपन्ना : मैं भी यही कहना चाह रही थी आप बिल्कुल माधुरी दीक्षित जैसी लगती हैं।

श्वेता सिंह उमा : अब इसपर मैं क्या बोलूं ? मेरे घर में तो कभी किसी ने नहीं कहा पर हां जब मैं मंचों पर जाती हूं तो वहां लोग मुझे जरूर कहते हैं । मैं बस इतना कह सकती हूं इशशश (हंसते हुए)।

मोनी बिजय: गुणों की खान हैं हमारी श्वेता सिंह उमा जी जैसे दुर्गा मां के कई हाथ होते हैं वैसे ही श्वेता जी के भी हैं। इनके तो नाम में भी उमा लगा हुआ है उसके बारे में भी हम बात करेंगे ।

श्वेता सिंह उमा: जी मोनी जी 'उमा' मेरे पापा का नाम है ये नाम मेरे लिए बहुत लकी रहा है जब से ये नाम मैंने लगाया है मुझे लगता है मेरे पापा का आर्शीवाद मुझे मिल रहा है।

मोनी बिजय: वाह बहुत ख़ूब, अच्छा मूर्तिकला के बारे में भी कुछ बताएं।

श्वेता सिंह उमा: मैं मूर्तिकार के रूप में एक व्यवसाई के तौर पर कार्य करती हूं। मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूं कि जहां मैं रह रही हूं वहां आर्ट सिखने का बहुत स्कोप है चाहे वो पेंटिंग हो, संगीत हो, मूर्तिकला सीखना चाहें यहां बहुत मंझे-मंझे कलाकार हैं। आपको जाना है और बस सीखना है। हां आपको उनकी परिक्षा पास करनी पड़ती है जब मैं वहां गई तो चूंकि मेरा हाथ आर्टिस्टिक है तो मैं उनकी परिक्षा बहुत अच्छे से पास कर गई तो उनलोगों ने मुझे अपनी टीम में ले लिया।ये सब ब्राऊंच की मूर्तियां होती हूं और एक-एक मूर्ति का वजन 50 से 60 किलो होता है और एक-एक मूर्ति को बनाने में 6 से 7 महीने लगते हैं । मैं ओम का जाप करते हुए गढ़ती जाती हूं।अपने विचार और आइडिया के आधार पर नये नये प्रयोग कर मूर्तिकला में नयापन लाने की कोशिश करती हूं। मैंने भगवान बुद्ध, शिवशक्ति और उसमें बहुत सारे अपनी सोच डाला। शिवशक्ति की मूर्तियां मार्केट में उसकी काफी मांग थी । लोगो ने उसको काफी पसंद किया।

ऐश्वर्या संपन्ना: मूर्ति बनाने की प्रक्रिया बहुत जटिल होती है?

श्वेता सिंह उमा: मूर्ति बनाने की पूरी प्रक्रिया तीन चरणों में होती है। पहले उसे मिट्टी में ढाला जाता है फिर उसमे वैक्स भरा रहता है आखिर में उसे ब्रांच में ढालकर उसे तराशा जाता है। आखिरी प्रक्रिया बहुत सावधानी पूर्वक किया करना पड़ता क्योंकि उसके सूक्ष्म कण हवा में उड़ते हैं।

मोनी बिजय: चलते चलते ये जानना चाहेंगे कि आपके आगे की क्या योजनाएं हैं? और आगे हमारे मंच के माध्यम से क्या संदेश देना चाहेंगी?

श्वेता सिंह उमा: जी जरूर जरूर जैसा आपने पूछा आपकी आगे की क्या योजनाएं हैं । मै अभी जिंदगी जी रही हूं । मुझे हमेश से शौक़ रहा है पूरी दुनिया घूमूं, परिवार के साथ तो मैं बहुत घूमीं हूं सोलो ट्रिप पर जाऊं ।अब मैं बैग पैक उठाती हूं निकल जाती हूं कहां रूकना है सब वहीं जाकर डिसाइड करती हूं। जब से मैंने सोलो ट्रेवलिंग शुरू की है मुझे प्रकृति से इतना प्यार हो गया है, शायद ये चीज मैं मिस कर रही थी। मैं सबको कहूंगी परिवार के साथ जाना एक अलग बात है पर सोलो ट्रेवलिंग एक नशा है जो मुझपर चढ़ा हुआ है। इंडिया आती हूं तो एक जगह ढूंढकर रखती हूं, इस बार इंडिया आने पर मैंने स्पीति वैली का प्लान बनाया । अभी तुर्की होकर आई हूं।

रही आपके मंच से संदेश देने की बात आपके मंच का नाम ही शेयर योर ह्यूमैनिटी। ह्यूमैनिटी इतनी बड़ी चीज होती है ।

...साक्षात्कार के अंश

जब आप कोई अच्छा काम करते हैं अपने लिए अपने परिवार के लिए तो दायरा बहुत सीमित हो जाता है पर जब आप समाज के लिए कुछ करते हैं तो वसुधैव कटुम्बकम की भावना निहित होती है। ये सबके बस की बात नहीं है आप लोगों को हैट्स ऑफ।

आपके मंच के माध्यम से बच्चों को यह संदेश देना चाहूंगी कि अपनी जड़ों से जुड़े रहिए। बहुत आसान होता है दूसरे के कल्चर को आंख बंद करके उसके पीछे भागना। आजकल के जमाने में गैजेट बहुत जरूरी है पर जब भी मौका मिले तो किताबों से दोस्ती करो बुजुर्गों से बातें करो । हवा में मत उड़िये। जहां तक हो सके ह्यूमन बनने की कोशिश करो आज कल हम रॉबर्ट बनते जा रहे हैं। समय के साथ चलना समय की मांग है पर हमें अपनी जड़ो को पकड़ कर रखना ही पड़ेगा।

ऐश्वर्या संपन्ना; आजकल बच्चे हर क्षेत्र में हमसे बहुत दोनों आगे फिर भी कन्फ्यूजन में रहते हैं डिप्रेशन का शिकार हो रहे हैं? कोई संदेश बच्चो और उनके माता-पिता के लिए ?

श्वेता सिंह उमा : मैंने देखा है कि अगर बच्चों को हम 15 साल तक एक सकारात्मक माहौल में पालते हैं । अच्छे से सींचा है तो वो जमीन से जुड़े हुए रहते हैं। कोई भी मुसीबत आयेगी वो आसानी से हैंडल कर लेंगे। आपने सही बोला बच्चे बहुत टैलेंटेड हैं, उन्हें ईश्वर पर विश्वास करना सिखाएं। जुबां शमशीर से भी ज्यादा घातक होते हैं । वो हमेशा ब्रह्मांड में रहते हैं कभी ना कभी लौट कर आते हैं इसलिए हमेशा अपने बारे में अच्छा बोलो। बच्चों के दोस्त बनें, ताकि वो सारी बातें हमें अपने बारे में बतायें। बच्चे आपको देखते हैं कि आप अपने रिश्ते कैसे निभाते हैं। जब उनका समय आयेगा तो वो भी अपना रिश्ता उसी प्रकार निभायेंगे । आप अपनी जिंदगी में कितने ईमानदार हो ये बच्चे पल-पल देख रहे हैं। शेयर योर ह्यूमैनिटी मंच के माध्यम से मैं बोलना चाहती हूँ कि अगर दो चार लोग भी इसे अपनाएं तो सबकी जिंदगी खुशहाल होगी ।

मोनी बिजय: बहुत खूबसूरत बातें आपने कही श्वेता जी हमारे बच्चे किस दिशा में जा रहे हैं पहले अभिभावकों को समझना पड़ेगा। नारी शक्ति का स्वरूप आपने दिखाया। साहित्य के बारे में, संगीत के बारे में, आपकी कलाकृति के बारे में.. बहुत कुछ जानने का हमें अवसर मिला। आपका बहुत बहुत धन्यवाद अपना कीमती समय देने के लिए।

सभी श्रोताओं का भी बहुत बहुत धन्यवाद।

साक्षात्कार लेखन प्रस्तुति:-

ऐश्वर्या संपन्ना (सचिव)
शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल प्लेटफार्म

श्वेता सिंह उमा की गाई 'ग़ज़ल '

किसी भी हाल में कमतर नहीं हो
हो तुम गौहर कोई पत्थर नहीं हो

तुम्हारा रंग है यकता जहां में
सभी रंगों का तुम मेहवर नहीं हो

शफ़क़ बनकर चमक जाओ उफ़क़ पर
किसी का डूबता मंज़र नहीं हो

तुम्हारा मूल शक्ति से बना है
फ़क़त तुम भोग का पैकर नहीं हो

तुम अपने आप में तलवार सी हो
किसी के हाथ का ख़ंजर नहीं हो

उसे भी रास्ता दिखलाओ जाकर
जो अपने आप का रहबर नहीं हो

दिखा दो शान अपने हौसलों की
किसी से तुम उमा अबतर नहीं हो

(श्वेता सिंह उमा)

बाल - मंच
किड्स वर्ल्ड (शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी)

मोनी विजय (संस्थापक)

शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच ने बच्चों की प्रतिभाओं को नया विस्तृत आकाश देने के लिए एक अलग और नई दुनियाँ बनाई है, जिसका नाम है 'किड्स वर्ल्ड - शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी' । इस मंच के जरिए बच्चें खेल-खेल में ही कई रचनात्मक कार्य कर लेते हैं, जिसमें लेखन, पेंटिंग, ज्ञान-विज्ञान, रसोई, सेवा कार्य , नैतिकता से जुड़े किस्से-कहानी, ज्ञानवर्धक बातें एवं उन्हें मंच देना। इसके अलावा मस्ती की पाठशाला के साथ-साथ उनके हुनर को तराशना जैसे अनगिनत कार्यों को SYTC करती आई हैं।

अब 'भोर', ई -पत्रिका में भी बच्चों की प्यारी दुनियाँ को उतना ही समान अधिकार मिला है जिससे उनकी रचनात्मकता और साहित्य प्रेम को बढ़ावा मिलेगा । बच्चों ने प्रथम अंक में अपना जमकर प्यार उड़ेला था, अपनी रचनात्मकता द्वारा । इस अंक में उनके लिए भोर द्वारा कुछ सामग्री दी जा रही है। साथ ही उनसे निवेदन है की सितंबर अंक के लिए सभी बच्चें अपनी कविता,कहानी,पेंटिंग, ज्ञानवर्धक बातें, हंसी के पटाखे इत्यादि हमें मेल करें।

bhorsyh@gmail.com

धन्यवाद।

"बाल-गुंजन"

शहर के नाम बुझो तो जानें

- चेरी है पर फल नहीं
- नाट्क है पर ड्रामा नही
- केश है पर बाल नही
- रात है पर निशा नही
- नाग है पर सांप नहीं
- जैन है पर धर्म नही
- राय है पर सलाह नही
- द्वार है पर दरवाजा नहीं
- आग है पर अग्नि नही
- चीन है पर देश नही
- देह है पर शरीर नही
- रस है पर जूस नही
- अमृत है पर पेय नही
- पानी है पर जल नही
- बाद है पर देर नही
- कन्या है पर लड़की नही
- पन्जा है पर हाथ नही
- बाला है पर लड़की नहीं

बच्चें अपना उत्तर हमें मेल द्वारा भेजें।
bhorsyh@gmail.com

आई हंसी आई

मेहमान – और बताओ बेटा आगे का क्या प्लान है... संता- बस आपके जाते ही बिस्कुट खाऊंगा... वैसे भी नमकीन और मेवा तो आपने छोड़ी नहीं है....

आई हंसी आई

चिंटू – सर इसका क्या मतलब है, आइ एम गोइंग

टीचर – मैं जा रहा हूं

चिंटू- सर बताइए ना प्लीज

टीचर – मैंने कहा ना मैं जा रहा हूं

चिंटू- अरे ऐसे कैसे चले चले जाओगे जाओगे, बताकर जाओ नहीं तो जाने नहीं दूंगा

उपन्यास (खंड-२)

डॉ. किशोर सिन्हा
(वरिष्ठ साहित्यकार, उपन्यासकार, रंगमंच कलाकार,
संपादक एवं संरक्षक (भोर, ई-पत्रिका)

गतांक से आगे......

तान्या

मैं भी शादीशुदा हूं। मैंने बताया था कि नाइंथ क्लास में मेरी पढ़ाई छुड़वा दी गई थी तो फिर मैं डांस प्रोग्राम करती थी। जो लोग शादियों में आर्केस्ट्रा प्रोग्राम करते हैं उसमें करती थी और अपने नाइट से जो भी पैसे मुझे आते थे, जितने मैं कमाती थी, सारे स्टडीज़ में लगा देती थी। धीरे-धीरे पढ़ाई के दौरान ही जो मेरे हस्बैंड हैं, हमारा उनसे परिचय हुआ था प्रोग्राम करते वक्त....। फिर धीरे-धीरे हम मिलने लगे, एक साथ घूमने-फिरने लगे..... दो साल के बाद हम लोगों ने डिसीजन लिया कि हम लोग एकसाथ रह सकते हैं। आज की डेट में छे साल हो गए हैं हमारे रिलेशन को.... हमने शादी की है..... मैं निभा रही हूं.... वे भी निभा रहे हैं.... दोनों की तरफ से ऐसा कोई इश्यू आया नहीं है अबतक...हां, पर फ़ैमिली में कोई एक्सेप्टेन्स नहीं है। उनके परिवार में एकदम नहीं है..... वे लोग मुझे देखना भी नहीं चाहते हैं। बहुत गंदी सोच है उनके घर में मेरे लिए....। पर ये हैं, इनका प्यार है कि ये साथ देते हैं..... और आशा करती हूं कि आगे भी देते रहें......

एक जेनरल वूमेन की तरह मैं इनके साथ रहती हूं। जैसे सुबह छे बजे वे अपनी ट्रेन के लिए निकलते हैं तो मैं चार बजे उठती हूं.... उनके लिए लंच बनाती हूं.... अपने लिए लंच बनाती हूं.... और एक बात मैं बता दूं कि वो मेरी तरह किन्नर नहीं हैं....।

सोनिका

लोगों का मानना है कि किन्नर समाज ज़बर्दस्ती करता है ट्रेन में...ऐसा है क्या....

अगर आप कहोगे कि समाज हमेशा उंगली उठाने के लिए है और जहां तक मैंने ट्रेन मांगा है वहां जीआरपी, आरपीएफ वालों से मेरे बहुत अच्छे रिलेशन रहे। उन्होंने जब भी हमें बुलाया केस देने, हम गये। मैं प्लेटफार्म से ट्रेन पकड़ती और प्लेटफार्म पर ही ट्रेन छोड़ती। क्योंकि मेरा बहुत सिंपल था.... 'दे मामा', 'दे काका', 'दे चाचा'.... हम प्यार से ही मांगना चाहते हैं। अगर आप मेरे को या मेरे से ऊपर मां की गाली दोगे तो मैं क्यों सुनके लूं.... और तब हमारा धैर्य खो जाता है। इसलिए धैर्य खो देते हैं, क्योंकि हम अपनी मां से बहुत अटैच्ड हैं, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। मां से अटैचमेंट जो रहता है वह हमेशा अलग-सा होता है। नौ महीने कोख में रख कर जो सींचती है, भरती है अपने गुण हमारे अंदर.... तो हम अपनी मां को किसी को गाली देते हुए स्वीकार नहीं कर सकते। समाज में कुछ अच्छे लोग भी हैं, कुछ बुरे लोग भी हैं। मैं ये नहीं कहूंगी कि मेरी कम्युनिटी ग़लत है..... ताली एक हाथ से नहीं बजती, ताली दोनों हाथ से बजती है। ताली अगर आप बजाओगे तभी तो हम बजायेंगे।

ये भी कहा जाता है कि कोई बच्चा मिलता है तो उसको ले जाके किन्नर बना दिया जाता है.....

यह बहुत ग़लत सोच है कि कोई किन्नर समाज किसी को ले जाकर ज़बर्दस्ती किन्नर बना देता है। ऐसा कुछ नहीं होता। मुझे क्यों नहीं ले गए जब जन्म हुआ था मेरा..... और मेरे पास तब 'जेनेटिल' भी नहीं था मेरा कुछ नहीं था..... तब मैं अपनी फ़ैमिली के साथ थी और मैं ख़ुद होकर गई हूं मेरे समाज के पास। हमारा समाज कभी भी नहीं चाहता कि वह अपने मां-बाप से बिछडे.... वो अपने मां-बाप में रहे..... ख़ुश रहे.... और ये समाज नहीं चाहता कि वो ये छे मीटर का कपड़ा पहन के रहे.... उनकी जो छे मीटर की ये साड़ी है, ये हमारे लिए छे मीटर कफ़न का कपड़ा है; क्योंकि समाज के ताने हैं और समाज की बहुत नीचता की देखने की नज़र है। समाज मेरे पास नहीं आया..... मैं खुद समाज के पास गई हूं क्योंकि मुझे समाज की ज़रूरत थी। वो ज़रूरत भी इसलिए पड़ी क्योंकि तब मेरी फ़ैमिली वाले मेरे साथ नहीं थे। तब समाज ने मेरे साथ फ़ैमिली का रोल प्ले किया। एक मां-बाप की तरह, जो बच्चे को सहारा देना चाहिए; जिस आंचल के नीचे उसको सहारा मिलना चाहिए। उम्र का सोलहवां साल एक ऐसा स्टेज होता है जहां पर बहुत सारी चीज़ों के लिए मैच्योरिटी आना शुरू होती है। उस वक्त जब फ़ैमिली साथ छोड़ दे तो कोई कहां जाये। हम किसी को ज़बरदस्ती किन्नर नहीं बनाते....

तान्या

लेकिन कुछ लोग हैं जो हमारी कम्युनिटी, हमारे समुदाय को बदनाम करते हैं। जैसे कि कई पुरुष होते हैं, लेकिन वह नारी का भेष बनाकर कमाने के लिए ट्रेन में चढ़ जाते हैं..... तालियां पीटते हैं और गाली देते हैं। ये हमारे समुदाय के नहीं होते.... नकली बाल लगाना, लिपिस्टिक लगा के खड़े हो जाना, काजल लगाके खड़े हो जाना, मांग के निकल जाना...... यह कुछ चीज़ें हैं जिससे समाज सोचता है कि ये हमारे समुदाय के हैं।

सोनिका

शादी ब्याह और खासतौर से जब बच्चा पैदा होता है किसी घर में, उस समय आप लोगों की भूमिका शायद होती है उसमें..... और कई जगह तो एक अच्छे रस्म के तौर पर अपनाया जाता है.... समाज में आपका आना बड़ा शुभ माना जाता है कि अगर किन्नर आते हैं बच्चे के जन्म के अवसर पर, तो लोग खुशी-खुशी एक्सेप्ट करते हैं..... तो आपलोग भी ऐसा ही मानते हैं, सच्चाई है इसमें या कुछ और.....

इसके पीछे बहुत पुरानी कहानी है जब राम वनवास जा रहे थे। आधा रास्ता पार होने के बाद राम जी ने कहा कि अब सभी नर-नारी वापस लौट जायें। नर-नारी तो वापस लौट गए पर किन्नर वहीं चौदह साल तक रामजी का इन्तज़ार करते रहे। बनवास काट के जब राम जी वापस आए तो उन्होंने पूछा कि हमने तो सबको जाने को कहा था..... आप लोग क्यों नहीं गये....। तो उन सब ने कहा कि आपने तो सिर्फ नर और नारी को जाने के लिए बोला.... पर ना तो हम नर हैं, ना नारी, इसलिए हम नहीं गये। तब राम जी ने कहा था कि लोग अब आप लोगों से आशीर्वाद लेंगे, आपकी दुआएं लेंगे और हर जगह आपकी पहली दुआ कुबूल होगी..... तब से ये प्रथा चलती आई है।

मुस्लिम समाज में भी आज हल्दी के टाइम पर रतजगा होता है, हल्दी की रस्म होती है, उसमें ट्रांसजेंडर जाते हैं, डांस करते हैं और ब्लेसिंग्स देते हैं चावल और शक्कर से..... और वहां से जो भी रुपये-पैसे मिलते हैं उसे लेकर अपने घर चले आते हैं। उस लड़की की या फिर उस लड़के की आने वाली बीवी के लिए गोद भरकर आते हैं कि उसकी गोद जल्दी भर जाये। और जब बच्चा होता है तो हम उनकी ख़ुशी में शामिल होने जाते हैं कि बाबा आपके यहां बच्चा हुआ है, उसको मालिक करे कि कोई बला ना आए उसके ऊपर.... कोई प्रॉब्लम ना आए..... वो हंसते-खेलते बड़ा हो जाए और समाज में एक अच्छा इंसान बने, यही हमारी दुआ है।

आप तो अच्छे उद्देश्य से, सोच कर जाते हैं.... आपको समाज में आज भी इसी तरह का एक्सेप्टेंस मिलता है.....

आप नॉर्थ साइड में अगर जाओगे तो बहुत सारा एक्सेप्टेंस है इस प्रथा को.... साउथ में भी एक्सेप्टेंस है, पर इतना नहीं है। साउथ में एक्सेप्टेंस किसी और रूप में है क्योंकि वहां पर हमें भगवान् माना जाता है। तो वहां पर हमारा नाम अलग है, वहां पर हमको 'जोगतिन' बुलाया जाता है। जब 'जोगतिन' बोलते हैं तो ये बोलते हैं कि ये येल्लमा माता के बच्चे हैं, इनको हर्ट नहीं करना चाहिए। जो भी, जिसकी जेब में दस रुपये होगा, वह निकाल कर देगा; किसी के जेब में सौ रुपये होगा, वह देगा.... और तब हल्दी-कुमकुम लगाके हम उसको आशीर्वाद देते हैं। तो हर एक जगह अलग-अलग प्रथा है। समाज में हम जब कहते हैं कि कुछ नेगेटिव भी हं, ं कुछ पॉजिटिव भी हैं। जो नेगेटिव हैं, वो हमेशा नेगेटिव ही रहे हैं और वह कभी पॉजिटिव नहीं हो पाये हमारी कम्युनिटी में। उसमें भी कम्युनिटी कोशिश करती है कि बद्दुआएं ना निकलं कभी.... हम हमेशा दुआ ही दें.... बस दुआएं ही हम अपने मुंह से निकालने की कोशिश करते हैं, क्योंकि आप भले ही हमको ग़लत समझो पर हम आपके लिए अच्छा ही सोचते हैं।

भारत के इतिहास में आप पहली ऐसी थर्ड जेंडर हैं, ट्रांसजेंडर हैं, जो एक नोडल अधिकारी के तौर पर काम कर रही है.... कैसा लगता है.....

आप कह सकते हो कि लाइफ़ में बहुत सारे ट्विस्ट एंड टर्नस् रहे और उस ट्विस्ट एंड टर्नस् को आखिर तक लेकर जाने के लिए जो मुझे मोटिवेशन मिला, जो मेरी गुरु हैं... वे हमेशा मेरी हर मुसीबत में मेरे साथ खड़ी रही हैं, हर एक चुनौती के साथ मेरे साथ आगे बढ़ी हैं और आज जिनकी मैं पूजा करती हूं..... हमलोग कहते हैं कि भगवान् हैं, बट कहां हैं.... हम मंदिर में जाते हैं तो एक पत्थर की मूर्ति दिखती है..... पत्थर की मूर्ति के सामने हम रोते हैं, बहुत कुछ करते हैं, बट वे मूर्ति कुछ रिस्पांस नहीं करती। असली रिस्पांस हमें मिलता है, जब हम समाज के बीच में काम करते हैं।

आज जब मैं एचआईवी पीड़ित बच्चों के चेहरे पर स्माइल लाती हूं, उसके अधिकार के लिए लड़ती हूं.... किसी महिला को न्याय जब मिलता है, उसका अधिकार जब मिलता है, वही मेरी सबकुछ है..... मतलब वही मेरी भक्ति है। अगर आप घर पर आओगे तो आपको मेरे घर में कोई मंदिर नहीं मिलेगा, कोई भगवान् का फ़ोटो नहीं मिलेगा, एक ही भगवान् का फ़ोटो मिलेगा, वो श्री सद्गुरू अडनेश्वर महाराज जी का, जिन्होंने ज़िंदा समाधि ली है और उन्होंने क्लियर कहा है कि किसी ने भी भगवान् को नहीं देखा है। भगवान् हमारे अंदर है.... अगर हम ढूंढेंगे तो वो आपको मिलेंगे। तो अलग-अलग प्रोग्राम्स के द्वारा उन्होंने मुझे सिखाया कि आप किस तरह से इस समाज में आप सोचते हो कि आप किन्नर हो तो आपका दर्द है। गुड़ी पड़वा, जो हमारे महाराष्ट्र में न्यू ईयर कहा जाता है, तो कैंसर-पेशेंट के लिए एक फंक्शन होता है, उसके लिए मुझे बोला गया कि तुम जाओ कैंसर हॉस्पिटल और आपको जो देना है, दे दो। तो मैं फ्रूट्स के साथ चली गए अपने ऑफिस के कुछ कलिग के साथ। मैंने उनको फ्रूट्स और कुछ मिठाई दी तो वह जो पेशेंट के रिलेटिव थे, उन्होंने मुझे बोला कि आप तो यह सब कुछ ले आईं, पर मेरी मां खा नहीं सकती। उसको थ्रोट कैंसर है। वो जो दर्द उसकी बातों में था, उसने ये एहसास दिलाया कि मैं एक किन्नर हूं और मैं समाज में चल रही हूं और मैं अच्छे से, आराम से खा पी तो रही हूं। दूसरा उन्होंने मुझे एहसास दिलाया कि जब हमने नवरात्र के टाइम नर्सेज के साथ प्रोग्राम किया तो मैं सोचती थी कि मैं अकेली डिस्क्रिमिनेटेड होती हूं सोसाइटी में, या फिर मेरा जॉब प्रोफाइल या मैं एक किन्नर हूं बोलकर डिस्क्रिमिनेटेड होती हूं। जब हमने उस नर्स को व्हाट्सएप किया तो वो रोने लगी। कहने लगी कि आज तक हमें बहुत नीचता की नज़र से देखा जाता रहा है। आज हम अपने रिलेटिव के सामने नहीं बोल पाते कि हम स्टाफ़-नर्स हैं। उसका मतलब ये था कि वो अपनी फ़ैमिली में भी डिस्क्रिमिनेटेड होती है। मेरे दादाजी ने हर कदम पर मुझे सिखाया था कि आज सोसाइटी में तुम अकेली नहीं हो जो डिस्क्रिमिनेटेड हो रही हो। आज लॉ ही और शी कहता है बट मैं क्या हूं, ना मैं ही हूं, ना शी हूं। तो मेरी आईडेंटिटी क्या है....

आप छत्तीसगढ़ में गईं, वहां भी काम किया.... बिहार में आप काम कर रही हैं और जामिया मिलिया से आपने ग्रेजुएशन किया है। सिंबोसिस में भी आपका सिलेक्शन हो गया था.... तो इतना सारा कुछ, इतना हायर एजुकेशन आपने प्राप्त किया और अब आप नोडल अधिकारी के तौर पर कार्यरत हैं। लोगों का आपसे कैसा व्यवहार रहता है......

मेरे साथ जो टीम काम कर रही है, वह टीम नहीं है, मेरी फैमिली है; क्योंकि मैं हमेशा उनको मेरी फैमिली, मेरे शरीर का एक अंग मानते आई हूं। क्योंकि मेरे पास स्त्री और पुरुष दोनों काम कर रहे हैं और मेरे अंदर एक स्त्री का भी दिल है और एक पुरुष का भी दिल है। और मैं ये मानती हूं कि जब ए मैन कैन बी हंड्रेड परसेंट परफेक्ट ऐंड ए वुमेन कैन बी हंड्रेड परसेंट परफ़ेक्ट; तो मैं तो टू हंड्रेड परसेंट परफेक्ट हूं। मैं उनकी फ़ीलिंग को समझती हूं, उनके सिचुएशंस को समझती हूं, उनकी हर एक प्रॉब्लम और इश्यूज़ को सामने लाते हुए, हर चीज़ को समझते हुए, उनके साथ, उन्हीं के सांचे में ढालकर, उन्हीं के स्टाइल में काम करती हूं। ये नहीं कि मैं अपनी चीज़ उनपे थोपती हूं। क्योंकि मैं उनसे हर कदम पर सीखती हूं।

तान्या

आप बताएं... आप भी काम कर रही हैं ऐसे तमाम लोगों के साथ... ऑर्गेनाइजेशन में.... तो आप का क्या अनुभव है.....

मैं किन्नर होकर भी एक सामान्य जनसंख्या के साथ काम कर रही हूं, जहां पर एक पुरुष, एक महिला, एक बच्चा- सारे लोग हैं। वहां कोई किन्नर नहीं है, लेकिन मैं किन्नर होके उनके लिए काम कर रही हूं और उन लोगों की तरफ से भी मुझे बहुत ज्यादा कोऑपरेशन मिलता है, लोग बहुत इज्जत देते हैं। जब उनके अधिकार को हम लोग उनके सामने रखते हैं, उनको वह चीज़ दिला देते हैं तो उनकी जो खुशी होती है, चाहे उनके चेहरे पर जो स्माइल आती है, वो हम लोग कहीं से नहीं ला सकते। यह बहुत बड़ी एक सच्चाई है जो काम करने में उन लोगों के लिए हम लोग करते हैं और उसके बाद उनके चेहरे पर जो हंसी आती है ना वह तो मत करो से भी बढ़कर होती है।

सोनिका

आप एचआईवी पॉजिटिव हैं, इसे स्वीकार करने में आपको कोई संकोच नहीं है.....

मैं अपने माता-पिता से एच.आई.वी. पॉजिटिव नहीं हुई हूं.... 2012 में जब मेरे ब्वायफ्रेन्ड ने मेरा हाथ छोड़ा और उसके बाद वापस मुझे उसी सेक्स के..... वहां आके खड़ा रहना पड़ा और उस वक़्त इसी ज़ालिम दुनिया में से कुछ चौदह लोगों ने जब मुझसे रेप किया, उसमें से कुछ पॉजिटिव थे और उन्होंने मुझे पॉजिटिव किया।...... तो जब मैं पॉजिटिव हुई थी, बहुत डिप्रेशन में चली गयी थी और मैंने सुसाइड करने की भी कोशिश की। एजुकेशन रहते हुए भी, सबकुछ रहते हुए भी..... पहले जॉब नहीं था, उसके ऊपर से एक और बीमारी.... जिससे कि मैं कमाऊंगी क्या, और खाऊंगी क्या..!

मैं आज प्राउडली फ़ील करती हूं कि मैं जितने भी एच.आई.वी. के साथ जी रहे बच्चे... उनकी मां हूं; और जितनी बहनें हैं... एच.आई.वी. के साथ जी रही हैं, उनकी बहन हूं.... और भाइयों की बहन हूं...। मैंने छत्तीसगढ़ में कुछ अंतिम संस्कार किये..... एक भाई था... इन्जेक्टेबल ड्रग यूज़र था वो... और वो एच.आई.वी. पॉजिटिव हो चुका था। जब अपने साथ छोड़ चुके थे तब हमने उसका साथ दिया- केयरिंग सपोर्ट प्रोग्राम के थ्रू.... और जब उसका लास्ट टाइम था.... दो दिन पहले मैं उससे मिलने गई तो वो सोया हुआ था.... उसकी कंडीशन नहीं थी कि वो उठ के बैठे, पर वो मुझे देखते ही उठ के खड़ा हो गया। मैंने कहा, भाई ये क्या किया तूने..... फिर कई जगह बात कर उसे न्यूट्रिशन सपोर्ट दिलवाया.... मेडिसिन दिलवाया.... उसी पीरियड में उसकी डेथ हो गयी.... दो दिन बाद....। तो उसका लावारिस बोल के वो ऐडमिट हुआ था, पर जब उसकी डेडबॉडी लेने जब मैं पहुची तो तब हॉस्पिटल के जो डीन थे, सिविलसर्जन थे, उन्होंने कहा कि आप बहन बोल के आइडेन्टिफ़ाई करके इसकी बॉडी लेके जा रही हो..... बट क्यूं कर रही हो..... ये तो एच.आई.वी. पॉजिटिव है। मैंने कहा, क्यूं क्या एच.आई.वी. पॉजिटिव होना इतनी बड़ी ग़लती है....? तो फिर मैं भी तो एच.आई.वी. पॉजिटिव हूं..... तो इसका मतलब ये नहीं कि मैं आज बड़ी पोजिशन पे बैठी हूं.... मैं ये भूल जाऊं कि मैं उस ग्रासरूट से अगर मुझे किसी ने हाथ नहीं दिया होता... मेरा शान नहीं होती तो मैं आज यहां पे नहीं होती....। मेरे शान ने ही मुझे मेरी कम्युनिटी के सामने बिठाया..... मोटिवेशन दिया..... कि आज हम समाज में लड़े ◌ं तो किसके लिए लड़ें.... मेरी कम्युनिटी बहुत सक्षम है.... वो अपना अधिकार ताली बजा के ले सकती है। पर आज जो महिला एच.आई.वी. के साथ जी रही है, जिसकी ग़लती न होते हुए, जिसकी कोई रीज़न न होते हुए उसको सज़ा मिलती है, उसके राइट्स के लिये लड़ो.....। जो बच्चे आज एच.आई.वी. के साथ जी रहे हैं, उनका बचपन छीना गया..... मेरा भी बचपन छीना गया.... तो मैं नहीं चाहती कि उन बच्चों का बचपन छीना जाये... उन बच्चों को भी वो बचपन मिले, जो मुझे ना मिला....। तो उनको उनका बचपन दिलाने की मैं कोशिश करती हूं। मैं फ़ील्ड में जाती हूं तो लोग रोते हैं। उन्हें देखके एक अलग फ़ीलिंग आती है कि मैं क्या कर रही हूं। आज एक किन्नर होकर भी अगर मैं ये जॉब छोड़ दूं या सोशल सेक्टर छोड़ कर अपनी कम्युनिटी में जाऊं तो मैं बधाई करके या सेक्स-वर्क करके मैं आज भी अपना पेट पाल सकती हूं। पर नहीं, मेरा मोटिवेशन है कि मैं अपना घर बनाऊं, जहां पर बच्चे अपना बचपन जी सकें, एक बहन या बेटी खुल के अपनी ज़िंदगी जी सके। तो मेरा एच.आई.वी. पॉजिटिव होना बिल्कुल बुरा नहीं लगता.... मैं तो दुनिया को थैंक्स कहना चाहती हूं कि आपने मुझे ये गिफ़्ट दिया.... और ये मुझे इतना अच्छा लगने लगा है कि मैं चाहती हूं कि अगले सौ साल भी मिलें तो मैं एच.आई.वी. पॉजिटिव ही रहूं।

जिनलोगों से आपको ये मिला, उनपर गुस्सा नहीं आता....

शुरू-शुरू में बहुत गुस्सा आता था कि मैंने क्या ग़लती की थी कि मुझे ये सज़ा दी गई। फिर लगता है कि जो उन्होंने मुझे दिया वो मेरे लिए एक मोटिवेशन था जो शायद मेरे पिछले जन्म का कुछ था जो मुझे इस जन्म में मिला और मैं इसे आगे तक लेकर जाना चाहती हूं....। हमारी स्थिति तो ये है कि आज अगर हमें, हमारी कम्युनिटी को कहीं रहने की बात हो, किसी अच्छे अपार्टमेंट में, तो उसमें कितनी सारी प्रॉब्लम्स आती हैं..... आज समाज में हमें घर नहीं मिलता.... अगर मिलता भी है तो जहां हज़ार रुपये रेन्ट है वहां तीन हज़ार मांगा जाता है, क्योंकि एक्सेप्टेन्स नहीं है। ऊपर से अगर एच.आई.वी. पॉज़िटिव पता चले तो रेन्ट और डबल हो जायेगा। तब मेरे पास ऑप्शन क्या है....

आज मेरे पास कोई स्कीम भी नहीं है। मुझे महंगे राशन की दुकान से अच्छा राशन लेकर अच्छे से खा कर अच्छा रहना पड़ता है। अगर मैं बस में ट्रैवल करूं तो कोई लेडी मेरे बाजू में बैठना पसंद नहीं करेगी.... और अगर उसे मेरे एच.आई.वी. पॉज़िटिव होने का पता चला तब तो कभी नहीं बैठेगी.....। तब मेरे पास क्या है ऑप्शन.... मुझे ऑटो में जाना पड़ेगा.... ज़्यादा पैसे देकर...... जहां बस में दस रुपये में जा सकती थी, वहां मुझे सौ रुपये देकर ऑटो से जाना पड़ेगा।

सामान्य औरत से ज़्यादा सुंदर दिखने के लिए मेरा मेकअप है, मेरा ड्रेसिंग है, मेरी साड़ी है, मेरे कॉस्ट्यूम्स हैं जिसके ऊपर मेरा दस गुना ख़र्च हो रहा है......आख़िर ये सब मैं अपनी सैलरी से ही मैनेज कर रही हूं..... किसी के सामने हाथ फैलाने नहीं जा रही.....

जब कभी मैं डोनेशन मांगने किसी ऑफ़ीसर के केबिन में जाती हूं तो उनके देखने का नज़रिया अजीब होता है। जब मुझे पहली बार नोडल ऑफ़ीसर की पोज़ीशन दी गई थी तो मुझे एक केबिन एलॉट हुआ था.... दरवाज़े पर एक गार्ड भी दिया गया था.... तो पहले दिन जब मैं ऑफ़िस ज्वायनिंग के लिए पहुंची तो केबिन के दरवाज़े पर बैठे गार्ड ने रोक दिया.... बोला, "ऐ किधर जा रही हो.... इधर ही रुको.... अभी मैडम नहीं आई हैं... अभी आपके कम्युनिटी वाले आये नहीं और आपलोग अभी से आने लगे...।"

तो उस गार्ड की मेंटिलिटी क्या थी मेरे लिए.....। इसके बाद जैसे ही मेरे प्रोजेक्ट डायरेक्टर आये और अपने पूरे स्टाफ़ के साथ मुझे इन्ट्रोड्यूस कराया कि ये नोडल आफ़ीसर है, ये आपलोगों के साथ काम करेगी, आपको यहां बैठना है, ये आपका केबिन है, ये कुर्सी है, ये गाड़ी है, ये ड्राइवर है, तो वो गार्ड मेरी तरफ़ बहुत देर तक हैरत से देखता रहा....।

मैं अपने पर प्राउड फ़ील करती हूं कि मेरे माता-पिता ने मेरे को दसवीं तक कान्वेंट में एजुकेशन दिया, जिससे कि आज मेरी इंग्लिश इतनी अच्छी है कि मैं लोगों से जब बात करती हूं तो लोग होगा...

मेरी तरफ देखते रह जाते हैं कि इतनी अच्छी इंग्लिश है तो ये किन्नर नहीं हो सकती.... यह लड़का होगा.... मैं किन्नर हूं, इसका मतलब ये नहीं कि मैं इंग्लिश नहीं बोल सकती.....

जैसे आज के टाइम में कंप्यूटर सबके लिए इंपॉर्टेंट हो गया है, टेक्नोलॉजी इतना आगे निकल चुका है तो मैं क्यों पीछे रहूं.....

तान्या

आप जब बस या ऑटो में बैठती हैं तो कैसा अनुभव होता है साथ में बैठे लोगों का......

अगर ऑटो में मैं ऑफ़िस जाती हूं, नौ बजे घर से निकलती हूं ऑफ़िस जाने के लिये तो जहां मैं ऑटो में बैठती हूं तो अगर कोई मेल मेम्बर आया तो इट्स ओके..... वो बैठ जाता है, बट अगर कोई फ़ीमेल आती है तो वो पहले पांच मिनट देखती है, मुझे लगता है कि वो डिसाइड करती है कि मतलब बैठूं कि नहीं बैठूं..... ये क्या चीज़ है...... ये क्या... मटेरियल क्या है.... ठीक है, इस तरह की सोच वो लोग डालते हैं.... और बैठने से पहले पांच मिनट सोचेंगे..... फिर बैठ जाते हैं, पता नहीं कन्फ़्यूजन में बैठते हैं कि उनको जाना होता है जल्दी.... लेकिन बैठ जाते हैं.... तो इस तरह की चीज़ें हैं अभी....।

अगर पूछूं कि अगले जन्म में आप क्या बनना चाहेंगे या पसंद करेंगे, तो.....

मुझे इस बात का बिल्कुल भी अफ़सोस नहीं है कि मैं इस जन्म में एक किन्नर में पैदा ली हूं और मैं चाहूंगी कि मैं हमेशा किन्नर बन के ही, मतलब जन्म लूं, ताकि ये जो संघर्ष वाली जो ज़िंदगी होती है न, वो बहुत ही अच्छी होती है। ऐसे तो नॉर्मल सबलोग कमाते हैं, खाते हैं, घूमते हैं, अपने तक ही रह जाते हैं। आजकल के टाइम में किसी के पास नहीं है दूसरों के लिये सोचने के लिये। लेकिन आज की डेट में जब हमलोग काम कर रहे हैं, तो आम जनता को भी देख रहे हैं, वो सारे दुखी हैं....

सोनिका

कोई सुखी नहीं है, तो इससे अच्छा है न कि मैं हूं... मैं फ्री हूं... कम-से-कम मैं समाज के लिये सोच रही हूं, समाज के लिये सोच रही हूं, उनका दर्द बांट रही हूं....।
मैंने एक कविता लिखी है, जो मेरी लाइफ़ के ऊपर ही है...... आप बोलो तो मैं सुनाऊं...

उसने सहमति के लिए मेरी ओर क्षणभर को देखा पर बिना मेरे किसी इशारे का इंतज़ार किए वो शुरू हो गई.....

क्यों मुझ देखते ही दूर भागते हो.....
क्यों मुझे देखते ही नज़र घुमा लेते हो....
आखिर क्या देख कर मुझ पर हंसते हो.....
आखिर क्यों मुझे नीच निगाहों से देखते हो
क्या बात है कि अपने भी हमसे रूठ गए
क्या बात है कि मां-बाप भी हमें भूल गए
ऐसा क्या अपराध किया हमने
कि समाज ने हमें अलग किया
ऐसा क्या अपराध किया कि कोई हमारा ना हुआ
बात सिर्फ़ इतनी थी
ना होकर भी मैं एक नारी थी
मां-बाप की लाज बचाने को बहुत क़ैद रखा अपने को पैंट और कमीज में
दुनिया से छुपा तो ले अपनी अंदर की नारी को
पर कब तक
शायद ये जवाब मैं भी ना जानती थी
जानती थी मैं सिर्फ़ इतना
कि मेरे अंदर एक नारी जवान हो रही थी
जब भी आईने के सामने आती
सिंगार से अपने को रोक नहीं पाती
अब तक नर के वेश में नारी की तरह सिंगार करती
लड़की की तरह आइब्रो बनाती....
नाखून बढ़ाती
चोरी-छुपे लड़की के कपड़े भी पहन लेती
पर कब तक ऐसा
अब अपने आप से मैं अक्सर सवाल करती
एक वक्त वो भी आया जब जवानी मेरी दहलीज़ पर थी
हाव-भाव ज़रा दूसरों से हटके थे
क्योंकि नर के रूप में मैं नारी जो थी
उठना-बैठना, चलना.... सब गुण तो नारी के थे मुझ में
न था मुझ में तो बस एक नारी का तन
अब भी मेरी आंखों में आंसू छलक जाते हैं
जब याद करती हूं मैं गुज़रा पल
वो गली में लड़कों का ताना कसना
मौक़ा मिलते ही मुझ पर ज़ोर-ज़बरदस्ती करना
मैं शायद उनके लिए वो वस्तु थी
जिसका उपहास और तंग करके ख़ुश होते थे
मां-बाप ने भी बदनामी के डर से मुझे ही दोष देकर
अपना पल्ला झाड़ लिया....
कैसे भूल सकती हूं उस रात को
जब घर के दरवाज़े हो गए मेरे लिए बंद....
रेलवे परिसर में रात बिताई.....
किस ओर जाऊं ये बात मुझे समझ में नहीं आई...

आख़िर जीना तो था
पेट अपना पालना तो था.....
मन में यह भी लालच था कि कुछ कर दिखाऊं
सब दरवाज़े बंद हुए तो क्या हुआ
मैं अर्धनारी हो कर भी दुनिया में नाम कमा लूंगी
ना सिर्फ तन-मन नारी का पाया
अपने बूते पढ़ाई-लिखाई करके पैसे कमाए
आपदाओं को लांघ देश-विदेश में नाम भी कमाया......
आज जब उन लड़कों के बारे में सोचती हूं
आख़िर क्या मिला मुझे छेक कर उस अंधेरी रात में
मुझसे ग़लत करके.....
वे पहले मेरे को पागल करार देते थे
अब शर्म के मारे वह ख़ुद मेरे से
आंख नहीं मिला पाते....

मैं एक किन्नर हूं और मैं अपना अस्तित्व ज़िंदा रखना चाहती हूं..... ना मुझे कोई लॉ चाहिये, ना मुझे कोई कॉन्स्टीच्यूशन चाहिये, ना मुझे कोई चाहिये कि मैं अपने आइडेन्टिफ़िकेशन को छुपाऊं। सैलरी अकाउन्ट ओपेन हुआ मेरा.... और उसमें एक कॉलम था कि 'थर्ड जेन'- 'टी'- लिखा हुआ था, तो मैंने उसके ऊपर 'टिक' कर दिया। मेरा पासपोर्ट और आधार-कार्ड ट्रांसजेंडर का बना हुआ है...... तो मैं जब 'टी' बोल के क्लिक की तो अकाउन्ट तो खुल गया, मेरे पास चेकबुक आ गया, पासबुक आ गया..... पर मेरा डेबिट कार्ड इश्यू नहीं हो रहा है जस्ट बिकॉज़ मैं एक ट्रांसजेंडर हूं। ये तीसरी बार हुआ। इसके पहले मेरा यू. एस. वीजा होल्ड पर था, क्यूंकि मेरा पासपोर्ट कह रहा है, मैं ट्रांसजेंडर हूं, मेरा वीजा एप्लीकेशन कह रहा है मैं फ़ीमेल हूं...... अब वो जो काउन्सिलर बैठा है, जो वीजा देने के लिये वो कन्फ़्यूजन में है कि मैं कौन-सा वीजा दूं इसको- मेल दूं... फ़ीमेल दूं.... या फिर ट्रांसजेंडर दूं...। जब हम बाहर कहते हैं कि योरोपियन कन्ट्रीज़, वेस्टर्न कन्ट्रीज़ आगे है इन चीज़ों में तो आज उनके अन्दर भी उतना सैन्सेटाइजेशन होना बहुत ज़रूरी है। जब मैं साउथ अफ्रीका जा रही थी, तो मेरा वीजा मेरे को फ़ीमेल बोल के ही मिला था, पहला वीजा भी फ़ीमेल बोल के ही..... जब इमिग्रेशन की बात आयी, मुझे ऐसा क्वेश्चन किये जा रहे थे जैसे कि मैं कोई क्राइम कर के भाग रही हूं इन्डिया से.....। गल्फ़ कन्ट्रीज़ में पहुंची.... गल्फ़ कन्ट्रीज़ में भी बहुत-सारे सवाल हुए..... बहुत-सारे क्वेश्चन्स किये इमिग्रेशन ने... कि आपको ये जेंडर कहां से मिला, आपने ये पासपोर्ट कहां से बनाया, कैसे अप्लाइ किया.... मुझे... मतलब... तब उनको पूरी कहानी समझानी पड़ी। सुप्रीम कोर्ट का जज़मेंट दो सौ पन्नों का दिखाना पड़ा... ये जज़मेंट कहता है..... ये मेरी आइडेन्टिटी है....।

तान्या

मुझे इस बात का बिल्कुल भी अफ़सोस नहीं है कि मैं इस जन्म में एक किन्नर में पैदा ली हूं और मैं चाहूंगी कि मैं हमेशा किन्नर बन के ही, मतलब जन्म लूं, ताकि ये जो संघर्ष वाली जो ज़िंदगी होती है न, वो बहुत ही अच्छी होती है। ऐसे तो नॉर्मल सबलोग कमाते हैं, खाते हैं, घूमते हैं, अपने तक ही रह जाते हैं। आजकल के टाइम में किसी के पास नहीं है दूसरों के लिये सोचने के लिये। लेकिन आज की डेट में जब हमलोग काम कर रहे हैं, तो आम जनता को भी देख रहे हैं, वो सारे दुखी हैं.... कोई सुखी नहीं है, तो इससे अच्छा है न कि मैं हूं... मैं फ्री हूं... कम-से-कम मैं समाज के लिये सोच रही हूं, समाज के लिये सोच रही हूं, उनका दर्द बांट रही हूं....।

पढ़ना-लिखना, काम करना.... ये सब तो ठीक है, पर मैं एक किन्नर हूं, ये बहुत बड़ी सच्चाई है। कला तो हमारे ख़ून में ही होती है। नाचना-गाना, हंसना.... खाना बनाना.... बहुत सारे हमारे कम्युनिटी के लोग हैं जो अच्छे अच्छे ब्यूटीशियंस हैं, मेहंदी अच्छा लगाती हैं, खाना बहुत अच्छा बनाती हैं, नाचने में बहुत अच्छी हैं, गाती बहुत अच्छा हैं..... और हमारी तो ये प्रथा चलती आयी है कि जहां कुछ इस तरह का काम हुआ, हम लोगों को बुलाया जाता है। हम लोग अपने नृत्य से, गान से, सब लोगों का मनोरंजन करके, ख़ुशी देके, दुआ देकर निकलते हैं। लेकिन इसके साथ-साथ हम लोग पढ़ाई करते हैं, काम करते हैं, समाज के साथ जुड़े रहते हैं....।

सोनिका और तान्या ने अपनी बात कह दी.... आपका अनुभव क्या है रंजू....

बाद में उनकी बेटी की शादी आई तो उन्होंने बताया कि उनको सोने की ज़रूरत है। तो मेरे पास जो भी गोल्ड था मेरा, मैंने दे दिया कि जाओ, अपनी सिस्टर की शादी कराओ, आख़िर वो मेरी ननद है। लेकिन उस शादी में मुझे इनवाइट नहीं किया गया; क्योंकि आप समाज को कैसे बोलोगे कि हमारी बहू किन्नर है.... पर मुझे बहू का दर्ज़ा उन्होंने दिया.... अपनी फ़ैमिली में रखा, रेस्पेक्ट दिया। कहते हैं ना कि रिश्तेदार आख़िर रिश्तेदार होते हैं और हम दोनों ने शादी के दो साल बाद डिसाइड किया कि बच्चा एडॉप्ट करेंगे। तो हमने एक बच्चा एडॉप्ट किया। उसको जब घर लेकर आए तो प्रॉपर लीगल एडॉप्शन नहीं हो पा रहा था तो उसी टाइम में उसकी मौसी घर पर आई। मौसी उसकी मम्मी को भड़का दी कि पता नहीं ये किसका बच्चा उठा कर लाए हैं.... कैसा ख़ून होगा.... क्या होगा.... मतलब अनाप-शनाप बोलने लगी.... तबतक मैं धनबाद में जॉब करने लगी थी तो मेरे बारे में उसके मन में मिसअंडरस्टैंडिंग क्रियेट कर बोलने लग गई कि..... "वह तो शॉर्ट स्कर्ट पहन कर जाती है.... ब्लेजर्स पहन कर जाती है..... घर रात लेट से आती है.... कॉल सेंटर में क्या करती है... तेरे को पता है न..... कॉल सेंटर का नेचर तू तो जानता है ना.... तेरे साथ तो और लड़कियां भी काम करती हैं..... कैसे-कैसे रिलेशंस रहते हैं....."

मतलब हमारे रिलेशन के बीच मिसअंडरस्टैंडिंग क्रियेट करने की कोशिश की गई। तो हर चीज़ की दवा होती है, पर शक की दवा नहीं होती। तो उनको मेरे पर शक होने लगा। मेरा लेट नाइट आना, मेरा लेट नाइट जाना मीटिंग के लिए, एक एच.आर.ओ. होने के नाते कभी-कभी क्लाइंट कॉल्स होते तो रात में मुझे कॉल सेंटर में रुकना पड़ता था। तो उसकी वजह से बहुत सारी इशूज़ मिसअंडरस्टैंडिंग की वजह से हमको सेपरेट होना पड़ा। ऑलमोस्ट छे-सात साल हो चुके हमें अलग हुए। पर आज जब मेरे आगे उनका नाम जुड़ा है, आज सबकुछ है, मीडिया में जब वे मुझे हर जगह देखते हैं..... गूगल में सर्च मारते हैं तो मेरा नाम दिखता है.... तो अब वे वापस आना चाहते हैं..... मेरी लाइफ़ में।

तो मैंने कहा, अब क्यों..... जब मुझे तुम्हारे सहारे की ज़रूरत थी तब तो तुमने मुझे सहारा नहीं दिया..... तब तो तुम मुझे छोड़ कर चले गए अपनी फ़ैमिली के साथ..... और ऐसे दोराहे पे छोड़ गए कि मैं डिप्रेशन में चली गई.... जॉब छूट गया और मैं फिर वापस उसी चौराहे पर आकर खड़ी हो गई, जहां पर मेरे को अपना तन बेच कर अपना पेट भरना था।....और उसी तन बेचते वक्त मेरा रेप हो गया। मेरा रेप होने के बाद ना मुझे कोई सपोर्ट मिला गवर्नमेंट से, ना कोई मेरी केस फाइल हुई, ना मुझे डॉक्टर से सपोर्ट मिला..... मैं उस ब्लीडिंग हालत में दर-दर की ठोकरें खा रही थी। मैंने आपको कॉल किया, बट आपने रिस्पांस नहीं किया.... आपने.... आपकी मम्मी ने कहा, "रेप कैसे क्या हुआ.... मतलब मेरी बहन सही कह रही थी.... तू धंधा भी करती है....।"

धंधे पर लाकर खड़ा किसने किया, आप ही ने किया। तो अब वापस मेरी ज़िन्दगी में तुम आओगे..... और वापस कोई आकर आपको कुछ बोल देगा, तो आप वापस मेरी लाइफ़ से वापस निकल जाओगे और फिर वापस मैं डिप्रेशन में आके, वापस वहीं चैराहे पर जाके खड़ी नहीं रहना चाहती हूं। जो हो चुका है, वह हो चुका है; अब मेरे लाइफ़ में आपके लिए कोई जगह नहीं है।

तान्या

मैं भी शादीशुदा हूं। मैंने बताया था कि नाइंथ क्लास में मेरी पढ़ाई छुड़वा दी गई थी तो फिर ...

क्रमश: अगले अंक में...

मानवता के हाथ

समीर मूसा
क़तर

लेखक· शायर· नाटककार
और समाजसेवी

एक चादर

कभी बुज़ुर्ग कहा करते थे कि पैर बस उतना ही फैलाओ जितना कि चादर है। और हमें लगता था कि ये हमसे जलते हैं। हमारी उड़ानों को रोकना चाहते हैं। पर तजुर्बा ही वो अकेली दौलत है जिसे लुटानेवाला कोई झिझक नहीं करता, पर दोनों हाथों से लेनेवाले बड़े झिझक कर लिया करते हैं।

सभी अनिवार्य सुविधाएं उपलब्ध हैं, पर ये चादर है कि फिर भी कम लगती है। अगर घर दो कमरेवाला हो, तो दो और जोड़ने की जिद्द-ओ-जहद। अगर गाड़ी दो पहिएवाली हो, तो दो के साथ दो और मिलाने की कोशिश। अगर आमदनी दो सौ हो, तो फिर दो सौ और बढ़ाने की मेहनत।

पर ये सब किस लिए। आसान जवाब - महंगाई। मतलब, कल तक बस एक चादर सर से पांव तक आसानी से ढक लेता था, आज तो हमें आसमान भी कम पड़ रहा है तन ढकने को। और जवाब सिर्फ महंगाई?

तो चलो इस कहानी के सभी पहलुओं को एक आम इंसान के तौर पर जानने की फिर एक कोशिश की जाए।

कहानी का सबसे प्रथम पहलू है 'ज़रूरतें'। जी हां ज़रूरतें। कल हमारी ज़रूरतें थी मूल अथवा बुनियादी, जैसे रोटी। कहते थे कि इन्सान को ज़िन्दा रहने के लिए आखिर और क्या चाहिए। पर जब पेट की भूख मिटी तो अगली दुहाई इज़्ज़त की हुई, और फिर ये कहना हुआ, कि इंसान भूखा तो रह सकता है, पर नंगा कैसे रहें। और अचानक तन ढकने के लिए कपड़ा एहम हो गया। पर जब वो भी मिला, तो फिर बात सुरक्षा पर आ गई। और सुरक्षा की बात पर आई बात छत की। हां! कम से कम सिर पर एक छत का होना तो अनिवार्य है। और जब छत बन ही गई, तो चार दीवारें और एक छत से क्या होगा, बल्कि अब उसे रहने लायक मकान बनाना है।

और देखते-देखते अब केवल रोटी, कपड़ा, और मकान की ज़रूरतें तब्दील हो गई सामाजिक और आर्थिक ज़रूरतों में। अनपके-अधपके और घांस-फूस खाने तक से लेकर, घास और जरावन के चूल्हे से बढ़कर, गैस और बिजली के चूल्हों का प्रयोग। और हम जानते हैं कि जब आर्थिक ज़रूरतों की बारी आती हैं तो मनुष्य अपने चारों ओर दीवारें बांधना, पुलों को तोडना, और धरती एवं मानवता में दरारें बनाने का शुभ काम प्रारंभ कर ही देता है। बंटवारे हो गए घरों के, मुहल्लों के, गांव, शहर और देशों के। ज़मीन-तो-ज़मीन, आसमान, समंदर और जंगल तक का बटवारा कर दिया। और इस तरह तन ढकने के कपड़े से लेकर, हर मौसम, हर अवसर, हर वर्ग और इलाके के हिसाब से कपड़े और मकान तक सामाजिक और आर्थिक अवस्था अनुसार बदल गया।

और इस बीच में इतना तो समय मिल ही गया मनुष्य को, कि अपने हाथ में उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार अनेकों विश्वास, प्रथा, प्रतिष्ठा, दीन धर्म सब बनाकर इनके अनुकूल भोजन, वेश-भूषा, मकान की सुविधा इत्यादि के प्रबंध में जुट गए। संस्कृति और त्योहारें भी जुड़ गए इस सूची में। अब ज़रूरतें धार्मिक और राजनीतिक स्तर पर आ खड़े हो गए।

पर सच तो ये है कि अब ज़रूरतें ज़रूरतें ना रहीं। अब बात आगे बढ़ चुकी थी। अब बात आ गई थी सुहूलियतों पर, तो पहले जिसके पास पैसे थे, उसने अपनी जेबें झाड़ कर दिखा दिया कि क्या क्या सुविधाएं बढ़ा सकते हैं। इंसान खुद का काम भी तब मशीनों पर छोड़ना शुरू किया। और हाल ये हो गया कि कुछ सुविधाएं तो हमारी जरूरत से भी एहम बन गए, या यू कहो कि हमारे अहम बन गए, जैसे कि केवल दूर बैठें हुओं से वार्तालाप के सुविधा के लिए बनाए गए टेलीफोन आज वो मोबाइल फोन बन गया है, जिसके बिना हमारा सांस लेना मुश्किल हो गया है।

सही है। पैसे है, कितना बचाओगे, खर्च करना तो बनता है।नहीं तो अर्थव्यवस्था का बाज़ार आगे कैसे बढ़ेगा। आखिर देश को और देश के नाम पर देश चलाने वालों को पालने-पोसने का ज़िम्मा भी हमारा ही है। है ना? पर जिनकी जेबें खाली है, वो क्या झाड़े। ऊपर से इतना सब देन सरकार की है, तो थोड़े बहुत तो उन्हें भी कर या लगान के तौर पर खर्चा-पानी देना ही पड़ेगा ना। फिर चाहे आपका अपना परिवार भूखा ही क्यों ना हों। आपके पास तन ढकने को कपड़े ही क्यों ना हो। सिर छुपाने को छत ही क्यों ना हो।

अब बाज़ार और सरकार इतनी बेदर्द थोड़ी ही है। आपकों दोनों हाथों से ऋण राशि, क़र्ज़, नोटों का हार पहनाने के लिए इतने प्यार से तैयार खड़े हैं। और आप भी आखिर उनकी इस मोहब्बत को कब तक ठुकराएंगे। गला बढ़ा देते हैं। पर मोहब्बत तो तब तक ही रहेगी जब तक आप में लौटाने की हिम्मत बाकी हो। फिर वो गले पड़े नोटों का हार, कांटों का हार बन जाता है, जिसमें फंसकर आपकी इज़्ज़त की चादर धागा-धागा बन बिखर जाती है।

तो देख लिया दोस्तों, किस तरहा जो चादर सिर से पांव तक ढकने के लिए काफी था, आज फट कर ऐसी हालत हो गई है की ना सर ढक सकता है ना पांव। या कुछ यूं कहूं कि

- "ख्वाहिशों का लिबास बुनते,
ना समझा वक्त का ये दांव,,,
ओढ़ने चले हैं हम इक चादर,
जिससे ना सिर ढकें ना पांव।।"

अद्भुत एवं असाधारण व्यक्तित्व

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के जीवन संघर्ष के अनछुए पहलू

डॉ. विनय कुमार श्रीवास्तव

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रवक्ता, पी.बी.कालेज,
प्रतापगढ़ सिटी, उ.प्र.

डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी (बचपन में जिनका नाम भीम सकपाल था) का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू- इंदौर, मध्य प्रदेश के राम जी मौला (पिता) एवं भीमाबाई (माता) के घर उनकी 14वीं संतान के रूप में हुआ था। पिता एक सैनिक स्कूल में प्रधानाध्यापक थे। मराठी, अंग्रेजी और गणित विषय के अच्छे ज्ञाता भी थे। भीम राव को भी यही गुण पिता से विरासत में मिले थे।

भीम राव जिस जाति में पैदा हुए थे वह उस समय बहुत निम्न व हेय दृष्टि से देखी जाने वाली जाति थी। जब वे मात्र 5 वर्ष के थे तभी उनकी माता का देहांत हो गया। इनका लालन-पालन इनकी चाची ने किया। भीम राव संस्कृत पढ़ना चाहते थे, किन्तु अछूत होने के कारण इन्हें संस्कृत पढ़ने का अधिकारी नहीं समझा गया। प्रारंभिक शिक्षा के दौरान इन्हें बहुत अधिक अपमानित भी होना पड़ा। वे छुआछूत वाली इस भावना से वे बहुत ज्यादा दुःखी और खिन्न रहते थे। पिता की मृत्यु के बाद भीम राव ने किसी तरह अपनी पढ़ाई पूर्ण किया। चूँकि भीमराव एक प्रतिभाशाली छात्र थे, इसलिए उनको बड़ौदा के महाराजा ने 25 रूपये मासिक वजीफे के रूप में भी प्रदान किया। उन्होंने 1907 में मैट्रिक और 1912 में बी.ए. (बी.ए. को उस ज़माने में एफ.ए. यानी फादर ऑफ़ आर्ट कहा जाता था) की परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय बड़ौदा के महाराजा द्वारा कुछ मेधावी छात्रों को विदेश में पढ़ने का मौका और सुविधा भी दिया जाता था। भीम राव अम्बेडकर को भी यह सुनहरा मौका और ये सुविधा मिल गयी। उन्होंने वर्ष 1912 से 1917 तक अमेरिका और इंग्लैंड में रहकर अर्थशास्त्र, राजनीति तथा कानून कि पढ़ाई और उसका गहन अध्ययन किया और पी-एच. डी. की डिग्री भी उन्होंने यहीं से प्राप्त किया। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह स्वदेश लौटे। बड़ौदा नरेश महाराजा की शर्त के अनुसार पढ़ाई बाद उनकी 10 वर्ष सेवा करनी थी, अतः अम्बेडकर जी को वहाँ सैनिक सचिव का पद दिया गया। सैनिक सचिव के पद पर होते हुए भी उन्हें काफी अपमान जनक घटनाओं का सामना करना पड़ा और लगातार अपमानित होते रहने के कारण उन्होंने सैनिक सचिव का प्राप्त यह पद अंततः त्याग ही दिया। लोगों के इस प्रकार के भेदभाव और बुरे व्यवहार का प्रभाव उनके ऊपर ऐसा पड़ा कि दलितों और अस्पृश्य माने-जाने वाले लोगों के उत्थान के लिए उन्होंने उनका नेतृत्व करने का निर्णय लिया और उनके कल्याण हेतु एवं उन्हें वास्तविक अधिकार एवं मान-सम्मान दिलाने के लिए दकियानूसी, कट्टरपंथी लोगों के विरुद्ध वह जीवन-भर संघर्ष करते रहे। इस उद्देश्य से ही उन्होंने 1927 में 'बहिष्कृत भारत' नामक मराठी पाक्षिक समाचार-पत्र भी निकालना प्रारम्भ किया। इस पत्र ने शोषित समाज को जगाने का अभूतपूर्व कार्य किया। उन्होंने मंदिरों में अछूतों के प्रवेश की माँग की एवं इस हेतु 1930 में करीब 30000 दलितों को साथ लेकर नासिक के काला राम मंदिर में प्रवेश के लिए सत्याग्रह भी किया। इस अवसर पर उच्च वर्णों के लोगों की लाठियों की मार से अनेक लोग घायल भी हो गए, किन्तु भीमराव ने सभी अछूतों को मंदिर में प्रवेश करा कर ही दम लिया। इसी घटना के बाद से ही लोग उन्हें 'बाबा साहब' कहने लगे। बाबा साहब ने सन् 1935 में 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना किया जिसके द्वारा अछूतों, अस्पृश्य और पीड़ित समाज के लोगों की भलाई के लिए कट्टरपंथियों के विरुद्ध और तेज संघर्ष करना प्रारंभ कर दिया। सन् 1937 के बम्बई (अब मुम्बई) में हुए वहाँ के चुनावों में कुल 15 में से 13 सीटों पर बाबा साहब को जीत भी हासिल हुई। यद्यपि डॉ. अम्बेडकर गाँधी जी द्वारा किये जा रहे दलितोद्धार के तरीकों से पूर्णतः सहमत नहीं थे, किन्तु अम्बेडकर जी ने अपनी विचारधारा के कारण कांग्रेस के पंडित जवाहर लाल नेहरू जी और सरदार बल्लभ भाई पटेल जी जैसे बड़े नेताओं को अपनी ओर आकर्षित किया।

बम्बई (आज का मुम्बई) आने पर भी उन्हें इस छुआछूत की बुरी भावना से छुटकारा नहीं मिला। यहाँ रह कर उन्होंने 'बार एट लॉट' की उपाधि ग्रहण किया और वकालत शुरू कर दिया। डॉ. अम्बेडकर हमेशा यह पूछा करते थे कि "क्या दुनिया में ऐसा कोई समाज है जहाँ मनुष्य के छूने मात्र से उसकी परछाई से भी लोग अपवित्र हो जाते हैं ?" पुराण और धार्मिक ग्रंथों के प्रति उनके मन में कोई श्रद्धा नहीं रह गयी थी। बिल्ली और कुत्तों की तरह मनुष्य के साथ किये जाने वाले भेदभाव और व्यवहार की बात उन्होंने लन्दन के गोलमेज सम्मेलन में भी कही। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने इस भेदभाव और अछूत की परम्परा के खिलाफ भी अछूतोद्धार से सम्बंधित अनेक कानून बनाये। 15 अगस्त 1947 को जब हमारा भारत अंगेजों की गुलामी से स्वतंत्र हुआ तो उनको स्वतंत्र भारत का प्रथम कानून मंत्री बनाया गया।

1947 में जब डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में भारतीय संविधान निर्माण समिति का गठन हुआ तो इस कार्य को पूर्ण करने के लिए विभिन्न प्रकार की उपसमितियाँ भी बनाई गयीं और उसके अलग-अलग प्रभारी/अध्यक्ष भी बनाये गए। इसी प्रकार डॉ. अम्बेडकर को भी ऐसी ही एक उपसमिति 'संविधान प्रारूप निर्माण समिति' के प्रभारी/अध्यक्ष के रूप में चुना गया। इस समय उन्होंने कानूनों में और भी सुधार किया तथा संविधान निर्माण हेतु उसके प्रारूप स्वरुप को तैयार किया।

इस प्रकार डॉ. भीम राव अम्बेडकर आधुनिक भारत के एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ,विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, दर्शनशास्त्र के मर्मज्ञ, इतिहासकार, परम विद्वान और एक समाज सुधारक भी थे। ये सामाजिक विषमता का पग-पग पर सामना करते रहे और अंत तक झुके नहीं। अपने अध्ययन, परिश्रम के बल पर उन्होंने अछूतों को नया जीवन और सम्मान दिया। इसीलिए उन्हें भारत का आधुनिक मनु भी कहा जाता है। उन्होंने अपने अंतिम संबोधन पूना पैक्ट के बाद गाँधी जी से यह कहा था- "मैं दुर्भाग्य से हिन्दू अछूत होकर जन्मा तो हूँ, किन्तु मैं हिन्दू होकर नहीं मरूँगा।" इसी लिए उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर के विशाल मैदान में अपने 2 लाख से कहीं अधिक अनुयाइयों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। इस तरह डॉ. भीमराव अम्बेडकर महान त्यागपूर्ण जीवन जीते हुए दलितों के कल्याण के लिए कड़े संघर्ष करते हुए 6 दिसंबर, 1956 को स्वर्ग सिधार दिए। उनके महान् कार्यो और उपलब्धियों को देखते हुए भारत सरकार ने अप्रैल 1990 में उन्हें (मरणोपरांत) 'भारत रत्न' सम्मान प्रदान कर उन्हें सम्मानित भी किया गया। उनके जन्मदिवस 14 अप्रैल को पूरा देश अम्बेडकर जयन्ती के रूप में मनाता है और अपना श्रद्धा-सुमन अर्पित कर उन्हें शत्-शत् नमन करता है। ऐसे विद्वान एवं महान शिल्पी, समाज सुधारक बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का यह 134वां जन्मदिवस बहुत धूम-धाम से देशभर में मनाया जा रहा है। एक बार पुनः संविधान मर्मज्ञ बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी को मेरा कोटि-कोटि नमन।

पुरुष सिर्फ़ स्वाद के चटकारे ही नहीं लेते बल्कि खाना बनाकर वाह-वाही कमाने का मौका भी नहीं छोड़ते, तो प्रस्तुत है लाजवाब व्यंजन दो मशहूर साहित्यकार के अपनी रसोई से ।

डॉ. किशोर सिन्हा
भारत

सूजी का ढोकला

सूजी का ढोकला बनाने में बहुत आसान है। ये कम समय लेता है और यदि अचानक मेहमान आ जायें तो झटपट इसे तैयार किया जा सकता है।

सामग्री : एक कप सूजी, एक कप दही, आधा कप अदरक पेस्ट, आधा चम्मच चीनी पाउडर, बारीक नमक, दो-तीन हरी मिर्च, चार-पांच करी पत्ते, आधा कटा नींबू।

विधि :- सूजी में दही डालकर अच्छी तरह से मिलायें। फिर इसमें अदरक पेस्ट, चीनी पाउडर और एक चुटकी नमक मिलाकर आधा कप पानी डालें और 'बैटर' तैयार करें। 'बैटर' बहुत गाढ़ा या बहुत पतला न हो। जिस तरह से इडली का होता है, लगभग उसी तरह का। अच्छी तरह से फेंटने के बाद 'बैटर' को 15 से 20 मिनट तक ढक कर रख दें, ताकि सूजी अच्छी तरह फूल जाए। तब तक एक बर्तन में हम पानी गर्म करेंगे। पानी गर्म करने वाला बर्तन ऐसा हो, यानी इतना बड़ा हो कि उसमें ढोकला बनाने वाला बर्तन आसानी से समा जाए और आसानी से हम उसे बाहर निकल सकें। अब इस बर्तन में चार-पांच कप पानी डालें और उसमें एक जाली-स्टैंड या माइक्रोवेव का छोटा वाला ग्रिल-स्टैंड इस बर्तन में पानी के ऊपर रख दें, ताकि उसके ऊपर ढोकला वाला बर्तन रखा जा सके। अब पानी को उबलने के लिए गैस पर रख दें।

पानी उबलने तक यदि दस-बारह मिनट हो गया है तो रखे गये 'बैटर' को एक बार फिर से फेंटेंगे। अब इसमें एक छोटी चम्मच:इनो फ्रूट सॉल्ट' या सादा 'इनो' डालकर उसके ऊपर एक चम्मच पानी मिलाकर ज़रा-सा फेंटेंगे। थोड़ा फेंटने से ही उसमें बबल आने लगेगा, जिसका मतलब है कि आपका 'बैटर' तैयार है। अब वह बर्तन लेंगे जिसमें ढोकला बनाना है। बर्तन की सबसे पहले ग्रीसिंग करेंगे। इसके लिए आप रिफाइंड तेल या शुद्ध घी किसी का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। ग्रीसिंग के बाद उसमें पूरा 'बैटर' डाल के उसे चारों तरफ से हिलायें ताकि लेयर एक समान हो जाये। अब कंटेनर को खौलते पानी वाले बर्तन में स्टैंड के ऊपर रखें और ढंककर लगभग 20 मिनट तक पकने दे।

गैस को मीडियम ही रखें। पन्द्रह-बीस मिनट बाद ढक्कन हटाकर ढोकला को चेक करें। उसके अंदर या तो चाकू डालकर या टूथपिक डाल कर चेक कर सकते हैं। अगर उसमें 'बैटर' चिपकता नहीं है तो समझिये कि आपका ढोकला तैयार है।

अब कंटेनर को निकाल कर उसे ठंडा होने दें। तबतक एक कटोरी में एक चम्मच चीनी, चुटकी-भर नमक और नींबू का रस डालकर उसका पतला घोल तैयार कर रख लें। जब ढोकला अच्छी तरह से ठंडा हो जाए तो कंटेनर के अंदर साइड से चाकू को चारों तरफ घुमा दें ताकि ढोकला चिपके नहीं। अब कंटेनर के ऊपर एक थाली रखकर उसे पलट दें तो थोड़ा थपथपाने से ही ढोकला थाली में निकल आयेगा।

अब दो हरी मिर्च को लंबाई में काट लें। एक तड़का पैन लेकर उसे गर्म करें। फिर उसमें दो चम्मच तेल डालें। तेल जब अच्छी तरह गर्म हो जाये तो उसमें आधा चम्मच काली सरसों, हींग और दस-बारह करी पत्ते डालकर पकायें। थोड़ा ही पकायेंगे। अब इसे आप ढोकले पर चारों ओर अच्छी तरह फैला दें। इसके बाद इसपर पहले से तैयार चीनी और नींबू-रस का घोल फैला देंगे। अब ढोकले को जिस साइज में काटना हो, काट लें और परोसें।.....

डॉ. नितिन उपाध्याय
दुबई यू. ए. ई.

गट्टे की सब्जी बनी काव्य अंदाज में

आओ मामा, आओ चाचा,आओ फूफा,आओ ताया
तुम सबको बताता हूँ मैं, पिछले हफ़्ते क्या पकाया
सीधे सीधे मेरे पीछे सभी रसोई में आ जाओ
जैसे जैसे मैं बतलाऊँ, अपने घर में वही बनाओ

मोटा वाला बेसन ले लो, नहीं तो पतला भी चलेगा
मिर्ची,हल्दी,नमक, पीसा हुआ धनिया और जीरा डलेगा
ताजे हरे धनियें के पत्ते बारीक़ बारीक़ काट मिलाना
फिर एक चम्मच लेकर के मिश्रण ठीक से हिलाना
लहसुन,हरी मिर्च और अदरक को पीसकरके मिलाओ
अजवाइन,तेल या घी और दही मिला, लोई बनाओ
जैसे भी आकार में चाहो, उबलते पानी में उबालों
जब तक के उबले ये लोई,सब्जी का रस्सा बना लो

बारीक बारीक प्याज काट कर गरम तेल में ही फिर भूनों
तेल ज़रा ज्यादा ही लेना, श्रीमती जी की ज़रा न सुनों
गीला नारियल, हरी मिर्ची, लहसुन को पीसों महीन
मिलाओ तब, की प्याज हो सुनहरी जिस पल छिन
मिला मसाले भुनो इसको,जब तक न ये छोड़े तेल
रस छानके टमाटर का, सबका तुम करा दो मेल
स्वाद के लिए नमक मिलाके गट्टो को मिला दो जी
खूब उबालो क्रीम मिला,फिर सबको खिला दो जी

अगर जो चाहो और भी तीखा,तड़का ऊपर से देना
निम्बू अमचूर, गर चाहो,खटाई के लिए मिला लेना

राजस्थानी गट्टे की सब्जी, मराठी गोळ्यांची आमटी
सीखके दोनों में से कुछ कुछ, बनाया तब बीवी पटी

जन्मदिन था पत्नी का और बाहर नहीं जा सकता था
चाव से वो खाती थी और मैं उसको देख देख हरखता था
घर बुला के अगर जो सीखो, शुल्क मैं तगड़ा लूंगा
गुरु दक्षिणा लिए बिना यह ज्ञान भला मैं क्यों दूंगा

SYH मंचीय कार्यक्रम:- तस्वीरें (अप्रैल – जून २०२४)

साक्षात्कार 'संवाद' के अंतर्गत व्यक्ति से व्यक्तित्व बनने के सफ़र में इस श्रृंखला की मेहमान थी मशहूर शायरा आदरणीया श्वेता सिंह उमा रूस से।

लघुकथा की महत्ता पर चर्चा और कथाएँ विश्व भर के साहित्यकार संग ।

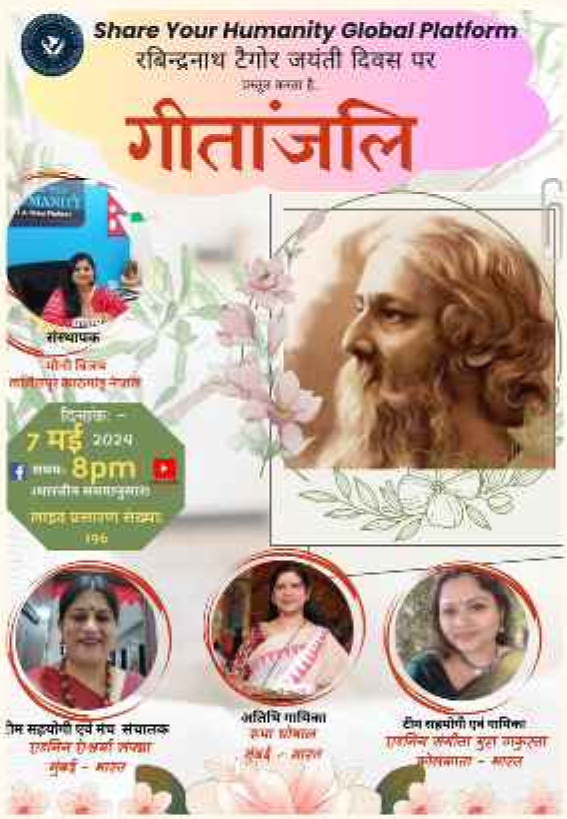

रविंद्रनाथ टैगोर जयंती दिवस पर रविन्द्र संगीत कार्यक्रम

एडमिन संगीता द्वारा संचालित सांगीतिक कार्यक्रम जिसमें तबला वादक तथा गायिका की जोड़ी को दर्शकों ने ख़ूब सराहा।

विवाह की महत्ता और रीति रिवाज पर चर्चा और लोक गीत संगीत।

उपरोक्त सभी कार्यक्रम आप हमारे यूटयूब चैनल व फेसबुक पेज पर देख सकते हैं।

https://www.youtube.com/@shareyourhumanitysyhandkid2583

https://www.facebook.com/profile.php id=100063963288763&mibextid=ZbWKwL

SYH काठमांडू कार्यक्रम तस्वीरें (भारत के साहित्य-संस्कृति से जुड़े विशिष्ट गण का नेपाल आगमन पर SYH द्वारा सम्मान):-

काठमांडू, नेपाल में पधारे कला तथा साहित्यिक मनीषियों का 'शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच' पर दिए गए अमूल्य अवदान एवं समाज में दिए उनके योगदान के लिए उन्हें सम्मान पत्र, नेपाली खादा, टोपी, पोते (माला) द्वारा सम्मान किया गया। जिसमें सम्मिलित है कला क्षेत्र से आदरणीया मीरा नायर, त्रिवेंद्रम, भारत साहित्यिक मनीषी आ. राश दादा राश, आ. पं सुरेश नीरव, दिल्ली, आ. मधु मिश्रा दिल्ली, आ. डॉ. ममता वार्ष्णेय नोएडा, आ. संगीता चौबे पंखुड़ी, कुवैत।

आ. पं. सुरेश नीरव के शुभ जन्मोत्सव दिवस पर SYH संस्थापिका मोनी बिजय द्वारा नेपाल चिन्ह स्वरूप 'बुद्ध की मूर्ति और नेपाली टोपी' भेंट किया गया।

SYH मुख्य संरक्षक बिजय कोइराला एवं संस्थापक मोनी बिजय द्वारा प्रतिष्ठित साहित्यकार दंपति आ. राजेन्द्र निगम एवं आ. इंदु निगम (गुड़गांव दिल्ली), आ. मेजर कर्नल अनूप नायर तथा गायिका मीरा नायर(त्रिवेंद्रम भारत), वरिष्ठ साहित्यकार आ. राशदादा राश संग पुत्री पूजा (बंगलौर भारत) को नेपाली खादा तथा पोते पहनाकर सम्मान प्रकट किया गया।

काठमांडू कार्यक्रम तस्वीरें – "हमारा भारत -नेपाल"
मोनी बिजय की उपस्तिथि नेपाल के कार्यक्रम में:-

भारतीय राजदूतावास काठमांडू द्वारा आयोजित साहित्य संवाद में आमंत्रित संस्थापक मोनी बिजय दूतावास के अधिकारीगण के साथ। इस समारोह में डॉ. उषा ठाकुर को हिंदी सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा सम्मान भी दिया गया इसके लिए शेयर योर ह्यूमैनिटी वैश्विक मंच उन्हें अनेकानेक बधाई देता है।द्वितीय सचिव श्री सत्येन्द्र दाहिया का कार्यकाल सफलतापूर्ण संपन्न हुआ। उन्हे बधाई के साथ अनेकानेक शुभकामनाएं भविष्य पथ पर अग्रसर होने के लिए।

अखिल भारतीय सर्वभाषा संस्कृति समन्वय समिति, भारत का २० वां अधिवेशन काठमांडू नेपाल में संपन्न हुआ, जिसमें 'मोनी बिजय को पशुपति प्रज्ञा सम्मान' द्वारा सम्मानित किया गया।

कुछ तस्वीरें समारोह की भारत और नेपाल के साहित्यकर और राजदुतावास अधिकारी गण के साथ।

साहित्यकार दंपती श्री सुभाष सैनी एवं सुमन सैनी ने अपनी पुस्तक 'दो कलियां' भेंट में दी।

कबीर दास कहते हैं,
"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥" ...

कबीरदास कहते हैं,
"साईं इतना दीजिए, जा मे कुटुंब समाय। मैं भी भूखा न रहूं, साधु ना भूखा जाय।।"

स्वस्तिक मंत्र

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

स्वस्ति मन्त्र शुभ और शांति के लिए प्रयुक्त होता है। स्वस्ति = सु + अस्ति = कल्याण हो। ऐसा माना जाता है कि इससे हृदय और मन मिल जाते हैं। मंत्रोच्चार करते हुए दर्भ से जल के छींटे डाले जाते हैं तथा यह माना जाता है कि यह जल पारस्परिक क्रोध और वैमनस्य को शांत कर रहा है। स्वस्ति मन्त्र का पाठ करने की क्रिया 'स्वस्तिवाचन' कहलाती है।

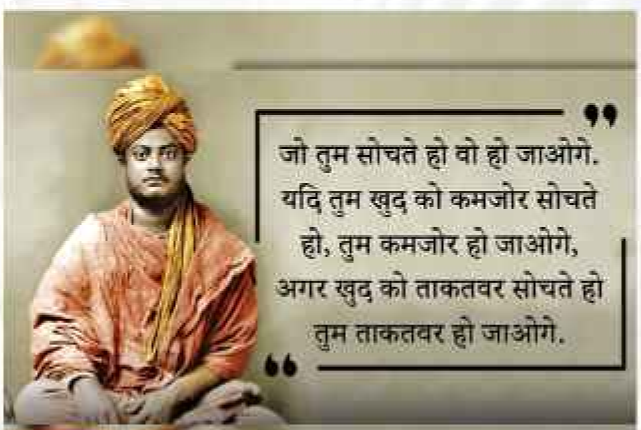

साभार:- गूगल

पाठकगण

कृपया अपनी प्रतिक्रिया हमें यहां मेल करें
bhorsyh@gmail.com

चलते - चलते मोनी कहती है..